न्यायियों

यहूदा के लोग कनानियों से युद्ध करते हैं

1 यहोशू मर गया। तब इस्राएल के लोगों ने यहोवा से प्रार्थना की।
उन्होंने कहा, “हमारे परिवार समूह में से कौन प्रथम जाने वाला तथा
कनानी लोगों से हम लोगों के लिये युद्ध करने वाला होगा?”
2 यहोवा ने इस्राएली लोगों से कहा, “यहूदा का परिवार समूह
जाएगा। मैं उनको इस प्रदेश को प्राप्त करने दूँगा।”
3 यहूदा के लोगों ने शिमोन परिवार समूह के अपने भाइयों से
सहायता मांगी। यहूदा के लोगों ने कहा, “भाइयों यहोवा ने हम सभी
को कुछ प्रदेश देने का वचन दिया है। यदि तुम लोग हम लोगों के
प्रदेश के लिए युद्ध करने में हमारे साथ आओगे और सहायता करोगे
तो हम लोग तुम्हारे प्रदेश के लिये तुम्हारे साथ जायेंगे और युद्ध
करेंगे।” शिमोन के लोग यहूदा के अपने भाइयों के युद्ध में सहायता
करने को तैयार हो गए।
4 यहोवा ने यहूदा के लोगों को कनानियों और परिज्जी लोगों
को हराने में सहायता की। यहूदा के लोगों ने बेजेक नगर में दस
हजार व्यक्तियों को मार डाला। 5 बेजेक नगर में यूहदा के लोगों ने
अदोनीबेजेक के शासक को पाया* और उससे युद्ध किया। यहूदा
के लोगों ने कनानियों और परिज्जी लोगों को हराया।
6 अदोनीबेजेक के शासक ने भाग निकलने का प्रयत्न किया।
किन्तु यहूदा के लोगों ने उसका पीछा किया और उसे पकड़ लिया।
जब उन्होंने उसे पकड़ा तब उन्होंने उसके हाथ और पैर के अंगूठों
को काट डाला। 7 तब अदोनीबेजेक के शासक ने कहा, “मैंने सत्तर

* **1:5:** अदोनीबेजेक के शासक को पाया इसे व्यक्ति का नाम भी समझा जा सकता है।

राजाओं के हाथ और पैर के अंगूठे काटे और उन राजाओं को वही भोजन करना पड़ा जो मेरी मेज से टुकड़ों में गिरा। अब यहोवा ने मुझे उसका बदला दिया है जो मैंने उन राजाओं के साथ किया था।" यहूदा के लोग बेजेक के शासक को यरूशलेम ले गए और वह वहीं मरा।

8 यहूदा के लोग यरूशलेम के विरुद्ध लड़े और उस पर अधिकार
कर लिया। यहूदा के लोगों ने यरूशलेम के लोगों को मारने के लिये
तलवार का उपयोग किया। उन्होंने नगर को जला दिया। 9 उसके
बाद यहूदा के लोग कुछ अन्य कनानी लोगों से युद्ध करने के
लिए गए। वे कनानी पहाड़ी प्रदेशों, नेगेव और समुद्र के किनारे
की पहाड़ियों मे रहते थे।

10 तब यहूदा के लोग उन कनानी लोगों के विरूद्ध लड़ने गए जो हेब्रोन नगर में रहते थे। (हेब्रोन को किर्यतर्बा कहा जाता था।) यहूदा के लोगों ने शेशै, अहीमन और तल्मै कहे जाने वाले लोगों को हराया।

कालेब और उसकी पुत्री

11 यहूदा के लोगों ने उस स्थान को छोड़ा। वे दबीर नगर, वहाँ के
लोगों के विरुद्ध युद्ध करने गए। (दबीर को किर्यत्सेपेर कहा जाता
था।) 12 यहूदा के लोगों द्वारा युद्ध आरम्भ करने के पहले कालेब ने
लोगों से एक प्रतिज्ञा की। कालेब ने कहा, "मैं अपनी पुत्री अकसा
को उस व्यक्ति को पत्नी के रूप में दूँगा जो किर्यत्सेपेर नगर पर
आक्रमण करता है और उस पर अधिकार करता है।"

13 कालेब का एक छोटा भाई था जिसका नाम कनज था। कनज का एक पुत्र ओत्नीएल नाम का था। (ओत्नीएल कालेब का भतीजा था।) ओत्नीएल ने किर्यत्सेपेर नगर को जीत लिया। इसलिए कालेब ने अपनी पुत्री अकसा को पत्नी के रूप में ओत्नीएल को दिया।

14 जब अकसा ओत्नीएल के पास आई तब ओत्नीएल ने उससे
कहा† कि वह अपने पिता से कुछ भूमि माँगे। अकसा अपने पिता
के पास गई। अत: वह अपने गधे से उतरी और कालेब ने पूछा,
“क्या कठिनाई है?”

15 अकसा ने कालेब को उत्तर दिया, “आप मुझे आशीर्वाद दें।‡
आपनें मुझे नेगेव की सूखी मरुभूमि दी है। कृपया मुझे कुछ पानी के
सोते वाली भूमि दें।” अत: कालेब ने उसे वह दिया जो वह चाहती
थी। उसने उसे उस भूमि के ऊपर और नीचे के पानी के सोते दे
दिये।

16 केनी लोगों ने ताड़वृक्षों के नगर (यरीहो) को छोड़ा और यहूदा
के लोगों के साथ गए। वे लोग यहूदा की मरुभूमि में वहाँ के लोगों
के साथ रहने गए। यह नेगेव में अराद नगर के पास था। (केनी लोग
मूसा के ससुर के परिवार से थे।)

17 कुछ कनानी लोग सपत नगर में भी रहते थे। इसलिए यहूदा
के लोग और शिमोन के परिवार समूह के लोगों ने उन कनानी लोगों
पर आक्रमण किया। उन्होंने नगर को पूर्णत: नष्ट कर दिया। इसलिये
उन्होंने नगर का नाम होर्मा रखा।

18 यहूदा के लोगों ने अज्जा के नगर और उसके चारों ओर के
छोटे नगरों पर भी अधिकार किया। यहूदा के लोगों ने अशकलोन
और एक्रोन नगरों और उनके चारों ओर के छोटे नगरों पर भी
अधिकार किया।

19 यहोवा उस समय यहूदा के लोगों के साथ था, जब वे युद्ध कर
रहे थे। उन्होंने पहाड़ी प्रदेश की भूमि पर अधिकार किया। किन्तु
यहूदा के लोग घाटियों की भूमि लेने में असफल रहे क्योंकि वहाँ
के निवासियों के पास लोहे के रथ थे।

† **1:14:** ओत्नीएल...कहा या “अकसा ने ओत्नीएल से कहा।” ‡ **1:15:** आप ... आशीर्वाद दें या “कृपया मेरा सत्कार करें” या “मुझे जल की एक धारा दें।”

[20] मूसा ने कालेब को हेब्रोन के पास की भूमि देने का वचन दिया
था। अत: वह भूमि कालेब के परिवार समूह को दी गई। कालेब
के लोगों ने अनाक के तीन पुत्रों को वह स्थान छोड़ने को विवश
किया। बिन्यामीन लोग यरूशलेम में बसते हैं।
[21] बिन्यामीन परिवार के लोग यबूसी लोगों को यरूशलेम छोड़ने
के लिये विवश न कर सके। उस समय से लेकर अब तक यबूसी
लोग यरूशलेम में बिन्यामीन लोगों के साथ रहते आए हैं।

यूसुफ के लोग बेतेल पर अधिकार जमाते हैं

[22] युसूफ के परिवार समूह के लोग भी बेतेल नगर के विरुद्ध
लड़ने गए। (बेतेल, लूज कहा जाता था।) यहोवा यूसुफ के परिवार
समूह के लोगों के साथ था। [23] यूसुफ के परिवार के लोगों ने कुछ
जासूसों को बेतेल नगर को भेजा। (इन व्यक्तियों ने बेतेल नगर को
हराने के उपाय का पता लगाया।) [24] जब वे जासूस बेतेल नगर को
देख रहे थे तब उन्होंने एक व्यक्ति को नगर से बाहर आते देखा।
जासूसों ने उस व्यक्ति से कहा, "हम लोगों को नगर में जाने का गुप्त
मार्ग बताओ। हम लोग नगर पर आक्रमण करेंगे। किन्तु यदि तुम
हमारी सहायता करोगे तो हम तुम्हें चोट नहीं पहुँचायेंगे।"

[25] उस व्यक्ति ने जासूसों को नगर में जाने का गुप्त मार्ग बताया।
यूसुफ के लोगों ने बेतेल के लोगों को मारने के लिये अपनी तलवार
का उपयोग किया। किन्तु उन्होंने उस व्यक्ति को चोट नहीं पहुँचाई
जिसने उन्हें सहायता दी थी और उन्होंने उसके परिवार के लोगों
को चोट नहीं पहुँचाई। उस व्यक्ति और उसके परिवार को स्वतन्त्र
जाने दिया गया। [26] वह व्यक्ति उस प्रदेश में गया जहाँ हित्ती लोग
रहते थे और वहाँ उसने एक नगर बसाया। उसने उस नगर का नाम
लूज रखा और वह आज भी वहाँ है।

अन्य परिवार समूह कनानियों से युद्ध करते हैं

27 कनानी लोग बेतशान, तानाक, दोर, यिबलाम, मगिद्दो और
उनके चारों ओर के छोटे नगरों में रहते थे। मनश्शे के परिवार समूह
के लोग उन लोगों को उन नगरों को छोड़ने के लिये विवश नहीं
कर सके थे। इसलिए कनानी लोग वहाँ टिके रहे। उन्होने अपना
घर छोड़ने से इन्कार कर दिया। 28 बाद में इस्राएल के लोग अधिक
शक्तिशाली हुए और कनानी लोगों को दासों की तरह अपने लिए
काम करने के लिये विवश किया। किन्तु इस्राएल के लोग सभी
कनानी लोगों से उनका प्रदेश न छुड़वा सके।

29 यही बात एप्रैम के परिवार समूह के साथ हुई। कनानी लोग
गेजेर में रहते थे और एप्रैम के लोग सभी कनानी लोगों से उनका
देश न छुड़वा सके। इसलिए कनानी लोग एप्रैम के लोगों के साथ
गेजेर में रहते चले आए।

30 जबूलून के परिवार समूह के साथ भी यही बात हुई। कित्रोन
और नहलोल नगरों मे कुछ कनानी लोग रहते थे। जबूलून के लोग
उन लोगों से उनका देश न छुड़वा सके। वे कनानी लोग टिके रहे
और जबूलून लोगों के साथ रहते चले आए। किन्तु जबूलून के लोगों
ने उन लोगों को दासों की तरह काम करने को विवश किया।

31 आशेर के परिवार समूह के साथ भी यही बात हुई। आशेर के
लोग उन लोगों से अक्को, सीदोन, अहलाब, अकजीब, हेलबा, अपीक
और रहोब नगरों को न छुड़वा सके। 32 आशेरके लोग कनानी लोगों
से अपना देश न छुडवा सके। इसलिए कनानी लोग आशेर के लोगों
के साथ रहते चले आए।

33 नप्ताली के परिवार समूह के साथ भी यही बात हुई। नप्ताली
परिवार के लोग उन लोगों से बेतशेमेश और बेतनात नगरों को न
छुड़वा सके। इसलिए नप्ताली के लोग उन नगरों में उन लोगों के
साथ रहते चले आए। वे कनानी लोग नप्ताली लोगों के लिए दासों
की तरह काम करते रहे।।

34 एमोरी लोगों ने दान के परिवार समूह के लोगों को पहाड़ी
प्रदेश में रहने के लिये विवश कर दिया। दान के लोगों को पहाड़ियों

मे ठहरना पड़ा क्योंकि एमोरी लोग उन्हें घाटियों में उतर कर
नहीं रहने देते थे। 35 एमोरी लोगों ने हेरेस पर्वत, अय्यलोन तथा
शालबीम में ठहरने का निश्चय किया। बाद में, यूसुफ का परिवार
समूह शक्तिशाली हो गया। तब उन्होंने एमोरी लोगों से दासों की
तरह काम लिया। 36 एमोरी लोगों का प्रदेश बिच्छू दर्रे से सेला और
सेला के परे पहाड़ी प्रदेश तक था।

2

बोकीम में यहोवा का दूत

1 यहोवा का दूत गिलगाल नगर से बोकीम नगर को गया। दूत
ने यहोवा का एक सन्देश इस्राएल के लोगों को दिया। सन्देश यह
था: "तुम मिस्र में दास थे। किन्तु मैंने तुम्हें स्वतन्त्र किया और मैं
तुम्हें मिस्र से बाहर लाया। मैं तुम्हें इस प्रदेश में लाया जिसे तुम्हारे
पूर्वजों को देने के लिये मैंने प्रतिज्ञा की थीं। मैंने कहा, मैं तुमसे अपनी
वाचा कभी नहीं तोड़ूँगा। 2 किन्तु इसके बदले में तुम्हें इस प्रदेश के
निवासियों के साथ समझौता नहीं करना होगा। तुम्हें इन लोगों की
वेदियाँ नष्ट करनी चाहिए। यह मैंने तुमसे कहा किन्तु तुम लोगों ने
मेरी आज्ञा नहीं मानी। तुम ऐसा कैसे कर सकते हो?

3 "अब मैं तुमसे यह कहता हूँ, 'मैं इस प्रदेश से अब और लोगों को
बाहर नहीं हटाऊँगा। ये लोग तुम्हारे लिये समस्या बनेंगे। वे तुम्हारे
लिए बनाया गया जाल बनेंगे। उनके असत्य देवता तुम्हें फँसाने के
लिए जाल बनेंगे।' "

4 स्वर्गदूत इस्राएल के लोगों को यहोवा का सन्देश जब दे चुका,
तब लोग जोर से रो पड़े। 5 इसलिए इस्राएल के लोगों ने उस स्थान
को बोकीम नाम दिया जहाँ वे रो पड़े थे। बोकीम में इस्राएल के
लोगों ने यहोवा को भेंट चढ़ाई।

आज्ञा का उल्लंघन और पराजय

6 तब यहोशू ने लोगों से कहा कि वे अपने घर लौट सकते हैं।
इसलिए हर एक परिवार समूह अपनी भूमि का क्षेत्र लेने गया और
उसमें रहे। 7 इस्राएल के लोगों ने तब तक यहोवा की सेवा की जब
तक यहोशू जीवित रहा। उन बुर्ज़ुगों (नेताओं) के जीवन काल में भी
वे यहोवा की सेवा करते रहे जो यहोशू के मरने के बाद भी जीवित
रहे। इन वृद्ध लोगों ने इस्राएल के लोगों के लिए जो यहोवा ने महान
कार्य किये थे, उन्हें देखा था। 8 नून का पुत्र यहोशू, जो यहोवा का
सेवक था, एक सौ दस वर्ष की अवस्था में मरा। 9 अत: इस्राएल
के लोगों ने यहोशू को दफनाया। यहोशू को भूमि के उस क्षेत्र में
दफनाया गया जो उसे दिया गया था। वह भूमि तिम्नथेरेस में थी जो
हेरेस के पहाड़ी क्षेत्र में गाश पर्वत के उत्तर में था।

10 इसके बाद वह पूरी पीढ़ी मर गई तथा नयी पीढ़ी उत्पन्न हुई।
यह नयी पीढ़ी यहोवा के विषय में न तो जानती थी और न ही उसे,
यहोवा ने इस्राएल के लोगों के लिये क्या किया था, इसका ज्ञान था।
11 इसलिये इस्राएल के लोगों ने पाप किये और बाल की मूर्तियों की
सेवा की। यहोवा ने मनुष्यों को यह पाप करते देखा। 12 यहोवा
इस्राएल के लोगों को मिस्र से बाहर लाया था और इन लोगों के
पूर्वजों ने यहोवा की उपासना की थी। किन्तु इस्राएल के लोगों ने
यहोवा का अनुसरण करना छोड़ दिया। इस्राएल के लोगों ने उन
लोगों के असत्य देवताओं की पूजा करना आरम्भ की, जो उनके
चारों ओर रहते थे। इस काम ने यहोवा को क्रोधित कर दिया।
13 इस्राएल के लोगों ने यहोवा का अनुसरण करना छोड़ दिया और
बाल एवं अश्तोरेत की पूजा करने लगे।

14 यहोवा इस्राएल के लोगों पर बहुत क्रोधित हुआ। इसलिए
यहोवा ने शत्रुओं को इस्राएल के लोगों पर आक्रमण करने दिया
और उनकी सम्पत्ति लेने दी। उनके चारों ओर रहने वाले शत्रुओं को
यहोवा ने उन्हें पराजित करने दिया। इस्राएल के लोग अपनी रक्षा
अपने शत्रुओं से नहीं कर सके। 15 जब इस्राएल के लोग युद्ध के लिये

निकले तो वे पराजित हुए। वे पराजित हुए क्योंकि यहोवा उनके साथ नहीं था। यहोवा ने पहले से इस्राएल के लोगों को चेतावनी दी थी कि वे पराजित होंगे, यदि वे उन लोगों के देवताओं की सेवा करेंगे जो उनके चारों ओर रहते हैं। इस्राएल के लोगों की बहुत अधिक हानि हुई।

16 तब यहोवा ने न्यायाधीश कहे जाने वाले प्रमुखों को चुना। इन
प्रमुखों ने इस्राएल के लोगों को उन शत्रुओं से बचाया जिन्होंने इनकी
सम्पत्ति ले लीथी। 17 किन्तु इस्राएल के लोगों ने अपने न्यायाधीशों
की एक न सुनी। इस्राएल के लोग यहोवा के प्रति वफादार नहीं
थे, वे अन्य देवताओं का अनुसरण कर रहे थे।* अतीतकाल में
इस्राएल के लोगों के पूर्वज यहोवा के आदेशों का पालन करते थे
किन्तु अब इस्राएल के लोग बदल गये थे और वे यहोवा की आज्ञा
का पालन करना छोड़ चुके थे।

18 इस्राएल के शत्रुओं ने कई बार लोगों के साथ बुरा किया।
इसलिए इस्राएल के लोग सहायता के लिये चिल्लाते थे और हर बार
यहोवा को लोगों के लिए दुःख होता था। हर बार वह शत्रुओं से
लोगों की रक्षा के लिये एक न्यायाधीश भेजता था। इस प्रकार हर
बार इस्राएल के लोग अपने शत्रुओं से बच जाते थे। 19 किन्तु जब हर
एक न्यायाधीश मर गया, तब इस्राएल के लोगों ने फिर पाप किया
और असत्य देवताओं की पूजा आरम्भ की। इस्राएल के लोग बहुत
हठी थे, उन्होंने अपने पाप के व्यवहार को बदलने से इन्कार कर
दिया।

20 इस प्रकार यहोवा इस्राएल के लोगों पर बहुत क्रोधित हुआ
और उसने कहा, "इस राष्ट्र ने उस वाचा को तोड़ा है जिसे मैंने
उनके पूर्वजों के साथ की थी। उन्होंने मेरी नहीं सुनी। 21 इसलिए
मैं और अधिक राष्ट्रों को पराजित नहीं करूँगा, और न ही इस्राएल
के लोगों का रास्ता साफ करुँगा। वे राष्ट्र उन दिनों भी उस प्रदेश

* **2:17:** यहोवा के ... रहे थे शाब्दिक, "दूसरे देवताओं के वेश्या की तरह व्यवहार कर रहे थे।"

में थे जब यहोशू मरा था और मैं उन राष्ट्रों को उस प्रदेश में रहने
दूँगा। 22 मैं उन राष्ट्रों का उपयोग इस्राएल के लोगों की परीक्षा के
लिये करूँगा। मैं यह देखूँगा कि इस्राएल के लोग अपने यहोवा का
आदेश वैसे ही मानते हैं अथवा नहीं जैसे उनके पूर्वज मानते थे।"
23 बीते समय में, यहोवा ने उन राष्ट्रों को उन प्रदेशों में रहने दिया था।
यहोवा ने शीघ्रता से उन राष्ट्रों को अपना देश छोड़ने नहीं दिया।
उसने उन्हें हराने में यहोशू की सेना की सहायता नहीं की।

3

1-2 यहाँ उन राष्ट्रों के नाम हैं जिन्हें यहोवा ने बलपूर्वक अपना
देश नहीं छुड़वाया। यहोवा इस्राएल के उन लोगों की परीक्षा लेना
चाहता था, जो कनान प्रदेश को लेने के लिये होने वाले युद्धों में लड़े
नहीं थे। यही कारण था कि उसने उन राष्ट्रों को उस प्रदेश में रहने
दिया। (उस प्रदेश में यहोवा द्वारा उन राष्ट्रों को रहने देने का कारण
केवल यह था कि इस्राएल के लोगों के उन वंशजों को शिक्षा दी
जाय जो उन युद्धों में नहीं लड़े थे।) 3 पलिशती लोगों के पाँच शासक,
सभी कनानी लोग, सीदोन के लोग और हिव्वी लोग जो लबानोन के
पहाड़ों में बालहेर्मोन पर्वत से लेकर हमात तक रहते थे। 4 यहोवा
ने उन राष्ट्रों को इस्राएल के लोगों की परीक्षा के लिये उस प्रदेश में
रहने दिया। वह यह देखना चाहता था कि इस्राएल के लोग यहोवा
के उन आदेशों का पालन करेंगे अथवा नहीं, जिन्हें उसने मूसा द्वारा
उनके पूर्वजों को दिया था।

5 इस्राएल के लोग कनानी, हित्ती, एमोरी, परिज्जी, हिव्वी और
यबूसी लोगों के साथ रहते थे। 6 इस्राएल के लोगों ने उन लोगों की
पुत्रियों के साथ विवाह करना आरम्भ कर दिया। इस्राएल के लोगों
ने अपनी पुत्रियों को उन लोगों के पुत्रों के साथ विवाह करने दिया
और इस्राएल के लोगों ने उन लोगों के देवताओं की सेवा की।

पहला न्यायाधीश ओत्नीएल

7 यहोवा ने देखा कि इस्राएल के लोग पाप कर रहे हैं। इस्राएल
के लोग यहोवा अपने परमेश्वर को भूल गए और बाल की मूर्तियों
एवं अशेरा की मूर्तियों की सेवा करने लगे। 8 यहोवा इस्राएल
के लोगों पर क्रोधित हुआ। यहोवा ने कुशन रिश्आतइम को जो
मेसोपोटामिया का राजा था, इस्राएल के लोगों को हराने और उन
पर शासन करने दिया। इस्राएल के लोग उस राजा के शासन में आठ
वर्ष तक रहे। 9 किन्तु इस्राएल के लोगों ने यहोवा को रोकर पुकारा।
यहोवा ने एक व्यक्ति को उनकी रक्षा के लिए भेजा। उस व्यक्ति
का नाम ओत्नीएल था। वह कनजी का पुत्र था। कनजी कालेब
का छोटा भाई था। ओत्नीएल ने इस्राएल के लोगों को बचाया।
10 यहोवा की आत्मा ओत्नीएल पर उतरी और वह इस्राएल के लोगों
का न्यायाधीश हो गया। ओत्नीएल ने इस्राएल के लोगों का युद्ध
में संचालन किया। यहोवा ने मेसोपोटामिया के राजा कूशत्रिशातैम
को हराने में ओत्नीएल की सहायता की । 11 इस प्रकार वह प्रदेश
चालीस वर्ष तक शान्त रहा, जब तक कनजी नामक व्यक्ति का पुत्र
ओत्नीएल नहीं मरा।

न्यायाधीश एहूद

12 यहोवा ने फिर इस्राएल के लोगों को पाप करते देखा। इसलिए
यहोवा ने मोआब के राजा एग्लोन को इस्राएल के लोगों को हराने
की शक्ति दी। 13 एग्लोन ने इस्राएल के लोगों पर आक्रमण करते
समय अम्मोनियों और अमालेकियों को अपने साथ लिया। एग्लोन
और उसकी सेना ने इस्राएल के लोगों को हराया और ताड़ के पेड़ो
वाले नगर (यरीहो) से उन्हें निकाल बाहर किया। 14 इस्राएल के
लोग अट्ठारह वर्ष तक मोआब के राजा एग्लोन के शासन में रहे।

15 तब लोगों ने यहोवा से प्रार्थना की और रोकर उसे पुकारा।
यहोवा ने इस्राएल के लोगों की रक्षा के लिए एक व्यक्ति को भेजा।
उस व्यक्ति का नाम एहूद था। एहूद वामहस्त व्यक्ति था। एहूद
बिन्यामीन के परिवार समूह के गेरा नामक व्यक्ति का पुत्र था।
इस्राएल के लोगों ने एहूद को मोआब के राजा एग्लोन के लिये

कर के रूप में कुछ धन देने को भेजा। 16 एहूद ने अपने लिये एक
तलवार बनाई। वह तलवार दोधारी थी और लगभग अट्ठारह इंच
लम्बी थी। एहूद ने तलवार को अपनी दायीं जांघ से बांधा और
अपने वस्त्रों में छिपा लिया।

17 इस प्रकार एहूद मोआब के राजा एग्लोन के पास आया और
उसे भेंट के रूप में धन दिया। (एग्लोन बहुत मोटा आदमी था।)
18 एग्लोन को धन देने के बाद एहूद ने उन व्यक्तियों को घर भेज
दिया, जो धन लाए थे। 19 जब एग्लोन गिलगाल नगर की मूर्तियों के
पास से वापस मुड़ा, तब एहूद ने एग्लोन से कहा, “राजा, मैं आपके
लिए एक गुप्त सन्देश लाया हूँ।”

राजा ने कहा, “चुप रहो।” तब उसने सभी नौकरों को कमरे से
बाहर भेज दिया। 20 एहूद राजा एग्लोन के पास गया। एग्लोन एकदम
अकेला अपने ग्रीष्म महल के ऊपरी कमरे में बैठा था।

तब एहूद ने कहा, “मैं परमेश्वर के यहाँ से आपके लिये सन्देश
लाया हूँ।” राजा अपने सिंहासन से उठा, वह एहूद के बहुत पास
था। 21 ज्योंही राजा अपने सिंहासन से उठा,* एहूद ने अपने बांये
हाथ को बढ़ाया और उस तलवार को निकाला जो उसकी दायीं
जांघ में बंधी थी। तब एहूद ने तलवार को राजा के पेट में घुसेड़
दिया। 22 तलवार एग्लोन के पेट में इतनी भीतर गई कि उसकी मूठ
भी उसमें समा गई। राजा की चर्बी ने पूरी तलवार को छिपा लिया।
इसलिए एहूद ने तलवार को एग्लोन के अन्दर छोड़ दिया।

23 एहूद कमरे से बाहर गया और उसने अपने पीछे दरवाजों को
ताला लगाकर बन्द कर दिया। 24 एहूद के चले जाने के ठीक बाद
नौकर आए। नौकरों ने कमरे के दरवाजों में ताला लगा पाया।
इसलिए नौकरों ने कहा, “राजा आराम कक्ष में आराम कर रहे
होंगे।” 25 इसलिए नौकरों ने लम्बे समय तक प्रतीक्षा की। अन्त

* **3:21:** ज्योंही राजा ... उठा पाठ का यह अंश प्राचीन यूनानी अनुवाद में है, किन्तु यह संयोगवश हिब्रू पाठ से छूट गया था।

में वे चिन्तित हुए। उन्होंने चाभी ली और दरवाज़ खोले। जब नौकर
घुसे तो उन्होंने राजा को फर्श पर मरा पड़ा देखा।
26 जब तक नौकर राजा की प्रतीक्षा करते रहे तब तक एहूद को
भाग निकलने का समय मिल गया। एहूद मूर्तियों के पास से होकर
सेइरे नामक स्थान की ओर गया। 27 एहूद सेइरे नामक स्थान पर
पहुँचा। तब उसने एप्रैम के पहाड़ी क्षेत्र में तुरही बजाई। इस्राएल के
लोगों ने तुरही की आवाज़ सुनी और वे पहाड़ियों से उतरे। एहूद
उनका संचालक था। 28 एहूद ने इस्राएल के लोगों से कहा, “मेरे
पीछे चलो। यहोवा ने मोआब के लोगों अर्थात् हमारे शत्रुओं को
हराने में हमारी सहायता की है।”
इसलिए इस्राएल के लोगों ने एहूद का अनुसरण किया। वे एहूद
का अनुसरण उन स्थानों पर अधिकार करने के लिए करते रहे जहाँ
से यरदन नदी सरलता से पार की जा सकती थी। वे स्थान मोआब
के प्रदेश तक पहुँचाते थे। इस्राएल के लोगों ने किसी को यरदन
नदी के पार नहीं जाने दिया। 29 इस्राएल के लोगों ने मोआब के
लगभग दस हजार बलवान और साहसी व्यक्तियों को मार डाला।
एक भी मोआबी भागकर बच न सका। 30 इसलिए उस दिन मोआब
के लोग बलपूर्वक इस्राएल के लोगों के शासन में रहने को विवश
किये गए और वहाँ उस प्रदेश में अस्सी वर्ष तक शान्ति रही!

न्यायाधीश शमगर

31 एहूद द्वारा इस्राएल के लोगों की रक्षा हो जाने के बाद एक
अन्य व्यक्ति ने इस्राएल को बचाया। उस व्यक्ति का नाम शमगर
था और वह अनात नामक व्यक्ति का पुत्र था। शमगर ने चाबुक का
उपयोग छः सौ पलिश्ती व्यक्तियों को मार डालने के लिये किया।

4

स्त्री न्यायाधीश दबोरा

1 एहूद के मरने के बाद यहोवा ने इस्राएली लोगों को फिर पार
करते देखा। 2 इसलिए यहोवा ने कनान प्रदेश के राजा याबीन को
इस्राएली लोगों को पराजित करने दिया। याबीन हासोर नामक नगर
में शासन करता था। राजा याबीन की सेना का सेनापति सीसरा
नामक व्यक्ति था। सीसरा हरोशेत हाग्गोयीम नामक नगर में रहता
था। 3 सीसरा के पास नौ सौ लोहे के रथ थे और वह बीस वर्ष तक
इस्राएल के लोगों के प्रति बहुत क्रूर रहा। इस्राएल के लोगों के साथ
बहुत बुरा व्यवहार किया गया। इसलिए उन्होंने यहोवा की प्रार्थना
की और सहायता के लिए रोकर पुकार की।

4 एक स्त्री नबी दबोरा नाम की थी। वह लप्पीदोत नामक व्यक्ति
की पत्नी थी। वह उस समय इस्राएल की न्यायाधीश थी। 5 एक
दिन दबोरा, ताड़ के पेड़ के नीचे बैठी थी जिसे "दबोरा का ताड़
वृक्ष" कहा जाता था। इस्राएल के लोग उसके पास यह पूछने के
लिये आए कि सीसरा के विषय में क्या किया जाये। (दबोरा का
ताड़ वृक्ष एप्रैम के पहाड़ी प्रदेश मे रामा और बेतेल नगरों के बीच
था।) 6 दबोरा ने बाराक नामक व्यक्ति के पास संदेश भेजा। उसने
उसे उस से मिलने को कहा। बाराक अबीनोअम नामक व्यक्ति का
पुत्र था। बाराक नप्ताली के क्षेत्र में केदेश नामक नगर में रहता था।
दबोरा ने बाराक से कहा, "यहोवा, इस्राएल का परमेश्वर तुम्हें आदेश
देता है, 'जाओ और नप्ताली एवं जबूलून के परिवार समूहों से दस
हजार व्यक्तियों को इकट्ठा करो। 7 मैं याबीन की सेना के सेनापति
सीसरा को तुम्हारे पास भेजूँगा। मैं सीसरा, उसके रथों और उसकी
सेना को कीशोन नदी पर पहुँचाऊँगा। मैं वहाँ सीसरा को हराने में
तुम्हारी सहायता करूँगा।' "

8 तब बाराक ने दबोरा से कहा, "यदि तुम मेरे साथ चलोगी तो मैं
जाऊँगा और यह करूँगा। किन्तु यदि तुम नहीं चलोगी तो मैं नहीं
जाऊँगा।"

9 दबोरा ने उत्तर दिया, "निश्चय ही, मैं तुम्हारे साथ चलूँगी। किन्तु
तुम्हारी भावना के कारण जब सीसरा हराया जाएगा, तुम्हें सम्मान

नहीं मिलेगा। यहोवा एक स्त्री द्वारा सीसरा को हराने देगा।”

इसलिए दबोरा बाराक के साथ केदेश नगर को गई। 10 केदेश
नगर में बाराक ने जबूलून और नप्ताली के परिवार समूहों को एक
साथ बुलाया। बाराक ने उन परिवार समूहों को एक साथ बुलाया।
बाराक ने उन परिवार समूहों से, अपने साथ चलने के लिये दस
हजार व्यक्तियों को इकट्ठा किया। दबोरा भी बाराक के साथ गई।

11 वहाँ हेबेर नामक एक ऐसा व्यक्ति था जो केनी लोगों में से था।
हेबेर अन्य केनी लोगों को छोड़ चुका था। (केनी लोग होबाब के
वंशज थे। होबाब मूसा का ससुर था।) हेबेर ने अपना घर सानन्नीम
स्थान पर बांज के पेड़ के समीप बनाया था। सानन्नीम केदेश नगर
के पास है।

12 तब सीसरा से यह कहा गया कि बाराक जो कि अबीनोअम का
पुत्र है, ताबोर पर्वत तक पहुँच गया है। 13 इसलिए सीसरा ने अपने
नौ सौ लोहे के रथों को इकट्ठा किया। सीसरा ने अपने सभी सैनिकों
को भी साथ लिया। हरोशेत हाग्गोयीम नगर से उन्होंने कीशोन नदी
तक यात्रा की।

14 तब दबोरा ने बाराक से कहा, “आज के दिन ही यहोवा तुम्हें
सीसरा को हराने में सहायता देगा। निश्चय ही, तुम जानते हो कि
यहोवा ने पहले से ही तुम्हारे लिये रास्ता साफ कर रखा है।” इसलिए
बाराक ने दस हजार सैनिकों को ताबोर पर्वत से उतारा। 15 बाराक
और उसके सैनिकों ने सीसरा पर आक्रमण कर दिया। युद्ध के दौरान
यहोवा ने सीसरा, उसकी सेना और रथों को अस्तव्यस्त कर दिया।
उनकी व्यवस्था भंग हो गई। इसलिए बाराक और उसकी सेना ने
सीसरा की सेना को हरा दिया। किन्तु सीसरा ने अपने रथ को छोड़
दिया तथा पैदल भाग खड़ा हुआ। 16 बाराक ने सीसरा की सेना से
युद्ध जारी रखा। बाराक और उसके सैनिकों ने सीसरा के रथों और
सेना का पीछा हरोशेत हाग्गोयीम तक लगातार किया। बाराक के
सैनिकों ने सीसरा के सैनिकों को मारने के लिये अपनी तलवारों का
उपयोग किया। सीसरा का कोई सैनिक जीवित न बचा।

17 किन्तु सीसरा भाग गया। वह उस तम्बू के पास आया, जहाँ
याएल नामक एक स्त्री रहती थी। याएल, हासोर नामक व्यक्ति की
पत्नी थी। वह केनी लोगों में से एक था। हेबेर का परिवार हासोर
के राजा याबीन से शान्ति– सन्धि किये हुये था। इसलिये सीसरा,
याएल के तम्बू में भाग कर गया। 18 याएल ने सीसरा को आते
देखा, अत: वह उससे मिलने बाहर गई। याएल ने सीसरा से कहा,
"मेरे तम्बू मे आओ, मेरे स्वामी, आओ। डरो नहीं।" इसलिए सीसरा
याएल के तम्बू में गया और उसने उसे एक कालीन से ढक दिया।

19 सीसरा ने याएल से कहा, "मैं प्यासा हूँ। कृपया मुझे पीने को
थोड़ा पानी दो।" इसलिए याएल ने एक मशक खोला, जिसमें उसने
दूध रखा था और उसने पीने को दिया। तब उसने सीसरा को ढक
दिया।

20 तब सीसरा ने याएल से कहा, "तम्बू के द्वार पर जाओ। यदि
कोई यहाँ से गुज़रता है और पूछता है, 'क्या यहाँ कोई है?' तो तुम
कहना, 'नहीं।' "

21 किन्तु हेबेर की पत्नी याएल ने एक तम्बू की खूँटी और हथौड़ा
लिया। याएल चुपचाप सीसरा के पास गई। सीसरा बहुत थका था
अतः वह सो रहा था। याएल ने तम्बू की खँूटी को सीसरा के सिर
की एक ओर रखा और उस पर हथौड़े से चोट की। तम्बू की खूँटी
सीसरा के सिर की एक ओर से होकर जमीन में धँस गई और इस
तरह सीसरा मर गया।

22 ठीक तुरन्त बाद बाराक सीसरा को खोजता हुआ याएल के
तम्बू के पास आया। याएल बाराक से मिलने बाहर निकली और
बोली, "अन्दर आओ और मैं उस व्यक्ति को दिखाऊँगी जिसे तुम
ढूँढ रहे हो।" इसलिए बाराक याएल के साथ तम्बू में घुसा। बाराक
ने वहाँ सीसरा को जमीन पर मरा पड़ा पाया, तम्बू की खूँटी उसके
सिर की एक ओर से दूसरी ओर निकली हुई थी।

23 उस दिन यहोवा ने कनान के राजा याबीन को इस्राएल के लोगों की सहायता से हराया। 24 इस प्रकार इस्राएल के लोग क्रमश: अधिक शक्तिशाली होते गए और उन्होंने कनान के राजा याबीन को हरा दिया। इस्राएल के लोगों ने कनान के राजा याबीन को अन्तिम रूप से हराया।

5

दबोरा का गीत

1 जिस दिन इस्राएल के लोगों ने सीसरा को हराया उस दिन दबोरा और अबीनोअम के पुत्र बाराक ने इस गीत को गाया:*

2 इस्राएल के लोगों ने अपने को युद्ध के लिये तैयार किया।†
लोग युद्ध में जाने के लिये स्वयं आए!
यहोवा को धन्य कहो!

3 "राजाओं, सुनो।
शासकों, ध्यान दो।
मैं गाऊँगी।
मैं स्वयं यहोवा के प्रति गाऊँगी।
मैं यहोवा, इस्राएल के लोगों के
परमेश्वर की स्तुति करूँगी।

4 "हे यहोवा, अतीत में तू सेईर देश से आया।
तू एदोम प्रदेश से चलकर आया,
और धरती काँप उठी।
गगन ने वर्षा की।
मेघों ने जल गिराया।

---

* **5:1:** अध्याय 5 यह बहुत प्राचीन गीत है और इस गीत की कई पंक्तियों के अर्थ हिब्रू भाषा में समझ पाना कठिन है। † **5:2:** इस्राएल ... तैयार किया इसका अर्थ यह भी हो सकता है, "जन नायकों ने इस्राएल का नेतृत्व किया" अथवा "जब इस्राएल में लोग लम्बे बाल रखते थे।" या सैनिक अपने बालों को परमेश्वर को विशेष उपहार के रूप में अर्पित करते थे।

5 पर्वत काँप उठे यहोवा, सीनै पर्वत के परमेश्वर के सामने, यहोवा,
इस्राएल के लोगों के परमेश्वर के सामने!

6 “अनात का पुत्र शमगर के समय में याएल के समय में,
मुख्य पथ सूने थे।
काफिले‡ और यात्री गौण पथों से चलते थे।

7 “कोई योद्धा नहीं था। इस्राएल में कोई योद्धा नहीं था, हे दबोरा,
जब तक तुम न खड़ी हुई,
जब तक तुम इस्राएल की माँ बन कर न खड़ी हुई।

8 “परमेश्वर ने नये प्रमुखों को चुना कि
वे नगर—द्वार पर युद्ध करे।§
इस्राएल के चालीस हजार सैनिकों में
कोई ढाल और भाला नहीं पा सका।

9 “मेरा हृदय इस्राएल के सेनापतियों के साथ है।
ये सेनापति इस्राएल के लोगों में से स्वयं आए!
यहोवा को धन्य कहो!

10 “श्वेत गधों पर सवार होने वाले लोगों तुम,
जो कम्बल की काठी पर बैठते हो
और तुम जो राजपथ पर चलते हो,
ध्यान दो!
11 घुंघरूओं की छमछम पर,
पशुओं को लिए पानी वाले कूपों पर,
वे यहोवा की विजय की कथाओं को कहते हैं,

---

‡ **5:6:** काफिले व्यापारियों के दल। प्राय: बहुत से व्यापारी अपने सामान को गधों या ऊँटों पर लादकर एक साथ यात्रा करते थे। § **5:8:** परमेश्वर ... युद्ध करे इन दो पंक्तियों का अर्थ बहुत अस्पष्ट है।

इस्राएल में यहोवा और उसके वीरों की विजय—कथा कहते हैं।
उस समय यहोवा के लोग नगर—द्वारो पर लड़े और विजयी हुये!

12 “दबोरा जागो, जागो!
जागो, जागो गीत गाओ!
जागो, बाराक!
जाओ, हे अबीनोअम के पुत्र अपने शत्रुओं को पकड़ो!

13 “उस समय, बचे लोग, सम्मानितों के पास आए।
यहोवा के लोग, मेरे पास योद्धाओं के साथ आए।**

14 “एप्रैम के कुछ लोग
अमालेक के पहाड़ी प्रदेश†† में बसे।
ऐ बिन्यामीन, तुम्हारे बाद वे लोग
और तुम्हारे लोग आए।
माकीर के परिवार समूह से
सेनापति आगे आए।
काँसे के दण्ड सहित नायक आए
जबूलून परिवार समूह से।
15 इस्साकार के नेता दबोरा के साथ थे।
इस्साकर का परिवार समूह बाराक के प्रति सच्चा था।
वे वयक्ति पैदल ही घाटी में भेजे गए।

“रूबेन के सैनिक बड़बड़ाए, वे क्या करें।

** **5:13:** उस समय ... साथ आए या “उस समय जो लोग बचे थे सम्मानितों पर शासन करते थे। यहोवा के लोगों ने मेरे लिये योद्धाओं के साथ शासन किया। †† **5:14:** अमालेक के पहाड़ी प्रदेश यह क्षेत्र उस प्रदेश का भाग था जिसमें एप्रैम का परिवार समूह बसा था। देखों न्यायियों 12:15

16 भेड़शाले के दीवार‡‡ से लगे क्यों तुम सभी बैठ हो?
रूबेन के वीर सैनिकों ने युद्ध का दृढ़ निश्चय किया।
किन्तु वे अपनी भेड़ों के लिए संगीत को सुनते रहे घर बैठे।§§
17 गिलाद के लोग*** यरदन नदी के पार अपने डेरों मे पड़े रहे।
ऐ, दान के लोगों, जहाँ तक बात तुम्हारी है—तुम जहाजों के साथ क्यों चिपके रहे?
आशेर के लोग सागर तट परपड़े रहे।
उन्होंने अपने सुरक्षित बन्दरगाहों में डेरा डाला।
18 किन्तु जबूलून के लोगों ने और नप्ताली के लोगों ने, मैदान के ऊँचे क्षेत्रों में युद्ध के खतरे में जीवन को डाला।
19 राजा आए, वे लड़े, उस समय कनान का राजा,
तानक शहर मे मगिद्दो के जलाशय पर लड़ा
किन्तु वे इस्राएल के लोगों की कोई सम्पत्ति न ले जा सके!
20 गगन से नक्षत्रों ने युद्ध किया।
नक्षत्रों ने अपने पथ से, सीसरा से युद्ध किया।
21 कीशोन नदी, सीसरा के सैनिकों को बहा ले गई,
वह प्राचीन नदी—कीशोन नदी।
मेरी आत्मा, शक्ति से धावा बोलो!
22 उस समय अश्वों की टापों ने भूमि पर हथौड़ा चलाया।
सीसरा के अश्व भागते गए, भागते गए।

23 "यहोवा के दूत ने कहा,
'मेरोज नगर को अभिशाप दो।
इसके लोगों को भीषण अभिशाप दो!
योद्धाओं के साथ वे यहोवा की सहायता करने नहीं आए।'
24 केनी हेबेर की पत्नी याएल

‡‡ **5:16:** भेड़शाले के दीवार या सम्भवत: "शिविर समारोह" या "काठी के थैले।"
§§ **5:16:** रुबेन के ... घर बैठे यह गीत इन लोगों पर व्यंग्य करने के लिये है क्योंकि इन्होंने सीसरा के विरुद्ध युद्ध में सहायता नहीं की।
*** **5:17:** गिलाद के लोग वे लोग थे जो यरदन नदी के पूर्व के प्रदेश में थे।

सभी स्त्रियों मे से सबसे अधिक धन्य होगी।
25 सीसरा ने मांगा जल,
किन्तु याएल ने दिया दूध,
शासक के लिये उपयुक्त कटोरे में,
वह उसे मलाई लाई।
26 याएल बाहर गई, लाई खूँटी तम्बू की।
उसके दायें कर में हथौड़ा आया श्रमिक काम लाते जिसे और
उसने सीसरा पर चलाया हथौड़ा।
उसने किया चूर सिर उसका,
उसने उसके सिर को बेधा एक ओर से।
27 डूबा वह याएल के पैरों बीच।
वह मर गया।
वह पड़ गया वहीं।
डूबा वह उसके पैरों बीच।
वह मर गया जहाँ सीसरा डूबा।
वहीं वह गिरा, मर गया!

28 "सीसरा की माँ, देखती खिड़की से और पर्दों से
झाँकती हुई चीख उठी।
'सीसरा के रथ को विलम्ब क्यों आने में?
सीसरा के रथ के अश्वों के हिनहिनाने में देर क्यों?'

29 "सबसे चतुर उसकी सेविकायें उत्तर उसे देती,
हाँ सेविका उसे उत्तर देती:
30 'निश्चय ही उन्होंने विजय पाई है
निश्चय ही पराजितों की वस्तुएँ वे ले रहे हैं!
निश्चय ही वे बाँटते हैं आपस में वस्तुओं को!
एक लड़की या दो, दी जा रही हर सैनिक को।
संभवत: सीसरा ले रहा है, कोई रंगा वस्त्र।

संभवत: एक कढ़े वस्त्र का टुकड़ा हो, या विजेता सीसरा
पहनने के लिए, दे कढ़े किनारी युक्त वस्त्र।'

31 "हे यहोवा! इस तरह तेरे, सब शत्रु मर—मिट जायें।
किन्तु वे लोग सब जो प्यार करते हैं तुझको ज्वलित दीप्त सूर्य
सम शक्तिशाली बने!"

इस प्रकार उस प्रदेश में चालीस वर्ष तक शान्ति रही।

6

मिद्यानी इस्राएल के लोगों से युद्ध करते हैं

1 यहोवा ने फिर देखा कि इस्राएल के लोग पाप कर रहे हैं।
इसलिए सात वर्ष तक यहोवा ने मिद्यानी लोगों को इस्राएल को
पराजित करने दिया।
2 मिद्यानी लोग बहुत शक्तिशाली थे तथा इस्राएल के लोगों के
प्रति बहुत क्रुर थे। इसलिए इस्राएल के लोगों ने पहाड़ों में बहुत
से छिपने के स्थान बनाए। उन्होंने अपना भोजन भी गुफाओं और
कठिनाई से पता लगाए जा सकने वाले स्थानों में छिपाए। 3 उन्होंने
यह किया, क्योंकि मिद्यानी और अमालेकी लोग पूर्व से सदा आते
थे और उनकी फसलों को नष्ट करते थे। 4 वे लोग उस प्रदेश में
डेरे डालेते थे और उस फसल को नष्ट करते थे जो इस्राएल के
लोग लगाते थे। अज्जा नगर के निकट तक के प्रदेश की इस्राएल
के लोगों की फसल को वे लोग नष्ट करते थे। वे लोग इस्राएल
के लोगों के खाने के लिये कुछ भी नहीं छोड़ते थे। वे उनके लिए
भेड़, या पशु या गधे भी नहीं छोड़ते थे। 5 मिद्यानी लोग आए और
उन्होने उस प्रदेश में डेरा डाला। वे अपने साथ अपने परिवारों और
जानवरों को भी लाए। वे इतने अधिक थे जितने टिड्डियों के दल।
उन लोगों और उनके ऊँटों की संख्या इतनी अधिक थी कि उनको
गिनना संभव नहीं था। ये सभी लोग उस प्रदेश में आए और उसे रौंद
डाला। 6 इस्राएल के लोग मिद्यानी लोगों के कारण बहुत गरीब हो

गए। इसलिए इस्राएल के लोगों ने यहोवा को सहायता के लिए रो कर पुकारा।
7 मिद्यानियों ने वे सभी बुरे काम किये। इसलिए इस्राएल के लोग
यहोवा से सहायता के लिए रो कर चिल्लाये। 8 इसलिए यहोवा ने
उनके पास एक नबी भेजा। नबी ने इस्राएल के लोगों से कहा, "यहोवा, इस्राएल का परमेश्वर यह कहा है कि, 'तुम लोग मिस्र देश में दास थे। मैंने तुम लोगों को स्वतन्त्र किया और मैं उस देश से
तुम्हें बाहर लाया। 9 मैंने मिस्र के शक्तिशाली लोगों से तुम्हारी रक्षा
की। तब कनान के लोगों ने तुमको कष्ट दिया। इसलिए मैंने फिर तुम्हारी रक्षा की। मैंने उन लोगों से उनका देश छुड़वाया और मैंने
उनका देश तुम्हें दिया।' 10 तब मैंने तुमसे कहा, 'में यहोवा तुम्हारा
परमेश्वर हूँ। तुम लोग एमोरी लोगों के प्रदेश में रहोगे, किन्तु तुम्हें उनके असत्य देवताओं की पूजा नहीं करनी चाहिए।' परन्तु तुम लोगों ने मेरी आज्ञा का पालन नहीं किया।"

यहोवा का दूत गिदोन के पास आता है

11-12 उस समय, यहोवा का दूत गिदोन नामक व्यक्ति के पास
आया। यहोवा का दूत आया और ओप्रा नामक स्थान पर एक बांज के पेड़ के नीचे बैठा। यह बाँज का पेड़ योआश नामक व्यक्ति का था। योआश अबीएजेरी लोगों में से एक था। योआश गिदोन का पिता था। गिदोन कुछ गेहूँ को दाखमधु निकालने के यंत्र में कूट रहा था। यहोवा का दूत गिदोन के पास बैठा। गिदोन मिद्यानी लोगों से अपना गेंहूँ छिपाने का प्रयत्न कर रहा था। यहोवा का दूत गिदोन के सामने प्रकट हुआ और उससे कहा, "यहोवा तुम्हारे साथ है, तुम जैसे शक्तिशाली सैनिकों के साथ है।"
13 तब गिदोन ने कहा, "महोदय, मैं शपथ खाकर कहता हूँ कि
यदि यहोवा हमारे साथ है तो हम लोगों को इतने कष्ट क्यों हैं? हम लोगों ने सुना है कि उसने हमारे पूर्वजों के लिए अद्‌भूत कार्य किये थे। हमारे पूर्वजों ने हम लोगों से कहा कि यहोवा हम लोगों को मिस्र

से बाहर लाया। किन्तु अब यहोवा ने हम लोगों को छोड़ दिया है। यहोवा ने मिद्यानी लोगों को हम लोगों को हराने दिया।"

14 यहोवा गिदोन की ओर मुड़ा और उससे बोला, "अपनी शक्ति का प्रयोग करो। जाओ और मिद्यानी लोगों से इस्राएल के लोगों की रक्षा करो। क्या तुम यह नहीं समझते कि वह मैं यहोवा हूँ, जो तुम्हें भेज रहा हूँ?"

15 किन्तु गिदोन ने उत्तर दिया और कहा, "महोदय, क्षमा करें, मैं इस्राएल की रक्षा कैसे कर सकता हूँ? मेरा परिवार मनश्शे के परिवार समूह में सबसे कमजोर है और मैं अपने परिवार में सबसे छोटा हूँ।"

16 यहोवा ने गिदोन को उत्तर दिया और कहा, "मैं निश्चय ही मिद्यानी लोगों को हराने में सहायता करने के लिये तुम्हारे साथ रहूँगा। यह ऐसा मालूम होगा कि तुम एक व्यक्ति के विरुद्ध लड़ रहे हो।"

17 तब गिदोन ने यहोवा से कहा, "यदि तू मुझ से प्रसन्न है तो तू
प्रमाण दे कि तू सचमुच यहोवा है। 18 कृपा करके तू यहाँ रूक। जब
तक मैं लौट न आऊँ तब तक तू न जा। मुझें मेरी भेंट लाने दे और
उसे तेरे सामने रखने दे।"

अत: यहोवा ने कहा, "मैं तब तक प्रतीक्षा करूँगा जब तक तुम लौटते नहीं।"

19 इसलिए गिदोन गया और उसने एक जवान बकरा खौलते पानी में पकाया। गिदोन ने लगभग एक एपा आटा भी लिया और अखमीरी रोटीयाँ बनाई। तब गिदोन ने माँस को एक टोकरे में तथा पके माँस के शोरबे को एक बर्तन में लिया। गिदोन ने माँस, पके माँस के शोरबा और अखमीरी रोटियों को निकाला। गिदोन ने वह भोजन बाँज के पेड़ के नीचे यहोवा को दिया।

20 परमेश्वर के दूत ने गिदोन से कहा, “माँस और अखमीरी रोटीयों
को वहाँ चट्टान पर रखो। तब शोरबे को गिराओ।” गिदोन ने वैसा
ही किया जैसा करने को कहा गया था।
21 यहोवा के दूत ने अपने हाथ में एक छड़ी ले रखी थी। यहोवा
के दूत ने माँस और रोटियों को छड़ी के सिरे से छुआ। तब चट्टान से
आग जल उठी। गोश्त और रोटियाँ पूरी तरह जल गई। तब यहोवा
का दूत अन्तर्ध्यान हो गया।
22 तब गिदोन ने समझा कि वह यहोवा के दूत से बातें कर रहा
था। इसलिए गिदोन चिल्ला उठा, “सर्वशक्तिमान यहोवा महान है।
मैंने यहोवा के दूत को आमने सामने देखा है।”
23 किन्तु यहोवा ने गिदोन से कहा, “शान्त रहो।” डरो नहीं। तुम
मरोगे नहीं।*
24 इसलिए गिदोन ने यहोवा की उपासना के लिए उस स्थान
पर एक वेदी बनाई। गिदोन ने उस वेदी का नाम “यहोवा शान्ति
है” रखा। वह वेदी अब तक ओप्रा मे खड़ी है। ओप्रा वहीं है जहाँ
एजेरी लोग रहते हैं।

गिदोन बाल की वेदी को गिरा डालता है

25 उसी रात यहोवा ने गिदोन से बाते कीं। यहोवा ने गिदोन से
कहा, “अपने पिता के उस प्रौढ़ बैल को लो जो सात वर्ष का है।
तुम्हारे पिता की असत्य देवता बाल की एक वेदी है। उस वेदी की
बगल में एक लकड़ी का खम्भा भी है। खम्भा असत्य देवी अशेरा
के सम्मान के लिए बनाया गया था। बैल का उपयोग बाल की वेदी
को गिराने के लिए करो तथा अशेरा के खम्भे को काट दो। 26 तब
यहोवा, अपने परमेश्वर के लिए उचित प्रकार की वेदी बनाओ। इस
ऊँचे स्थान पर वह वेदी बनाओ। तब प्रौढ़ बैल को मारो और इस
वेदी पर उसे जलाओ। अशेरा के खम्भे की लकड़ी का उपयोग
अपनी भेंट को जलाने के लिए करो।”

* **6:23:** तुम मरोगे नहीं गिदोन ने सोचा कि वह मर जाएगा क्योंकि उसने यहोवा को प्रत्यक्ष देखा है।

27 इसलिए गिदोन ने अपने दस नौकरों को लिया और वही किया जो यहोवा ने करने को कहा था। किन्तु गिदोन डर रहा था कि उसका परिवार और उस नगर के लोग देख सकते हैं कि वह क्या कर रहा है। गिदोन ने वही किया जो यहोवा ने उसे करने को कहा किन्तु उसने यह रात में किया, दिन में नहीं।

28 अगली सुबह नगर के लोग सोकर उठे और उन्होंने देखा कि बाल की वेदी नष्ट कर दी गई है। उन्होंने यह भी देखा कि अशेरा का खम्भा काट डाला गया है। अशेरा का खम्भा बाल की वेदी के ठीक पीछे गिरा पड़ा था। उन लोगों ने उस वेदी को भी देखा जिसे गिदोन ने बनाया था और उन्होंने उस वेदी पर बलि दिये गए बैल को भी देखा।

29 नगर के लोगों ने एक दूसरे को देखा और कहा, “हमारी वेदी को किसने गिराया? हमारे अशेरा के खम्भे किसने काटे? इस नयी वेदी पर किसने इस बैल की बलि दी?” उन्होंने कई प्रश्न किये और यह पता लगाना चाहा कि वे काम किसने किये।

किसी ने कहा, “योआश के पुत्र गिदोन ने यह काम किया।”

30 इसलिए नगर के लोग योआश के पास आए। उन्होंने योआश से कहा, “तुम्हें अपने पुत्र को बाहर लाना चाहिए। उसने बाल की वेदी को गिराया है और उसने उस अशेरा के खम्भे को काटा है जो उस वेदी की बगल में था। इसलिए तुम्हारे पुत्र को मार जाना चाहिए।”

31 तब योआश ने उस भीड़ से कहा जो उसके चारों ओर खड़ी थी। योआश ने कहा, “क्या तुम बाल का पक्ष लेने जा रहे हो? क्या तुम बाल की रक्षा करने जा रहे हो? यदि कोई बाल का पक्ष लेता है तो उसे सवेरे मार दिए जाने दो। यदि बाल सचमुच देवता है तो उसे अपनी रक्षा स्वयं करने दो, यदि कोई उस वेदी को गिराता है।”
32 योआश ने कहा, “यदि गिदोन ने बाल की वेदी को गिराया तो बाल को उससे संघर्ष करने दो।” अत: उस दिन योआश ने गिदोन को एक नया नाम दिया। उसने उसे यरूब्बाल कहा।

गिदोन मिद्यान के लोगों को हरता है

33 मिद्यानी, अमालेकी एवं पूर्व के अन्य सभी लोग इस्राएल के
लोगों के विरुद्ध युद्ध करने के लिए एक साथ मिले। वे लोग यरदन
नदी के पार गए और उन्होंने यिज्रेल की घाटी† में डेरा डाला।
34 किन्तु गिदोन पर यहोवा की आत्मा उतरी और उसे बड़ी शक्ति
प्रदान की। गिदोन ने अबीएज़ेरी लोगों को अपने साथ चलने के
लिए तुरही बजाई। 35 गिदोन ने मनश्शे परिवार समूह के सभी लोगों
के पास दूत भेजे। उन दूतों ने मनश्शे के लोगों से अपने हथियार
निकालने और युद्ध के लिए तैयार होने को कहा गिदोन ने आशेर,
जबूलून और नप्ताली के परिवार समूहों को भी दूत भेजे। इसलिए वे
परिवार समूह भी गिदोन से और उसके आदमियों से मिलने गए।

36 तब गिदोन ने यहोवा से कहा, "तूने मुझसे कहा कि तू इस्राएल
के लोगों की रक्षा करने में मेरी सहायता करेगा। मुझे प्रमाण दे। 37 मैं
खलिहान‡ के फर्श पर एक भेड़ का ऊन रखता हूँ। यदि भेड़ के ऊन
पर ओस की बूँदें होंगी, जबकी सारी भूमि सूखी है, तब मैं समझूँगा
कि तू अपने कहने के अनुसार मेरा उपयोग इस्राएल की रक्षा करने
में करेगा।"

38 और यह ठीक वैसा ही हुआ। गिदोन अगली सुबह उठा और
भेड़ के ऊन को निचोड़ा । वह भेड़ के ऊन से प्याला भर पानी
निचोड़ सका।

39 तब गीदोन ने परमेश्वर से कहा, "मुझ पर क्रोधित न हो। मुझे
केवल एक और प्रश्न करने दे। मुझे भेड़ के ऊन से एक बार और
परीक्षण करने दे। इस समय भेड़ के ऊन को उस दशा में सूखा रहने
दे जब इसके चारों ओर की भूमि ओस से भीगी हो।"

---

† **6:33:** यिज्रेल की घाटी इस्साकर के परिवार समूह के क्षेत्र में यह घाटी स्थित थी। यह चौड़ी और उपजाऊ घाटी है। न्यायियों 5:19 में कथित मेगिद्दों और तानक नगरों सहित इसमें कई महत्वपूर्ण नगर थे। ‡ **6:37:** खलिहान वह स्थान जहाँ लोग गेहूँ को उसके डंठल के अन्य भागों से अलग करने के लिये पीटते हैं।

40 उस रात परमेश्वर ने वही किया। केवल भेड़ की ऊन ही सूखी
थी, किन्तु चारों ओर की भूमि ओस से भीगी थी।

7

1 सवेरे प्रात: काल, यरुब्बाल (गिदोन) और उसके सभी लोगों
ने अपने डेरे हरोद के झरने पर लगाए। मिद्यानी लोग गिदोन और
उसके आदमियों के उत्तर में डेरा डाले थे। मिद्यानी लोग मोरे नामक
पहाड़ी के नीचे घाटी में डेरा डाले पड़े थे।
2 तब यहोवा ने गिदोन से कहा, "मैं तुम्हारे आदमियों की सहायता
मिद्यानी लोगों को हराने के लिये करने जा रहा हूँ। किन्तु तुम्हारे पास
इस काम के लिए आवश्यकता से अधिक व्यक्ति हैं। मैं नहीं चाहता
कि इस्राएल के लोग मुझे भूल जायें और शेखी मारें कि उन्होंने स्वयं
अपनी रक्षा की। 3 इसलिए अपने लोगों में घोषणा करो। उनसे कहो,
'जो कोई डर रहा हो, अपने घर लौट सकता है।' "

इस प्रकार गिदोन ने लोगों की परीक्षा ली।* बाईस हजार
व्यक्तियों ने गिदोन को छोड़ा और वे अपने घर लौट गए। किन्तु
दस हजार फिर भी डटे रहे।
4 तब यहोवा ने गिदोन से कहा, "अब भी आवश्यकता से अधिक
लोग हैं। इन लोगों को जल के पास ले जाओ और वहाँ मैं इनकी
परीक्षा तुम्हारे लिये करूँगा। यदि मैं कहूँगा, 'यह व्यक्ति तुम्हारे साथ
जायेगा' तो वह जायेगा। किन्तु यदि मैं कहूँगा, 'यह व्यक्ति तुम्हारें
साथ नहीं जाएगा।' तो वह नहीं जाएगा।"
5 इसलिए गिदोन लोगों को जल के पास ले गया। उस जल के
पास यहोवा ने गिदोन से कहा, "इस प्रकार लोगों को अलग करोः
जो व्यक्ति कुत्ते की तरह लपलप करके जल पीएंगे, वे एक वर्ग में
होंगे। जो पीने के लिए झुकेंगे, दूसरे वर्ग में होंगे।"
6 वहाँ तीन सौ व्यक्ति ऐसे थे जिन्होंने जल मुँह तक लाने के लिए
अपने हाथों का उपयोग किया और उसे कुत्ते की तरह लपलप करके

* **7:3:** इस प्रकार ... परीक्षा ली हिब्रू में, "वे गिलाद पर्वत छोड़ सकते हैं।"

पिया। बाकी लोग घुटनों के बल झुके और उन्होंने जल पिया। 7 तब
यहोवा ने गिदोन से कहा, "मैं तीन सौ व्यक्तियों का उपयोग करूँगा
जिन्होंने कुत्ते की तरह लपलप करके जल पिया। मैं उन्हीं लोगों का
उपयोग तुम्हारी रक्षा करने के लिए करूँगा और मैं तुम्हें मिद्यानी
लोगों को परास्त करने दूँगा। अन्य लोगों को अपने घर लौट जाने
दो।"

8 इसलिए गिदोन ने इस्राएल के शेष व्यक्तियों को उनके घर भेज
दिया। किन्तु गिदोन ने तीन सौ व्यक्तियों को अपने साथ रखा। उन
तीन सौ आदमियों ने अन्य जाने वाले आदमियों के भोजन, सामग्री
और तुरहियों को रख लिया।

अभी मिद्यानी लोग, गिदोन के नीचे घाटी में डेरा डाले हुए थे।
9 रात को यहोवा ने गिदोन से बातें की। यहोवा ने उससे कहा, "उठो
गिदोन, लोगों के डेरों में जाओ, क्योंकि मैं तुम्हें उन लोगों को हराने
दूँगा। 10 किन्तु यदि तुम अकेले वहाँ जाने से डरते हो तो अपने
नौकर फूरा को अपने साथ ले लो। 11 जब तुम मिद्यानी लोगों के डेरे
के पास जाओ तो यह सुनो कि वे लोग क्या कह रहे हैं। जब तुम
यह सुन लोगे कि वे क्या कह रहे हैं तब तुम उस डेरे पर आक्रमण
करने से नहीं डरोगे।"

इसलिए गिदोन और उसका नौकर फूरा दोनों शत्रु के डेरे की छोर
पर पहुँचे। 12 मिद्यानी, अमालेकी तथा पूर्व के अन्य सभी लोग उस
घाटी में डेरा डाले थे। वहाँ वे इतनी बड़ी संख्या में थे कि टिड्डी—दल
से प्रतीत होते थे। ऐसा प्रतीत हुआ कि उन लोगों के पास इतने ऊँट
थे, जितने समुद्र के किनारे बालू के कण।

13 जब गिदोन शत्रुओं के डेरे में पहुँचा, उसने एक व्यक्ति को बातें
करते सुना। वह व्यक्ति अपने देखे हुए स्वप्न को उसे बता रहा था।
वह व्यक्ति कह रहा था। "मैंने यह स्वपन देखा कि मिद्यान के लोगों
के डेरे में एक गोल रोटी चक्कर खाती हुई आई। उस रोटी ने डेरे

पर इतनी कड़ी चोट की कि डेरा पलट गया और चौड़ा होकर गिर गया।”

14 उस व्यक्ति का मित्र उस स्वप्न का अर्थ जानता था। उस व्यक्ति के मित्र ने कहा, “तुम्हारे स्वप्न का केवल एक ही अर्थ है। तुम्हारा स्वप्न योआश के पुत्र गिदोन की शक्ति के बारे में है। वह इस्राएल का है। इसका अभिप्राय यह है कि परमेश्वर मिद्यानी लोगों की सारी सेना को गिदोन द्वारा परास्त करायेगा।”

15 जब गिदोन ने स्वप्न के बारे में सुना और उसका अर्थ समझा
तो वह परमेश्वर के प्रति झुका। तब गिदोन इस्राएली लोगों के डेरे
में लौट गया। गिदोन ने लोगों को बाहर बुलाया, “तैयार हो जाओ।
यहोवा हम लोगों को मिद्यानी लोगों को हराने में सहायता करेगा।”
16 तब गिदोन ने तीन सौ व्यक्तियों को तीन दलों में बाँटा। गिदोन ने
हर एक व्यक्ति को एक तुरही और एक खाली घड़ा दिया। हर एक
घड़े में एक जलती मशाल थी। 17 तब गिदोन ने लोगों से कहा, “मुझे
देखते रहो और जो मैं करुँ, वही करो। मेरे पीछे—पीछे शत्रु के डेरों
की छोर तक चलो। जब मैं डेरे की छोर पर पहुँच जाऊँ, ठीक वही
करो जो मैं करूँ। 18 तुम सभी डेरों को घेर लो। मैं और मेरे साथ
के सभी लोग अपनी तुरही बजाएंगे। जब हम लोग तुरही बजाएंगे
तो तुम लोग भी अपनी तुरही बजाना। तब इन शब्दों के साथ घोष
करो: ‘यहोवा के लिये, गिदोन के लिये।’ ”

19 इस प्रकार गिदोन और उसके साथ के सौ व्यक्ति शत्रु के डेरों
की छोर पर आए। वे शत्रु के डेरे में उनके पहरेदारों की बदली
के ठीक बाद आए। यह आधी रात को हुआ। गिदोन और उसके
व्यक्तियों ने तुरहियों को बजाया तथा अपने घड़ों को फोड़ा। 20 तब
गिदोन के तीनों दलों ने अपनी तुरहियाँ बजाई और अपने घड़ों को
फोड़ा। उसके लोग अपने बाँये हाथ में मशाल लिये और दाँये हाथ
मे तुरहियाँ लिए हुए थे। जब वे लोग तुरहियाँ बजाते तो उद्घोष
करते, “यहोवा के लिए तलवार, गिदोन के लिए तलवार।”

21 गिदोन का हर एक व्यक्ति डेरे के चारों ओर अपनी जगह
पर खड़ा रहा। किन्तु डेरों के भीतर मिद्यानी लोग चिल्लाने और
भागने लगे। 22 जब गिदोन के तीन सौ व्यक्तियों ने अपनी तुरहियों
को बजाया तो यहोवा ने मिद्यानी लोगों को परस्पर एक दूसरे को
तलवारों से मरवाया। शत्रु की सेना उस बेतशित्ता नगर को भागी जो
सरेरा नगर की ओर है। वे लोग उस आबेलमहोला नगर की सीमा
तक भागे जो तब्बात नगर के निकट है।

23 तब नप्ताली, आशेर और मनश्शे के परिवारों के सैनिकों को
मिद्यानी लोगों का पीछा करने को कहा गया। 24 गिदोन ने एप्रैम
के सारे पहाड़ी क्षेत्र में दूत भेजे। दूतों ने कहा, "आगे आओ और
मिद्यानी लोगों पर आक्रमण करो। बेतबारा तक नदी पर और यरदन
नदी पर अधिकार करो। यह मिद्यानी लोगों के वहाँ पहुँचने से पहले
करो।" इसलिए

उन्होंने एप्रैम के परिवार समूह से सभी लोगों को बुलाया। उन्होंने
बेतबारा तक नदी पर अधिकार किया। 25 एप्रैम के लोगों ने मिद्यानी
लोगों के दो प्रमुखों को पकड़ा। इन दोनों प्रमुखों का नाम ओरेब
और जेब था। एप्रैम के लोगों ने ओरेब को ओरेब की चट्टान नामक
स्थान पर मार डाला। उन्होंने जेब को जब दाखमधु के कुण्ड नामक
स्थान पर मारा। एप्रैम के लोगों ने मिद्यानी लोगों का पीछा करना
जारी रखा। किन्तु पहले उन्होंने ओरेब और जेब के सिरों को काटा
और सिरों को गिदोन के पास ले गए। गिदोन यरदन नदी को पार
करने वाले घाट पर था।

8

1 एप्रैम के लोग गिदोन से रुष्ठ थे। जब एप्रैम के लोग गिदोन
से मिले, उन्होंने गिदोन से पूछा, "तुमने हम लोगों के साथ ऐसा
व्यवहार क्यों किया? जब तुम मिद्यानी लोगों के विरुद्ध लड़ने गए
तो हम लोगों को क्यों नहीं बुलाया?" एप्रैम के लोग गिदोन पर
क्रोधित थे।

2 किन्तु गिदोन ने एप्रैम के लोगों को उत्तर दिया, “मैंने उतनी
अच्छी तरह युद्ध नहीं किया जितनी अच्छी तरह आप लोगों ने
किया। क्या यह सत्य नहीं है कि फसल लेने के बाद तुम अपनी
अंगूर की बेलों में जो अंगूर बिना तोड़े छोड़ देते हो। वह मेरे परिवार,
अबीएज़ेर के लोगों की पूरी फसल से अधिक होते हैं। 3 इसी प्रकार
इस बार भी तुम्हारी फसल अच्छी हुई है। यहोवा ने तुम लोगों को
मिद्यानी लोगों के राजकुमारों ओरेब और जेब को पकड़ने दिया। मैं
अपनी सफलता को तुम लोगों द्वारा किये गए काम से कैसे तुलना
कर सकता हूँ?” जब एप्रैम के लोगों ने गिदोन का उत्तर सुना तो वे
उतने क्रोधित न रहे, जितने वे थे।

गिदोन दो मिद्यानी राजाओं को पकड़ता है

4 तब गिदोन और उसके तीन सौ व्यक्ति यरदन नदी पर आए
और उसके दूसरे पार गए। किन्तु वे थके और भूखे* थे। 5 गिदोन ने
सुक्कोत नगर के लोगों से कहा, “मेरे सैनिकों को कुछ खाने को दो।
मेरे सैनिक बहुत थके हैं। हम लोग अभी तक जेबह और सल्मुन्ना
का पीछा कर रहे हैं जो मिद्यानी लोगों के राजा हैं।”
6 सुक्कोत नगर के प्रमुखों ने गिदोन से कहा, “हम तुम्हारे सैनिकों
को कुछ खाने को क्यों दें? तुमने जेबह और सल्मुन्ना को अभी तक
पकड़ा नहीं है।”
7 तब गिदोन ने कहा, “तुम लोग हमें भोजन नहीं दोगे। यहोवा मुझे
जेबह और सल्मुन्ना को पकड़ने मे सहायता करेगा। उसके बाद मैं
यहाँ लौटूँगा और मरुभूमि के काँटो एवं कंटीली झाड़ीयों से तुम्हारी
चमड़ी उधेड़ूँगा।”

8 गितोन ने सुक्कोत नगर को छोड़ा और पनूएल नगर को गया।
गिदोन ने जैसे सुक्कोत के लोगों से भोजन माँगा था वैसे ही पनूएल
के लोगों से भी भोजन माँगा। किन्तु पनूएल के लोगों ने उसे वही

* **8:4:** भूखे प्राचीनतम यूनानी अनुवाद के अनुसार हिब्रू पाठ में “पीछा करते” हैं।

उत्तर दिया जो सुक्कोत के लोगों ने उत्तर दिया था। 9 इसलिए गिदोन
ने पनूएल के लोगों से कहा, “जब मैं विजय प्राप्त करूँगा तब मैं यहाँ
आऊँगा और तुम्हारी इस मीनार को गिरा दूँगा।”

10 जेबह, सल्मुन्ना और उसकी सेनाएं कक्ोर नगर में थीं।
उसकी सेना में पन्द्रह हजार सैनिक थे। पूर्व के लोगों की सारी
सेना के केवल ये ही सैनिक बचे थे। उस शक्तिशाली सेना के एक
लाख बीस हजार वीर सैनिक पहले ही मारे जा चुके थे। 11 गिदोन
और उसके सैनिकों ने खानाबदोशों के मार्ग को अपनाया। वह मार्ग
नोबह और योग्बहा नगरों के पूर्व में है। गिदोन कक्ोर नगर में
आया और उसने शत्रु पर धावा बोला। शत्रु की सेना को आक्रमण
की उम्मीद नहीं थी। 12 मिद्यानी लोगों के राजा जेबह और सल्मुन्ना
भाग गए। किन्तु गिदोन ने पीछा किया और उन राजाओं को पकड़
लिया। गिदोन और उसके लोगों ने शत्रु सेना को हरा दिया।

13 तब योआश का पुत्र गिदोन युद्ध से लौटा। गिदोन और उसके
सैनिक हेरेस दर्ा नामक दर्रे से होकर लौटे। 14 गिदोन ने सुक्कोत
के एक युवक को पकड़ा। गिदोन ने युवक से कुछ प्रश्न पूछे। युवक
ने कुछ नाम गिदोन के लिए लिखे। युवक ने सुक्कोत के प्रमुखों और
अग्रजों के नाम लिखे। उसने सतहत्तर व्यक्तियों के नाम दिये।

15 तब गिदोन सुक्कोत नगर में आया। उसने नगर के लोगों से कहा,
“जेबह और सल्मुन्ना यहाँ है। तुमने मेरा मजाक यह कहकर उड़ाया,
‘हम तुम्हारे थके सैनिकों के लिए भोजन क्यों दें। तुमने अभी तक
जेबह और सल्मुन्ना को नहीं पकड़ा है।’ ” 16 गिदोन ने सुक्कोत नगर
के अग्रजों को लिया और उन्हें दण्ड देने के लिए मरुभूमि के काँटों
और कंटीली झाड़ियों से पीटा। 17 गिदोन ने पनूएल नगर की मीनार
को भी गिरा दिया। तब उसने उन लोगों को मार डाला जो उस नगर
में रहते थे।

18 अब गिदोन ने जेबह और सल्मुन्ना से कहा, “तुमने ताबोर पर्वत
पर कुछ व्यक्तियों को मारा। वे व्यक्ति किस तरह के थे?”

जेबह और सल्मुन्ना ने उत्तर दिया, “वे व्यक्ति तुम्हारी तरह थे। उनमें से हर एक राजकुमार के समान था।”

19 गिदोन ने कहा, “वे व्यक्ति मेरे भाई और मेरी माँ के पुत्र थे। यहोवा के जीवन की शपथ, यदि तुम उन्हें नहीं मारते, तो अब मैं भी तुम्हें नहीं मारता।”

20 तब गिदोन येतेर की ओर मुड़ा। येतेर गिदोन का सबसे बड़ा पुत्र था। गिदोन ने उससे कहा, “इन राजाओं को मार डालो।” किन्तु येतेर एक लड़का ही था और डरता था। इसलिए उसने अपनी तलवार नहीं निकाली।

21 तब जेबह और सल्मुन्ना ने गिदोन से कहा, “आगो बढ़ो और स्वयं हमें मारो। तुम पुरुष हो और यह काम करने के लिये पर्याप्त बलवान हो।” इसलिए गिदोन उठा और जेबह तथा सल्मुन्ना को मार डाला। तब गिदोन ने चाँद की तरह बनी सज्जा को उनके ऊँटों की गर्दन से उतार दिया।

गिदोन एपोद बनाता है

22 इस्राएल के लोगों ने गिदोन से कहा, “तुमने हम लोगों को मिद्यानी लोगों से बचाया। इसलिए हम लोगों पर शासन करो। हम चाहते हैं कि तुम, तुम्हारे पुत्र और तुम्हारे पौत्र हम लोगों पर शासन करें।”

23 किन्तु गिदोन ने इस्राएल के लोगों से कहा, “यहोवा तुम्हारा शासक होगा न तो मैं तुम लोगों के ऊपर शासन करूँगा और न ही मेरा पुत्र तुम्हारे ऊपर शासन करेगा।”

24 इस्राएल के लोगों ने जिन्हें हराया, उनमें कुछ इश्माएली लोग थे। इश्माएली लोग सोने की कान की बालियाँ पहनते थे। इसलिए गिदोन ने इस्राएल के लोगों से कहा, “मैं चाहता हूँ कि तुम मेरे लिये यह काम करो। मैं तुम में से हर एक से यह चाहता हूँ कि तुम लोगों ने युद्ध में जो पाया उसमें से एक—एक कान की बाली हमें दो।”

25 अत: इस्राएल के लोगों ने गिदोन से कहा, “जो तुम चाहते हो
उसे हम प्रसन्नता से देंगे।” इसलिए उन्होंने भूमि पर एक अंगरखा
बिछाया। हर एक व्यक्ति ने अंगरखे पर एक कान की बाली फेंकी।
26 जब वे बालियाँ इकट्ठी करके तौली गई तो वे लगभग तैंतालीस
पौंड निकलीं। इस वजन का सम्बन्ध उन चीजों के वजन से नहीं है
जिन्हें इस्राएल के लोगों ने गिदोन को अन्य भेंटों के रूप में दिया था।
उन्होंने चाँद के आकार और आँसू की बूंद के आकार के आभूषण
भी उसे दिये और उन्होंने उसे बैंगनी रंग के चोगे भी दिये। ये वे चीजें
थीं, जिन्हें मिद्यानी लोगों के राजाओं ने पहना था। उन्होंने मिद्यानी
लोगों के राजाओं के ऊँटों की जंजीरें भी उसे दीं।
27 गिदोन ने सोने का उपयोग एपोद बनाने के लिये किया। उसने
एपोद को अपने निवास के उस नगर में रखा जिसे ओप्रा कहा जाता
था। इस्राएल के सभी लोग एपोद को पूजते थे। इस प्रकार इस्राएल
के लोग यहोवा पर विश्वास करने वाले नहीं थे—वे एपोद की पूजा
करते थे। वह एपोद एक जाल बन गया, जिसने गिदोन और उसके
परिवार से पाप करवाया।

गिदोन की मृत्यु

28 इस प्रकार मिद्यानी लोग इस्राएल के शासन में रहने के लिये
मजबूर किये गये। मिद्यानी लोगों ने अब आगे कोई कष्ट नहीं दिया।
इस प्रकार गिदोन के जीवन काल में चालीस वर्षों तक पूरे देश में
शान्ति रही।
29 योआश का पुत्र यरुब्बाल (गिदोन) अपने घर रहने गया।
30 गिदोन के अपने सत्तर पुत्र थे। इसके इतने अधिक पुत्र थे क्योंकि
उसकी अनेक पत्नियाँ थीं। 31 गिदोन की एक रखैल भी थी। जो
शकेम नगर में रहती थी। उस रखैल से भी उसे एक पुत्र था। उसने
उस पुत्र का नाम अबीमेलेक रखा।
32 इस प्रकार योआश का पुत्र गिदोन पर्याप्त बूढ़ा होने पर मरा।
गिदोन उस कब्र में दफनाया गया, जो उसके पिता योआश के
अधिकार में थी। वह कब्र ओप्रा नगर में है जहाँ अबीएजेरी लोग

रहते हैं। 33 ज्योंही गिदोन मरा त्योंही इस्राएल के लोग फिर परमेश्वर
के प्रति विश्वास रखने वाले न रहे। वे बाल का अनुसरण करने लगे।
उन्होंने बालबरीत को अपना देवता बनाया। 34 इस्राएल के लोग
यहोवा, अपने परमेश्वर को याद नहीं करते थे, यद्यपि उसने उन्हें उन
सभी शत्रुओं से बचाया जो इस्राएल के लोगों के चारों ओर रहते थे।
35 इस्राएल के लोगों न यरुब्बाल (गिदोन) के परिवार के प्रति कोई
भक्ति नहीं दिखाई, यद्यपि उसने उनके लिए बहुत से अच्छे कार्य
किये थे।

9

अबीमेलेक राजा बना

1 अबीमेलेक यरुब्बाल (गिदोन) का पुत्र था। अबीमेलेक अपने
उन मामाओं के पास गया जो शकेम नगर में रहते थे। उसने अपने
मामाओं और माँ के परिवार से कहा 2 "शकेम नगर के प्रमुखों से
यह प्रश्न पूछो: 'यरूब्बाल के सत्तर पुत्रों से आप लोगों का शासित
होना अच्छा है या किसी एक ही व्यक्ति से शासित होना? याद रखो,
मैं तुम्हारा सम्बन्धी हूँ।' "

3 अबीमेलेक के मामाओं ने शकेम के प्रमुखों से बात की और
उनसे वह प्रश्न किया। शकेम के प्रमुखों ने अबीमेलेक का अनुसरण
करने का निश्चय किया। प्रमुखों ने कहा, "आखिरकार वह हमारा
भाई है।" 4 इसलिए शकेम के प्रमुखों ने अबीमेलेक को सत्तर चाँदी
के टुकड़े दिये। वह चाँदी बालबरोत देवता के मन्दिर की थी।
अबीमेलेक ने चाँदी का उपयोग कुछ व्यक्तियों को काम पर लगाने
के लिये किया। ये व्यक्ति खूँखार और बेकार थे। वे अबीमेलेक के
पीछे, जहाँ कहीं वह गया, चलते रहे।

5 अबीमेलेक ओप्रा नगर को गया। ओप्रा उसके पिता का निवास
स्थान था। उस नगर में अबीमेलेक ने अपने सत्तर भाईयों की हत्या
कर दी। वे सत्तर भाई अबीमेलेक के पिता यरूब्बाल के पुत्र थे।

उसने सभी को एक पत्थर पर मारा* किन्तु यरुब्बाल का सबसे छोटा पुत्र अबीमेलेक से दूर छिप गया और भाग निकला। सबसे छोटे पुत्र का नाम योताम था।

6 तब शकेम नगर के सभी प्रमुख और बेतमिल्लो के महल के सदस्य एक साथ आए। वे सभी लोग उस पाषाण—स्तम्भ के निकट के बड़े पेड़ के पास इकट्ठे हुए जो शकेम नगर में था और उन्होंने अबीमेलेक को अपना राजा बनाया।

योताम की कथा

7 योताम ने सुना कि शकेम के प्रमुखों ने अबीमेलेक को राजा बना दिया है। जब उसने यह सुना तो वह गया और गरिज्जीम पर्वत की चोटी पर खड़ा हुआ। योताम ने लोगों को यह कथा चिल्लाकर सुनाई।

"शकेम के लोगों, मेरी बात सुनों और तब आपकी बात परमेश्वर सुनेगा।

8 "एक दिन पेड़ों ने अपने ऊपर शासन करने के लिए एक राजा चुनने का निर्णय किया। पेड़ों ने जैतून के पेड़ से कहा, 'तुम हमारे ऊपर राजा बनो।'

9 "किन्तु जैतून के पेड़ ने कहा, 'मनुष्य और ईश्वर मेरी प्रशंसा मेरे तेल के लिये करते हैं। क्या मैं जाकर केवल अन्य पेड़ों पर सासन करने के लिये अपना तेल बनाना बन्द कर दूँ?'

10 "तब पेड़ों ने अंजीर के पेड़ से कहा, 'आओ और हमारे राजा बनो।'

11 "किन्तु अंजीर के पेड़ ने उत्तर दिया, 'क्या मैं केवल जाकर अन्य पेड़ों पर शासन करने के लिये अपने मीठे और अच्छे फल पैदा करने बन्द करदूँ?'

---

* **9:5:** एक पत्थर पर मारा एक ही समय पर मारा।

12 “तब पेड़ों ने अंगूर की बेल से कहा, ‘आओ और हमरे राजा
बनो।’

13 “किन्तु अंगूर की बेल ने उत्तर दिया, ‘मेरी दाखमधु मनुष्य
और ईश्वर दोनों को प्रसन्न करती है। क्या मुझे केवल जाकर
पेड़ों परशासन करने के लिये अपनी दाखमधु पैदा करना बन्द
कर देना चाहिए।’

14 “अन्त में पेड़ों ने कंटीली झाड़ी से कहा, ‘आओ और हमारे
राजा बनो।’

15 “किन्तु कंटीली झाड़ी ने पेड़ों से कहा, ‘यदि तुम सचमुच
मुझे अपने ऊपर राजा बनाना चाहते हो तो आओ और मेरी छाया
में अपनी शरण बनाओ। यदि तुम ऐसा करना नहीं चाहते तो इस
कंटीली झाड़ी से आग निकलने दो, और उस आग को लबानोन
के चीड़ के पेड़ों को भी जला देने दो।’

16 “यदि आप पूरी तरह उस समय ईमानदार थे जब आप लोगों ने
अबीमेलेक को राजा बनाया, तो आप लोगों को उससे प्रसन्न होना
चाहिए। यदि आप लोगों ने यरुब्बाल और उसके परिवार के लोगों
के साथ उचित व्यवहार किया है तो, यह बहुत अच्छा है। यदि
आपने यरुब्बाल के साथ वही व्यवहार किया है जो आपको करना
चाहिये तो यही अच्छा है। 17 किन्तु तनिक सोचें कि मेरे पिता ने
आपके लिये क्या किया है? मेरे पिता आप लोगों के लिये लड़े।
उन्होंने अपने जीवन को उस समय खतरे में डाला जब उन्होंने आप
लोगों को मिद्यानी लोगों से बचाया। 18 किन्तु अब आप लोग मेरे
पिता के परिवार के विरूद्ध हो गए हैं। आप लोगों ने मेरे पिता के
सत्तर पुत्रों को एक पत्थर पर मारा है। आप लोगों ने अबीमेलेक
को शकेम का राजा बनाया है। वह मेरे पिता की दासी का पुत्र है।
आप लोगों ने अबीमेलेक को केवल इसलिए राजा बनाया है कि
वह आपका सम्बन्धी है। 19 इसलिये यदि आज आप लोग पूरी
तरह यरुब्बाल और उसके परिवार के प्रति ईमानदार रहे हैं, तब

अबीमेलेक को अपना राजा मानकर आप प्रसन्न हो सकते हैं और
वह भी आप लोगों से प्रसन्न हो सकता है। 20 किन्तु यदि आपने
उचित नहीं किया है तो, अबीमेलेक शकेम नगर के सभी प्रमुखों
और मिल्लो के महल को नष्ट कर डाले। शकेम नगर के प्रमुख भी
अबीमेलेक को नष्ट कर डाले।”
21 योताम यह सब कहने के बाद भाग खड़ा हुआ। वह भागकर
बेर नगर मं पहुँचा। योताम उस नगर मे रहता था, क्योंकि वह अपने
भाई अबीमेलेक से भयभीत था।

अबीमेलेक शकेम के विरुद्ध युद्ध करता है

22 अबीमेलेक ने इस्राएल के लोगों पर तीन वर्ष तक शासन
किया। 23-24 अबीमेलेक ने यरुब्बाल के सत्तर पुत्रों को मार डाला
था। वे अबीमेलेक के अपने भाई थे। शकेम नगर के प्रमुखों ने
उन पुत्रों को मारने में उसकी सहायता की थी। इसलिए परमेश्वर ने
अबीमेलेक और शकेम के प्रमुखों के बीच झगड़ा उत्पन्न कराया
और शकेम के प्रमुखों ने अबीमेलेक को नुकसान पहुँचाने के लिये
योजना बनाई। 25 शकेम नगर के प्रमुख अबीमेलेक को अब पसन्द
नहीं कर रहे थे। उन लोगों ने पहाड़ियों की चोटियों पर से जाने वालों
पर आक्रमण करने और उनका सब कुछ लूटने के लिये आदमियों
को रखा। अबीमेलेक ने उन आक्रमणों के बारे में पता लगाया।
26 गाल नामक एक व्यक्ति और उसके भाई शकेम नगर को आए।
गाल, एबेद नामक व्यक्ति का पुत्र था। शकेम के प्रमुखों ने गाल पर
विश्वास और उसका अनुसरण करने का निश्चय किया।
27 एक दिन शकेम के लोग अपने बागों में अंगूर तोड़ने गाए। लोगों
ने दाखमधु बनाने के लिये अगूरों को निचोड़ा और तब उन्होंने अपने
देवता के मन्दिर पर एक दावत दी। लोगों ने खाया और दाखमधु
पी। तब अबीमेलेक को अभिशाप दिया।
28 तब एबेद के पुत्र गाल ने कहा, “हम लोग शकेम के व्यक्ति हैं।
हम अबीमेलेक की आज्ञा क्यों माने? वह अपने को क्या समझता

है? यह ठीक है कि अबीमेलेक यरुब्बाल के पुत्रों में से एक है और
अबीमेलेक ने जबूल को अपना अधिकारी बनाया, यह ठीक है?
हमें अबीमेलेक की आज्ञा नहीं माननी चाहिए। हमें हमोर के लोगों
की आज्ञा माननी चाहिए। (हमोर शकेम का पिता था।) 29 यदि आप
मुझे इन लोगों का सेनापति बनाते हैं तो मैं अबीमेलेक से मुक्ति दिला
दूँगा। मैं उससे कहूँगा, 'अपनी सेना को तैयार करो और युद्ध के लिये
आओ।' "

30 जबूल शकेम नगर का प्रशासक था। जबूल ने वह सब सुना जो
एबेद के पुत्र गाल ने कहा और जबूल बहुत क्रोधित हुआ। 31 जबूल
ने अबीमेलेक के पास अरुमा नगर में दूतों को भेजा। सन्देश यह है:

"एबेद का पुत्र गाल और इस के भाई शकेम नगर में आए
हैं और तुम्हारे लिये कठिनाई उत्पन्न कर रहे हैं। गाल पूरे नगर
को तुम्हारे विरूद्ध कर रहा है। 32 इसलिए अब तुम्हें और तुम्हारे
लोगों को रात में उठाना चाहिये और नगर के बाहर खेतों में
छिपना चाहिये। 33 जब सवेरे सूरज निकले तो नगर पर आक्रमण
कर दो। जब वे लोग लड़ने के लिये बाहर आएँ तो तुम उनका
जो कर सको, करो।"

34 इसलिए अबिमेलेक और सभी सैनिक रात को उठे और नगर
को गए। वे सैनिक चार टुकड़ियों मे बँट गए। वे शकेम नगर के पास
छिप गए। 35 एबेद का पुत्र गाल बाहर निकल कर शकेम नगर के
फाटक के प्रवेश द्वार पर था। जब गाल वहाँ खड़ा था उसी समय
अबीमेलेक और उसके सैनिक अपने छिपने के स्थानों से बाहर
आए।

36 गाल ने सैनिकों को देखा। गाल ने जबूल से कहा, "ध्यान दो,
पर्वतों से लोग नीचे उतर रहे हैं।"

किन्तु जबूल ने कहा, "तुम केवल पर्वतों की परछाईयाँ देख रहे
हो। परछाईयाँ लोगों की तरह दिखाई दे रही हैं।"

37 किन्तु गाल ने फिर कहा, “ध्यान दो प्रदेश की नाभि नामक
स्थान से लोग बढ़ रहे हैं, और जादूगर के पेड़ से एक टुकड़ी आ
रही है।”† 38 तब जबूल ने उससे कहा, “अब तुम्हारी वह बड़ी—बड़ी
बातें कहाँ गई, जो तुम कहते थे, ‘अबीमेलेक कौन होता है, जिसकी
अधीनता में हम रहें?’ क्या वे वही लोग नहीं हैं जिनका तुम मजाक
उड़ाते थे? जाओ और उनसे लड़ो।”

39 इसलिए गाल शकेम के प्रमुखों को अबीमेलेक से युद्ध करने के
लिये ले गया। 40 अबीमेलेक और उसके सैनिकों ने गाल और उसके
आदमियों का पीछा किया। गाल के लोग शकेम नगर के फाटक
की ओर पीछे भागे। गाल के बहुत से लोग फाटक पर पहुँचने से
पहले मार डाले गए।

41 तब अबीमेलेक अरुमा नगर को लौट गया। जबूल ने गाल
और उसके भाईयों को शकेम नगर छोड़ने को विवश किया।

42 अगले दिन शकेम के लोग अपने खेतों में काम करने को गए।
अबीमेलेक ने उसके बारे में पता लगाया। 43 इसलिए अबीमेलेक ने
अपने सैनिकों को तीन टुकड़ियों में बाँटा। वह शकेम के लोगों
पर अचानक आक्रमण करना चाहता था। इसलिए उसने अपने
आदमियों को खेतों मे छिपाया। जब उसने लोगों को नगर से बाहर
आते देखा तो वह टूट पड़ा और उन पर आक्रमण कर दिया।
44 अबीमेलेक और उसके लोग शकेम नगर के फाटक के पास दौड़
कर आए। अन्य दो टुकड़ियाँ खेत में लोगों के पास दौड़कर गई और
उन्हें मार डाला। 45 अबीमेलेक और उसके सैनिक शकेम नगर के
साथ पूरे दिन लड़े। अबीमेलेक और उसके सैनिकों ने शकेम नगर
पर अधिकार कर लिया और उस नगर के लोगों को मार डाला।
तब अबीमेलेक ने उस नगर को ध्वस्त किया और उस ध्वंस पर
नमक फेंकवा दिया।

46 कुछ लोग शकेम की मीनार के पास रहते थे। जब उस स्थान
के लोगों ने सुना कि शकेम के साथ क्या हुआ है तब वे सबसे

† **9:37:** प्रदेश की … रही है शकेम के करीब की पहाड़ियों।

अधिक सुरक्षित उस कमरे में इकट्ठे हो गए जो एलबरीत देवता का मन्दिर था।
47 अबीमेलेक ने सुना कि शकेम की मीनार के सभी प्रमुख एक
साथ इकट्ठे हो गए हैं। 48 इसलिए अबीमेलेक और उसके सभी लोग
सलमोन पर्वत पर गए। अबीमेलेक ने एक कुल्हाड़ी ली ओर उसने कुछ शाखाएँ काटीं। उसने उन शाखाओं को अपने कंधों पर रखा। तब उसने अपने साथ के आदमियों से कहा "जल्दी करो, जो मैंने
किया है, वही करो।" 49 इसलिए उन लोगों ने शाखाएँ काटीं और
अबीमेलेक का अनुसरण किया। उन्होंने शाखाओं की ढेर एलबरीत देवता के मन्दिर के सबसे अधिक सुरक्षित कमरे के साथ लगाई। तब उन्होंने शाखाओं में आग लगा दी और कमरे में लोगों को जला दिया। इस प्रकार लगभग शकेम की मीनार के निवासी एक हजार स्त्री—पुरुष मर गए।

अबीमेलेक की मृत्यु

50 तब अबीमेलेक और उसके साथी तेबेस नगर को गए।
अबीमेलेक और उसके साथियों ने तेबेस नगर पर अधिकार कर
लिया। 51 किन्तु तेबेस नगर में एक दृढ़ मीनार थी। उस नगर के सभी
स्त्री—पुरुष और उस नगर के प्रमुख उस मीनार के पास भागकर पहुँचे। जब नगर के लोग मीनार के भीतर घुस गए तो उन्होंने अपने पीछे मीनार का दरवाजा बन्द कर दिया। तब वे मीनार की छत पर
चढ़ गए। 52 अबीमेलेक और उसके साथी मीनार के पास उस पर
आक्रमण करने के लिये पहुँचे। अबीमेलेक मीनार की दीवार तक
गया। वह मीनार को आग लगाना चाहता था। 53 जब अबीमेलेक
द्वार पर खड़ा था, उसी समय एक स्त्री ने एक चक्की का पत्थर उसके सिर पर फेंका। चक्की के पाट ने अबीमेलेक की खोपड़ी को चूर—चूर
कर डाला। 54 अबीमेलेक ने शीघ्रता से अपने उस नौकर से कहा
जो उसके शस्त्र ले चल रहा था, "अपनी तलवार निकालो और मुझे मार डालो। मैं चाहता हूँ कि तुम मुझे मार डालो जिससे लोग यह न कहें, कि 'एक स्त्री ने अबीमेलेक को मार डाला।' " इसलिए नौकर

ने अबीमेलेक में अपनी तलवार घुसेड़ दी और अबीमेलेक मर गया।
55 इस्राएल के लोगों ने देखा कि अबीमेलेक मर गया। इसलिए वे
सभी अपने घरों को लौट गए।

56 इस प्रकार परमेश्वर ने अबीमेलेक को उसके सभी किये पापों
के लिये दण्ड दिया। अबीमेलेक ने अपने सत्तर भाइयों को मारकर
अपने पिता के विरूद्ध पाप किया था। 57 परमेश्वर ने शकेम नगर के
लोगों को भी उनके द्वारा किये गए पाप का दण्ड दिया। इस प्रकार
योताम ने जो कहा, सत्य हुआ। (योताम यरुब्बाल का सबसे छोटा
पुत्र था। यरुब्बाल गिदोन था।)

10

न्यायाधीश तोला

1 अबीमेलेक के मरने के बाद इस्राएल के लोगों की रक्षा के
लिये परमेश्वर द्वारा दूसरा न्यायाधीश भेजा गया। उस व्यक्ति का
नाम तोला था। तोला पुआ नामक व्यक्ति का पुत्र था। पुआ दोदो
नामक व्यक्ति का पुत्र था। तोला इस्साकार के परिवार समूह का
था। तोला शामीर नगर में रहता था। शामीर नगर एप्रैम के पहाड़ी
प्रदेश में था। 2 तोला इस्राएल के लोगों के लिये तेईस वर्ष तक
न्यायाधीश रहा। तब तोला मर गया और शामीर नगर में दफनाया
गया।

यायाधीश याईर

3 तोला के मरने के बाद, परमेश्वर द्वार एक और न्यायाधीश भेजा
गया। उस व्यक्ति का नाम याईर था। याईर गिलाद के क्षेत्र में रहता
था। याईर इस्राएल के लोगों के लिये बाईस वर्ष तक न्यायाधीश
रहा। 4 याईर के तीस पुत्र थे। वे तीस गधों पर सवार होते थे। वे
तीस पुत्र गिलाद क्षेत्र के तीस नगरों की व्यवस्था करते थे। वे नगर
“याईर के ग्राम” आज तक कहे जाते हैं। 5 याईर मरा और कामोन
नगर मे दफनाया गया।

अम्मोनी लोग इस्राएल के लोगों के विरुद्ध लड़ते हैं

6 यहोवा ने इस्राएल के लोगों को फिर पाप करते हुए देखा। वे
बाल एवं अश्तोरेत की मूर्तियों की पूजा करते थे। वे आराम, सीदोन,
मोआब, अम्मोन और पलिश्तियों के देवताओं की पूजा करते थे।
इस्राएल के लोगों ने यहोवा को छोड़ दिया और उसकी सेवा बन्द
कर दी।

7 इसलिए यहोवा इस्राएल के लोगों पर क्रोधित हुआ। यहोवा ने
पलिश्तियों और अम्मोनियों को उन्हें पराजित करने दिया। 8 उसी
वर्ष उन लोगों ने इस्राएल के उन लोगों को नष्ट किया जो गिलाद
क्षेत्र में यरदन नदी के पूर्व रहते थे। यह वही प्रदेश है जहाँ अम्मोनी
लोग रह चुके थे। इस्राएल के वे लोग अट्ठारह वर्ष तक कष्ट भोगते
रहे। 9 तब अम्मोनी लोग यरदन नदी के पार गए। वे लोग यहूदा,
बिन्यामीन और एप्रैम लोगों के विरुद्ध लड़ने गए। अम्मोनी लोगों ने
इस्राएल के लोगों पर अनेक विपत्तियाँ ढाईं।

10 इसलिए इस्राएल के लोगों ने यहोवा को रोकर पुकारा, "हम
लोगों ने, परमेश्वर, तेरे विरुद्ध पाप किया है। हम लोगों ने अपने
परमेश्वर को छोड़ा और बाल की मूर्तियों की पूजा की।"

11 यहोवा ने इस्राएल के लोगों को उत्तर दिया, "तुम लोगों ने मुझे
तब रोकर पुकारा जब मिस्री, एमोरी, अम्मोनी तथा पलिश्ती लोगों ने
तुम पर प्रहार किये। मैंने तुम्हें इन लोगों से बचाया। 12 तुम लोग तब
चिल्लाए जब सीदोन के लोगों, अमालेकियों और मिद्यानियों ने तुम
पर प्रहार किया। मैंने उन लोगों से भी तुम्हें बचाया। 13 किन्तु तुमने
मुझको छोड़ा है। तुमने अन्य देवताओं की उपासना की है। इसलिए
मैंने तुम्हें फिर बचाने से इन्कार किया है। 14 तुम उन देवताओं की
पूजा करना पसन्द करते हो। इसलिए उनके पास सहायता के लिये
पुकारने जाओ। विपत्ति में पड़ने पर उन देवताओं को रक्षा करने
दो।"

15 किन्तु इस्राएल के लोगों ने यहोवा से कहा, "हम लोगों ने
पाप किया है। तू हम लोगों के साथ जो चाहता है, कर। किन्तु

आज हमारी रक्षा कर।”
16 तब इस्राएल के लोगों ने अपने पास के
विदेशी देवताओं को फेंक दिया। उन्होंने फिर से यहोवा की उपासना
आरम्भ की। इसलिए जब यहोवा ने उन्हें कष्ट उठाते देखा, तब वह
उनके लिए दुःखी हुआ।

यिप्तह प्रमुख चुना गया

17 अम्मोनी लोग युद्ध करने के लिये एक साथ इकट्ठे हुए, उनका
डेरा गिलाद क्षेत्र में था। इस्राएल के लोग एक साथ इकट्ठे हुए, उनका
डेरा मिस्पा नगर में था।
18 गिलाद क्षेत्र में रहने वाले लोगों के प्रमुखों
ने कहा, “अम्मोन के लोगों पर आक्रमण करने में जो व्यक्ति हमारा
नेतृत्व करेगा, वही व्यक्ति, उन सभी लोगों का प्रमुख हो जाएगा जो
गिलाद क्षेत्र में रहते हैं।”

11

1 यिप्तह गिलाद के परिवार समूह से था। वह एक शक्तिशाली
योद्धा था। किन्तु यिप्तह एक वेश्या का पुत्र था। उसका पिता गिलाद
नाम का व्यक्ति था।
2 गिलाद की पत्नी के अनेक पुत्र थे। जब वे पुत्र
बड़े हुए तो उन्होंने यिप्तह को पसन्द नहीं किया। उन पुत्रों ने यिप्तह
को अपने जन्म के नगर को छोड़ने के लिये विवश किया। उन्होंने
उससे कहा, “तुम हमारे पिता की सम्पत्ति में से कुछ भी नहीं पा
सकते। तुम दूसरी स्त्री के पुत्र हो।”
3 इसलिये यिप्तह अपने भाईयों
के कारण दूर चला गया। वह तोब प्रदेश में रहता था। तोब प्रदेश में
कुछ उपद्रवी लोग यिप्तह का अनुसरण करने लगे।

4 कुछ समय बाद अम्मोनी लोग इस्राएल के लोगों से लड़े।
5 अम्मोनी लोग इस्राएल के लोगों के विरूद्ध लड़ रहे थे। इसलिये
गिलाद प्रदेश के अग्रज(प्रमुख) यिप्तह के पास आए। वे चाहते थे
कि यिप्तह तोब प्रदेश को छोड़ दे और गिलाद प्रदेश में लौट आए।
6 प्रमुखों ने यिप्तह से कहा, “आओ, हमारे प्रमुख बनों, जिससे हम
लोग अम्मोनियों के साथ लड़ सकें।”

7 किन्तु यिप्तह ने गिलाद प्रदेश के अग्रजों (प्रमुखों) से कहा, "क्या यह सत्य नहीं कि तुम लोग मुझसे घृणा करते हो? तुम लोगों ने मुझे अपने पिता का घर छोड़ने के लिये विवश किया। अत: जब तुम विपत्ति में हो तो मेरे पास क्यों आ रहे हो।?"
8 गिलाद प्रदेश के अग्रजों ने यिप्तह से कहा, "यही कारण है जिससे हम अब तुम्हारे पास आए हैं। कृपया हम लोगों के साथ आओ और अम्मोनी लोगों के विरुद्ध लड़ो। तुम उन सभी लोगों के सेनापति होगे जो गिलाद प्रदेश में रहते हैं।"
9 तब यिप्तह ने गिलाद प्रदेश के अग्रजों से कहा, "यदि तुम लोग चाहते हो कि मैं गिलाद को लौटूँ और अम्मोनी लोगों के विरूद्ध लड़ूँ तो यह बहुत अच्छी बात है। किन्तु यदि यहोवा मुझे विजय पाने में सहायता करे तो मैं तुम्हारा नया प्रमुख बनूँगा।"
10 गिलाद प्रदेश के अग्रजों ने यिप्तह से कहा, "हम लोग जो बाते कर रहे हैं, यहोवा वह सब सुन रहा है। हम लोग यह सब करने की प्रतिज्ञा कर रहे हैं जो तुम हमें करने को कह रहे हो।"
11 अत: यिप्तह गिलाद के अग्रजों के साथ गया। उन लोगों ने यिप्तह को अपना प्रमुख तथा सेनापति बनाया। यिप्तह ने मिस्पा नगर में यहोवा के सामने अपनी सभी बातें दुहरायी।

यिप्तह अम्मोनी राजा के पास सन्देश भेजता है

12 यिप्तह ने अम्मोनी राजा के पास दूत भेजा। दूत ने राजा को यह सन्देश दिया: "अम्मोनी और इस्राएल के लोगों के बीच समस्या क्या है? तुम हमारे प्रदेश में लड़ने क्यों आए हो?"
13 अम्मोनी लोगों के राजा ने यिप्तह के दूत से कहा, "हम लोग इस्राएल के लोगों से इसलिए लड़ रहे हैं क्योंकि इस्राएल के लोगों ने हमारी भूमि तब ले ली जब वे मिस्र से आए थे। उन्होंने हमारी भूमि अर्नोन नदी से यब्बोक नदी और वहाँ से यरदन नदी तक ले ली और अब इस्राएल के लोगों से कहो कि वे हमारी भूमि हमें शान्तिपूर्वक वापस दे दें।"

14 अत: यिप्तह का दूत यह सन्देश यिप्तह के पास वापस ले गया।*
तब यिप्तह ने अम्मोनी लोगों के राजा के पास फिर दूत भेजे। 15 वे
यह सन्देश ले गएः

“यप्तह यह कह रहा है। इस्राएल ने मोआब के लोगों या अम्मोन
के लोगों की भूमि नहीं ली। 16 जब इस्राएल के लोग मिस्र देश से
बाहर आए तो इस्राएल के लोग मरुभूमि में गए थे। इस्राएल के
लोग लाल सागर को गए। तब वे उस स्थान पर गए जिसे कादेश
कहा जाता है। 17 इस्राएल के लोगों ने एदोम प्रदेश के राजा के
पास दूत भेजे थे।। दूतों ने कृपा की याचना की थी। उन्होंने कहा
था, ‘इस्राएल के लोगों को अपने प्रदेश से गुजर जाने दो।’ किन्तु
एदोम के राजा ने अपने देश से हमें नहीं जाने दिया। हम लोगों
ने वही सन्देश मोआब के राजा के पास भेजा। किन्तु मोआब
के राजा ने भी अपने प्रदेश से होकर नहीं जाने दिया। इसलिए
इस्राएल के लोग कादेश में ठहरे रहे।

18 “तब इस्राएल के लोग मरूभूमि में गए और एदोम प्रदेश
तथा मोआब प्रदेश की छोरों के चारों ओर चक्कर काटते रहे।
इस्राएल के लोगों ने मोआब प्रदेश के पूर्व की तरफ से यात्रा की
। उन्होंने अपना डेरा अर्नोन नदी की दूसरी ओर डाला। उन्होंने
मोआब की सीमा को पार नहीं किया। (अर्नोन नदी मोआब के
प्रदेश की सीमा थी।)

19 “तब इस्राएल के लोगों ने एमोरी लोगों के राजा सीहोन के
पास दूत भेजे। सीहोन हेश्बोन नगर का राजा था। दूतों ने सीहोन
से माँग की, ‘इस्राएल के लोगों को अपने प्रदेश से गुजर जाने दो।
हम लोग अपने प्रदेश में जाना चाहते हैं। 20 किन्तु एमोरी लोगों के
राजा सीहोन ने इस्राएल के लोगों को अपनी सीमा पार नहीं करने
दी। सीहोन ने अपने सभी लोगों को इकट्ठा किया और यहस पर

* **11:14:** अत: यिप्तह … गया यह वाक्य प्राचीन यूनानी अनुवाद से हैं। हिब्रू पाठ में यह वाक्य नहीं है।

अपना डेरा डाला। तब एमोरी लोग इस्राएल के लोगों के साथ
लड़े। 21 किन्तु यहोवा इस्राएल के लोगों का परमेश्वर ने, इस्राएल
के लोगों की सहायता, सीहोन और उसकी सेना को हराने में की।
एमोरी लोगों की सारी भूमि इस्राएल के लोगों की सम्पत्ति बन
गई। 22 इस प्रकार इस्राएल के लोगों ने एमोरी लोगों का सारा
प्रदेश पाया। यह प्रदेश अर्नोन नदी से यब्बोक नदी तक था। यह
प्रदेश मरुभूमि से यरदन नदी तक था।

23 "यह यहोवा, इस्राएल का परमेश्वर था जिसने एमोरी लोगों
को अपना देश छोड़ने के लिये बलपूर्वक विवश किया और
यहोवा ने वह प्रदेश इस्राएल के लोगों को दिया। क्या तुम सोचते
हो कि तुम इस्राएल के लोगों से यह छुड़वा दोगे? 24 निश्चय ही,
तुम उस प्रदेश में रह सकते हो जिसे तुम्हारे देवता कमोश ने
तुम्हें दिया है। इसलिए हम लोग उस प्रदेश में रहेंगे, जिसे यहोवा,
हमारे परमेश्वर ने हमें दिया है। 25 क्या तुम सिप्पोर नामक व्यक्ति
के पुत्र बालाक से अधिक अच्छे हो? वह मोआब प्रदेश का
राजा था। क्या उसने इस्राएल के लोगों से बहस की? क्या वह
सचमुच इस्राएल के लोगों से लड़ा? 26 इस्राएल के लोग हेश्बोन
और उसके चारों ओर के नगरों में तीन सौ वर्ष तक रह चुके हैं।
इस्राएल के लोग अरोएर नगर और उसके चारों ओर के नगर में
तीन सौ वर्ष तक रह चुके हैं। इस्राएल के लोग अर्नोन नदी के
किनारे के सभी नगरों में तीन सौ वर्ष तक रह चुके हैं। तुमने इस
समय में, इन नगरों को वापस लेने का प्रयत्न क्यों नहीं किया?
27 इस्राएल के लोगों ने किसी के विरुद्ध कोई पाप नहीं किया
है। किन्तु तुम इस्राएल के लोगों के विरुद्ध बहुत बड़ी बुराई कर
रहे हो। यहोवा को, जो सच्चा न्यायाधीश है, निश्चय करने दो कि
इस्राएल के लोग ठीक रास्ते पर हैं या अम्मोनी लोग।"

28 अम्मोनी लोगों के राजा ने यिप्तह के इस सन्देश को अनसुना
किया।

यिप्तह की प्रतिज्ञा

29 तब यहोवा की आत्मा यिप्तह पर उतरी। यिप्तह गिलाद प्रदेश
और मनश्शे के प्रदेश से गुज़रा। वह गिलाद प्रदेश में मिस्पे नगर
को गया। गिलाद प्रदेश के मिस्पे नगर को पार करता हुआ यिप्तह,
अम्मोनी लोगों के प्रदेश में गया।
30 यिप्तह ने यहोवा को वचन दिया। उसने कहा, "यदि तू एमोरी
लोगों को मुझे हराने देता है। 31 तो मैं उस पहली चीज़ को तुझे भेंट
करूँगा जो मेरी विजय से लौटने के समय मेरे घर से बाहर आएगी।
मैं इसे यहोवा को होमबलि के रूप में दूँगा।"
32 तब यिप्तह अम्मोनी लोगों के प्रदेश में गया। यिप्तह अम्मोनी
लोगों से लड़ा। यहोवा ने अम्मोनी लोगों को हराने में उसकी
सहायता की। 33 उसने उनहें अरोएर नगर से मिन्नीत के क्षेत्र
की छोर तक हराया। यिप्तह ने बीस नगरों पर अधिकार किया।
उसने अम्मोनी लोगों से आबेलकरामीम नगर तक युद्ध किया। यह
अम्मोनी लोगों के लिये बड़ी हार थी। अम्मोनी लोग इस्राएल के
लोगों द्वारा हरा दिये गए।
34 यिप्तह मिस्पा को लौटा और अपने घर गया। उसकी पुत्री उससे
घर से बाहर मिलने आई। वह एक तम्बूरा बजा रही थी और नाच
रही थी। वह उसकी एकलौती पुत्री थी। यिप्तह उस बहुत प्यार
करता था। यिप्तह के पास कोई अन्य पुत्री या पुत्र नहीं थे। 35 जब
यिप्तह ने देखा कि पहली चीज़ उसकी पुत्री ही थी, जो उसके घर
से बाहर आई तब उसने दुःख को अभिव्यक्त करने के लिये अपने
वस्त्र फाड़ डाले और यह कहा, "आह! मेरी बेटी तूने मुझे बरबाद
कर दिया। तूने मुझे बहुत दुःखी कर दिया! मैंने यहोवा को वचन
दिया था, मैं उसे वापस नहीं ले सकता।"
36 तब उसकी पुत्री ने यिप्तह से कहा, "पिता, आपने यहोवा से
प्रतिज्ञा की है। अत: वही करें जो आपने करने की प्रतिज्ञा की
है। अन्त में यहोवा ने आपके शत्रुओं अम्मोनी लोगों को हराने में
सहायता की।"

37 तब उसकी पुत्री ने अपने पिता यिप्तह से कहा, “किन्तु मेरे
लिये पहले एक काम करो। दो महीने तक मुझे अकेली रहने दो।
मुझे पहाड़ों पर जाने दो। मैं विवाह नहीं करूँगी, मेरा कोई बच्चा नहीं
होगा। अत: मुझे और मेरी सहेलियों को एक साथ रोन चिल्लाने दो।”
38 यित्पह ने कहा, “जाओ और वैसा ही करो,” यिप्तह ने उस
दो महीने के लिये भेज दिया। यिप्तह की पुत्री और उसकी सहेलियाँ
पहाड़ों में रहे। वे उसके लिए रोये—चिल्लाये, क्योंकि वह न तो विवाह
करेगी और न ही बच्चे उत्पन्न करेगी।
39 दो महीने के बाद यिप्तह की पुत्री अपने पिता के पास लौटी।
यिप्तह ने वही किया जो उसने यहोवा से प्रतिज्ञा की थी। यिप्तह की
पुत्री का कभी किसी के साथ कोई शारीरिक सम्बन्ध नहीं रहा।
इसलिए इस्राएल में यह रिवाज बन गया। 40 इस्राएल की स्त्रियाँ हर
वर्ष गिलाद के यिप्तह की पुत्री को याद करती थीं। स्त्रियाँ यिप्तह की
पुत्री के लिये हर एक वर्ष चार दिन तक रोती थीं।

12

यिप्तह और एप्रैम

1 एप्रैम के परिवार समूह के लोगों ने अपने सैनिकों को इकट्ठा
किया। तब वे नदी पार करके सापोन नगर गए। उन्होंने यिप्तह से
कहा, “तुमने अम्मोनी लोगों से लड़ने में सहायता के लिये हमें क्यों
नहीं बुलाया? हम लोग तुमको और तुम्हारे घर को जला देंगे।”
2 यिप्तह ने उन्हें उत्तर दिया, “अम्मोनी लोग हम लोगों के लिये
अनेक समस्यायें उत्पन्न कर रहे थे। इसलिए मैं और हमारे लोग
उनके विरुद्ध लड़े। मैंने तुम लोगों को बुलाया, किन्तु तुम लोग
हम लोगों की सहायता करने नहीं आए। 3 मैंने देखा कि तुम लोग
सहायता नहीं करोगे। इसलिए मैंने अपना जीवन खतरे में डाला। मैं
अम्मोनी लोगों से लड़ने के लिये नदी के पार गया। यहोवा ने उन्हें
हराने में मेरी सहायता की। अब आज तुम मेरे विरुद्ध लड़ने क्यों
आए हो?”

4 तब यिप्तह ने गिलाद के लोगों को एक साथ बुलाया। वे एप्रैम
के लोगों के विरुद्ध इसलिए लड़े, क्योंकि उन लोगों ने गिलाद के
लोगों का अपमान किया था। उन्होंने कहा था, "गिलाद के लोगों,
तुम लोग एप्रैम के बचे हुए लोगों के अतिरिक्त अन्य कुछ नहीं हो।
तुम लोगों के पास अपना प्रदेश भी नहीं है। तुम लोगों का एक भाग
एप्रैम में से है तथा दूसरा भाग मनश्शे में से है।" गिलाद के लोगों ने
एप्रैम के लोगों को हराया।
5 गिलाद के लोगों ने यरदन नदी के घाटों पर अधिकार कर
लिया। वे घाट एप्रैम प्रदेश तक ले जाते थे। एप्रैम में से बचा हुआ
जो कोई भी नदी पर आता, वह कहता, "मुझे पार करने दो" तो
गिलाद के लोग उससे पूछते, "क्या तुम एप्रैम में से हो?" यति वह
"नहीं" कहता तो, 6 वे कहते, " 'शिब्बोलेत' शब्द का उच्चारण करो।"
एप्रैम के लोग उस शब्द का शुद्ध उच्चारण नहीं कर सकते थे। वे उसे
"सिब्बोलेत" शब्द उच्चारण करते थे। यदि एप्रैम में से बचा व्यक्ति
"सिब्बोलेत" शब्द का उच्चारण करता तो गिलाद के लोग उसे घाट
पर मार देते थे। इस प्रकार उस समय एप्रैम में से बयालीस हजार
व्यक्ति मारे गए थे।
7 यिप्तह इस्राएल के लोगों का न्यायाधीश छ: वर्ष तक रहा। तब
गिलाद का निवासी यिप्तह मर गया। उसे गिलाद में उसके अपने
नगर में दफनाया गया।

न्यायाधीश इबसान

8 यिप्तह के मरने के बाद इस्राएल के लोगों का न्यायाधीश
इबसान नामक व्यक्ति हुआ। इबसान बेतलेहेम नगर का निवासी
था। 9 इबसान के तीस पुत्र और तीस पुत्रियाँ थीं। उसने अपनी
पुत्रियों को उन लोगों के साथ विवाह करने दिया, जो उसके रिश्तेदार
नहीं थे। वह ऐसी तीस स्त्रियों को अपने पुत्रों की पत्नियों के रूप
में लाया जो उसकी रिश्तेदार नहीं थीं। इबसान इस्राएल के लोगों
का न्यायाधीश सात वर्ष तक रहा। 10 तब इबसान मर गया। वह
बेतलेहेम नगर में दफनाया गया।

न्यायाधीश एलोन

11 इबसान के मरने के बाद इस्राएल के लोगों का न्यायाधीश
एलोन नामक व्यक्ति हुआ। एलोन जबूलून के परिवार समूह से था।
वह इस्राएल के लोगों का न्यायाधीश दस वर्ष तक रहा। 12 तब
जबूलून के परिवार समूह का व्यक्ति एलोन मर गया। वह जबूलून
के प्रदेश में अय्यालोन नगर में दफनाया गया।

न्यायाधीश अब्दोन

13 एलोन के मरने के बाद इस्राएल के लोगों का न्यायाधीश
अब्दोन नामक व्यक्ति हुआ। अब्दोन हिल्लेल नामक व्यक्ति का पुत्र
था। अब्दोन पिरातोन नगर का निवासी था। 14 अब्दोन के चालीस
पुत्र और तीस पौत्र थे। वे सत्तर गधों पर सवार होते थे। अब्दोन
इस्राएल के लोगों का न्यायाधीश आठ वर्ष तक रहा। 15 तब हिल्लेल
का पुत्र अब्दोन मर गया। वह पिरातोन नगर में दफनाया गया।
पिरातोन एप्रैम प्रदेश में है। यह वह पहाड़ी प्रदेश है जहाँ अमालेकी
लोग रहते हैं।

13

शिमशोन का जन्म

1 यहोवा ने इस्राएल के लोगों को फिर पाप करते हुए देखा।
इसलिए यहोवा ने पलिश्ती लोगों को उन पर चालीस वर्ष तक
शासन करने दिया।

2 एक व्यक्ति सोरा नगर का निवासी था। उस व्यक्ति का नाम
मानोह था। वह दान के परिवार समूह से था। मानोह की एक पत्नी
थी। किन्तु वह कोई सन्तान उत्पन्न नहीं कर सकती थी। 3 यहोवा
का दूत मानोह की पत्नी के सामने प्रकट हुआ और उसने कहा, "तुम
सन्तान उत्पन्न नहीं कर सकती हो। किन्तु तुम गर्भवती होगी और
तुम्हें एक पुत्र होगा। 4 तुम दाखमधु या कोई नशीली पीने की चीज
न पीओ। किसी भी अशुद्ध जानवर को न खाओ। 5 क्यों? क्योंकि
तुम सचमुच गर्भवती होगी और तुम्हें एक पुत्र होगा। वह विशेश

रूप से परमेश्वर के प्रति एक विशेष रूप में समर्पित होगा। वह एक नाज़ीर होगा। इसलिए तुम्हें उसके बाल कभी नहीं काटने चाहिये। वह पैदा होने से पहले परमेश्वर का व्यक्ति होगा। वह इस्राएल के लोगों को पलिश्ती लोगों की शक्ति से मुक्त करायेगा।"

6 तब वह स्त्री अपने पति के पास गई और जो कुछ हुआ था,
बताया। उसने कहा, "परमेश्वर के पास से एक व्यक्ति मेरे पास
आया। वह परमेश्वर के दूत की तरह ज्ञात होता था। वह बहुत
भयानक दिखाई पड़ता था और मैं डर गई थी। मैंने उससे यह नहीं
पूछा कि, तुम कहाँ से आये हो। उसने मुझे अपना नाम नहीं बताया।
7 किन्तु उसने मुझसे कहा, 'तुम गर्भवती हो और तुम्हें एक पुत्र
होगा। कोई दाखमधु या नशीली पीने की चीज़ मत पीओ। कोई
ऐसा जानवर न खाओ जो अशुद्ध हो, क्योंकि वह लड़का विशेष
रूप से परमेश्वर को समर्पित होगा। वह लड़का जन्म के पहले से
लेकर मरने के दिन तक परमेश्वर का विशेष व्यक्ति होगा।' "

8 तब मानोह ने यहोवा से प्रार्थना की, "हे यहोवा, मैं तुझसे प्रार्थना
करता हूँ कि तू परमेश्वर के व्यक्ति को हम लोगों के पास फिर भेज।
हम चाहते हैं कि वह हमें सिखाए कि हम लोगों के यहाँ जन्म लेने
वाले बच्चे के साथ हमें क्या करना चाहिए।"

9 परमेश्वर ने मानोह की प्रार्थना सुनी। परमेश्वर का दूत फिर उस
स्त्री के पास, तब आया जब वह खेत में बैठी थी। किन्तु उसका
पति मानोह उसके साथ नहीं था। 10 इसलिए वह स्त्री अपने पति
से यह कहने के लिये दौड़ी, "वह व्यक्ति लौटा है। पिछले दिन जो
व्यक्ति मेरे पास आया था, वह यहाँ है।"

11 मानोह उठा और अपनी पत्नी के पीछे चला। जब वह उस
व्यक्ति के पास पहुँचा तो उसने कहा, "क्या तुम वही व्यक्ति हो
जिसने मेरी पत्नी से बातें की थीं?"

दूत ने कहा, "मैं ही हूँ।"

12 अत: मानोह ने कहा, “मुझे आशा है कि जो तुम कहते हो वह
होगा। यह बताओ कि वह लड़का कैसा जीवन बिताएगा? वह क्या
करेगा?”
13 यहोवा के दूत ने मानोह से कहा, “तुम्हारी पत्नी को वह सब
करना चाहिए, जो मैंने उसे करने को कहा है। 14 उसे अंगूर की
बेल पर उगी कोई चीज़ नहीं खानी चाहिए। उसे दाखमधु या कोई
नशीली पीने की चीज़ नहीं पीनी चाहिए। उसे किसी ऐसे जानवर
को नहीं खाना चाहिए जो अशुद्ध हो। उसे वह सब करना चाहिए,
जो करने का आदेश मैंने उसे दिया है।”
15 तब मानोह ने यहोवा के दूत से कहा, “हम यह चाहते हैं कि तुम
थोड़ी देर और रुको। हम लोग तुम्हारे भोजन के लिये नया बकरा
पकाना चाहते हैं।”
16 तब यहोवा के दूत ने मानोह से कहा, “यदि तुम यहाँ से जाने
से मुझे रोकोगे तो भी मैं तुम्हारा भोजन ग्रहण नहीं करूँगा। किन्तु
यदि तुम कुछ तैयार करना चाहते हो तो यहोवा को होमबलि दो।”
(मानोह ने नहीं समझा कि वह व्यक्ति सचमुच यहोवा का दूत था।)
17 तब मानोह ने यहोवा के दूत से पूछा, “तुम्हारा नाम क्या है?
हम लोग इसलिए जानना चाहते हैं कि हम तुम्हारा सम्मान तब कर
सकेंगे, जब वह सचमुच होगा जो तुम कह रहे हो।”
18 यहोवा के दूत ने कहा, “तुम मेरा नाम क्यों पूछते हो? यह
इतना आश्चर्यजनक है कि तुम विश्वास नहीं कर सकते।”*
19 तब मानोह ने चट्टान पर एक बकरे की बलि दी। उसने यहोवा
तथा उस व्यक्ति को, कुछ अन्न भी भेंट के रूप में दिया, जो अद्भुत
चीज़ें करता है। 20 मानोह और उसकी पत्नी उसे ध्यान से देख रहे
थे, जो हो रहा था। जैसे ही लपटें वेदी से आकाश तक उठीं, वैसे
ही यहोवा का दूत अग्नि में आकाश को चला गया।

---

* **13:18:** यह इतना ... कर सकते या “यह पेलेई है। जिसका अर्थ आश्चर्यजनक और अद्भुत है।” यह नाम यशा 9:6 में अद्भुत युक्ति करने वाले की तरह हैं।

जब मानोह और उसकी पत्नी ने यह देखा तो वे धरती पर गिर
गए। उन्होंने अपने सिर को धरती से लगाया। 21 मानोह अन्त में
समझा कि वह व्यक्ति सचमुच यहोवा का दूत था। यहोवा का दूत
फिर मानोह के सामने प्रकट नहीं हुआ। 22 मानोह ने कहा, “हम
लोगों ने परमेश्वर को देखा है। निश्चय ही इस कारण से हम लोग
मरेंगे।”

23 लेकिन उसकी पत्नी ने उससे कहा, “यहोवा हम लोगों को
मारना नहीं चाहता। यदि यहोवा हम लोगों को मारना चाहता तो
वह हम लोगों की होमबलि और अन्नबलि स्वीकार न करता। उसने
हम लोगों को वह सब न दिखाया होता, और वह हम लोगों से ये
बातें न कहा होता।”

24 अत: स्त्री को एक पुत्र हुआ। उसने उसका नाम शिमशोन रखा।
शिमशोन बड़ा हुआ और योहवा ने उस आशीर्वाद दिया। 25 यहोवा
का तेज शिमशोन में तभी कार्यशील हो गया जब वह महनेदान नगर
में था। वह नगर सोरा और एशताओल नगरों के मध्य है।

14

शिमशोन का विवाह

1 शिमशोन तिम्ना नगर को गया। उसने वहाँ एक पलिश्ती युवती
को देखा। 2 जब वह वापस लौटा तो उसने अपने माता पिता से
कहा, “मैंने एक पलिश्ती लड़की को तिम्ना में देखा है। मैं चाहता हूँ
तुम उसे मेरे लिये लाओ। मैं उससे विवाह करना चाहता हूँ।”

3 उसके पिता और माता ने उत्तर दिया, “किन्तु इस्राएल के लोगों
में से एक लड़की है जिससे तुम विवाह कर सकते हो। क्या तुम
पलिश्ती लोगों में से एक लड़की से विवाह करोगे? उन लोगों का
खतना भी नहीं होता।”

किन्तु शिमशोन ने कहा, “मेरे लिये वही लड़की लाओ। मैं उसे ही
चाहता हूँ।” 4 (शिमशोन के माता पिता नहीं समझते थे कि यहोवा
ऐसा ही होने देना चाहता है। यहोवा कोई रास्ता ढूँढ रहा था, जिससे

वह पलिश्ती लोगों के विरुद्ध कुछ कर सके। उस समय पलिश्ती लोग इस्राएल के लोगों पर शासन कर रहे थे।)

5 शिमशोन अपने माता—पिता के साथ तिम्ना नगर को गया। वे नगर के निकट अंगूर के खेतों तक गए। उस स्थान पर एक जवान
सिंह गरज उठा और शिमशोन पर कूदा। 6 यहोवा की आत्मा बड़ी
शक्ति से शिमशोन पर उतरी। उसने अपने खाली हाथों से ही सिंह को चीर डाला। यह उसके लिये सरल मालूम हुआ। यह वैसा सरल हुआ जैसा एक बकरी बच्चे को चीरना। किन्तु शिमशोन ने अपने माता पिता को नहीं बताया कि उसने क्या किया है।

7 इसलिए शिमशोन नगर में गया और उसने पलिश्ती लड़की से
बातें की। उसने उसे प्रसन्न किया। 8 कई दिन बाद शिमशोन उस
पलिश्ती लड़की के साथ विवाह करने के लिये वापस आया। आते समय रास्ते में वह मरे सिंह को देखने गया। उसने मरे सिंह के शरीर में मधुमक्खियों का एक छत्ता पाया। उन्होंने कुछ शहद तैयार कर
लिया था। 9 शिमशोन ने अपने हाथ से कुछ शहद निकाला। वह
शहद चाटता हुआ रास्ते पर चल पड़ा। जब वह अपने मात—पिता के पास आया तो उसने उन्हें कुछ शहद दिया। उन्होंने भी उसे खाया किन्तु शिमशोन ने अपने माता—पिता को नहीं बताया कि उसने मरे सिंह के शरीर से शहद लिया है।

10 शिमशोन का पिता पलिश्ती लड़की को देखने गया। दूल्हे के लिये यह रिवाज था कि उसे एक दावत देनी होती थी। इसलिए
शिमशोन ने दावत दी। 11 जब लोगों ने देखा कि वह एक दावत दे
रहा है तो उन्होंने उसके साथ तीस व्यक्ति भेजे।

12 तब शिमशोन ने उन तीस व्यक्तियों से कहा, “मैं तुम्हें एक पहेली सुनाना चाहता हूँ। यह दावत सात दिन तक चलेगी। उस समय उत्तर ढूँढने की कोशिश करना। यदि तुम पहेली का उत्तर उस समय के अन्दर दे सके तो मैं तुम्हें तीस सूती कमीज़ें, तीस वस्त्रों
के जोड़े दूँगा। 13 किन्तु यदि तुम इसका उत्तर न निकाल सके तो
तुम्हें तीस सूती कमीज़ें और तीस जोड़े वस्त्र मुझे देने होंगे।” अत:

तीस व्यक्तियों ने कहा, “पहले अपनी पहेली सुनाओ, हम इसे सुनना चाहते हैं।”

14 शिमशोन ने यह पहेली सुनाईः

खाने वाले में से खाद्य वस्तु।
    और शक्तिशाली में से मधुर वस्तु निकली।

अत: तीस व्यक्तियों ने तीन दिन तक इसका उत्तर ढूँढने का प्रयत्न किया, किन्तु वे कोई उत्तर न पा सके।

15 चौथे दिन* वे व्यक्ति शिमशोन की पत्नी के पास आए। उन्हों
ने कहा, “क्या तुमने हमें गरीब बनाने के लिये यहाँ बुलाया है? तुम अपने पति को, हम लोगों को पहेली का उत्तर देने के लिये फुसलाओ। यदी तुम हम लोगों के लिये उत्तर नहीं निकालती तो हम लोग तुम्हें और तुम्हारे पिता के घर में रहने वाले सभी लोगों को जला देंगे।”

16 इसलिए शिमशोन की पत्नी उसके पास गई और रोने—चिल्लाने
लगी। उसने कहा, “तुम मुझसे घृणा करते हो। तुम मुझसे सच्चा प्रेम नहीं करते हो। तुमने मेरे लोगों को एक पहेली सुनाई है और तुम उसका उत्तर मुझे नहीं बता सकते।”

17 शिमशोन की पत्नी दावत के शेष सात दिन तक रोती चिल्लाती
रही। अत: अन्त में उसने सातवें दिन पहेली का उत्तर उसे दे दिया। उसने बता दिया क्योंकि वह उसे बराबर परेशान कर रही थी। तब वह अपने लोगों के बीच गई और उन्हें पहेली का उत्तर दे दिया।

18 इस प्रकार दावत वाले सातवें दिन सूरज के डूबने से पहले
पलिश्ती लोगों के पसा पहेली का उत्तर था। वे शिमशोन के पास आए और उन्होंने कहा,

“शहद से मीठा क्या है?

* **14:15:** चौथे दिन यह ग्रीक अनुवाद में है। हिब्रू पाठ कहता है “सातवें दिन।”

सिंह से अधिक शक्तिशाशी कौन है?"

तब शिमशोन ने उनसे कहा,

"यदि तुम ने मेरी गाय को न जोता होता तो,
मेरी पहेली का हल नहीं निकाल पाए होते!"

19 शिमशोन बहुत क्रोधित हुआ। यहोवा की आत्मा उसके ऊपर
बड़ी शक्ति के साथ आई। वह आश्कलोन नगर को गया। उस नगर
में उसने उनके दीस व्यक्तियों को मारा। तब उसने सारे वस्त्र और
शवों से सारी सम्पत्ति ली। वह उन वस्त्रों को लेकर लौटा और
उन व्यक्तियों को दिया, जिन्होने पहली का उत्तर दिया था। तब वह
अपने पिता के घर लौटा। 20 शिमशोन अपनी पत्नी को नहीं ले गया।
विवाह समारोह में उपस्थित सबसे अच्छे व्यक्ति ने उसे रख लिया।

15

शिमशोन पलिश्तियों के लिये विपत्ति उत्पन्न करता है

1 गेहूँ की फसल तैयार होने के समय शिमशोन अपनी पत्नी से
मिलने गया। वह अपने साथ एक जवान बकरा ले गया। उसने कहा,
"मै अपनी पत्नी के कमरे में जा रहा हूँ।"

किन्तु उसका पिता उसे अन्दर जाने देना नहीं चाहता था। 2 उसके
पिता ने शिमशोन से कहा, "मैंने सोचा कि तुम सचमुच अपनी पत्नी
से घृणा करते हो अत: विवाह में सम्मिलित सबसे अच्छे व्यक्ति को
मैंने उसे पत्नी के रुप में दे दिया। उसकी छोटी बहन उससे अधिक
सुन्दर है। उसकी छोटी बहन को ले लो।"

3 किन्तु शिमशोन ने उससे कहा, "तुम पलिश्ती लोगों पर प्रहार
करने का मेरे पास अब उचित कारण है। अब कोई मुझे दोषी नहीं
बताएगा।"

4 इसलिए शिमशोन बाहर निकला और तीन सौ लोमड़ियों को
पकड़ा। उसने दो लोमड़ियों को एक बार एक साथ लिया और

उनका जोड़ा बनाने के लिये उनकी पूँछ एक साथ बाँध दी। तब
उसने लोमड़ियों के हर जोड़ों की पूँछो के बीच एक–एक मशाल
बाँधी। 5 शिमशोन ने लोमड़ियों की पूँछ के बीच के मशालों को
जलाया। तब उसने पलिश्ती लोगों के खेतों में लोमड़ियों को छोड़
दिया। इस प्रकार उसने उनकी खड़ी फसलों और उनकी कटी ढेरों
को जला दिया। उसने उनके अंगूर के खेतों और जैतून के पेड़ों को
भी जला डाला।

6 पलिश्ती लोगों ने पूछा, "यह किसने किया?"

किसी ने उनसे कहा, "तिम्ना के व्यक्ति के दामाद शिमशोन ने यह किया है। उसने यह इसलिए किया कि उसके ससुर ने शिमशोन की पत्नी को उसके विवाह के समय उपस्थित सबसे अच्छे व्यक्ति को दे दी।" अत: पलिश्ती लोगों ने शिमशोन की पत्नी और उसके ससुर को जलाकर मार डाला।

7 तब शिमशोन ने पलिश्ती के लोगों से कहा, "तुम लोगों ने यह बुरा किया अतः मैं तुम लोगों पर भी प्रहार करूँगा। मैं तब तक तुम लोगों पर विपत्ति ढाता रहूँगा जब तक मैं विपत्ति ढा सकूँगा।"

8 तब शिमशोन ने पलिश्ती लोगों पर आक्रमण किया। उसने उनमें से बहुतों को मार डाला। तब वह गया और एक गुफा में ठहरा। वह गुफा एताम की चट्टान नामक स्थान पर थी।

9 तब पलिश्ती लोग यहूदा के प्रदेश में गये। वे लही नामक
स्था पर रुके। उनकी सेना ने वहाँ डेरा डाला और युद्ध के लिये
तैयारी की। 10 यहूदा परिवार समूह के लोगों ने उनसे पूछा, "तुम
पलिश्तियों, हम लोगों से युद्ध करने क्यों आए हो?"

उन्होंने उत्तर दिया, "हम लोग शिमशोन को पकड़ने आए हैं। हम लोग उसे अपना बन्दी बनाना चाहते हैं। हम लोग उसे उसका बदला चुकाना चाहते हैं जो उसने हमारे लोगों के साथ किया है।"

11 तब यहूदा के परिवार समूह के तीन हज़ार व्यक्ति शिमशोन के पास गये। वे एताम की चट्टान की गुफा में गए। उन्होंने उससे कहा,

"तुमने हम लोगों के लिए क्या विपत्ती खड़ी कर दी है? क्या तुम्हें पता नहीं है कि पलिश्ती लोग वे लोग हैं जो हम पर शासन करते हैं?"

शिमशोन ने उत्तर दिया, "उन्होंने मेरे साथ जो किया उसका मैने केवल बदला दिया।"

12 तब उन्होंने शिमशोन से कहा, "हम तुम्हें बन्दी बनाने आए हैं। हम लोग तुम्हें पलिश्ती लोगों को दे देंगे।"

शिमशोन ने यहूदा के लोगों से कहा, "प्रतिज्ञा करो कि तुम लोग स्वयं मुझ पर प्रहार नहीं करोगे।"

13 तब यहूदा के व्यक्तियों ने कहा, "हम स्वीकार करते हैं। हम लोग केवल तुमको बांधेंगे और तुम्हें पलिश्ती लोगों को दे देंगे। हम प्रतिज्ञा करते हैं कि हम तुमको जान से नहीं मारेंगे।" अत: उन्होंने शिमशोन को दो नयी रस्सियों से बांधा। वे उसे चट्टान की गुफा से बाहर ले गए।

14 जब शिमशोन लही नामक स्थान पर पहुँचा तो पलिश्ती लोग
उससे मिलने आए। वे प्रसन्नता से शोर मचा रहे थे। तब यहोवा की
आत्मा बड़ी शक्ति से शिमशोन में आई। उसके ऊपर की रस्सियाँ
ऐसी कमज़ोर हो गई जैसे मानो वे जल गई हों। रस्सियाँ उसके हाथों
से ऐसे गिरीं मानो वे गल गई हो। 15 शिमशोन को उस गधे के जबड़े
की हड्डी मिली जो मरा पड़ा था। उसने जबड़े की हड्डी ली और उससे
एक हज़ार पलिश्ती लोगों को मार डाला।

16 तब शिमशोन ने कहा,

एक गधे के जबड़े की हड्डी से मैंने ढेर किया है
उनका—एक बहुत ऊँचा ढेर।
एक गधे के जबड़े की हड्डी से मैंने मार डाला है
हज़ार व्यक्तियों को!

[17] जब शिमशोन ने बोलना समाप्त किया तब उसने जबड़े की हड्डी
को फेंक दिया। इसलिए उस स्थान का नाम रामत लही पड़ा।

[18] शिमशोन को बहुत प्यास लगी थी। इसलिए उसने यहोवा को
पुकारा। उसने कहा, "मैं तेरा सेवक हूँ। तूने मुझे यह बड़ी विजय
दी है। क्या अब मुझे प्यास से मरना पड़ेगा? क्या मुझे उनसे पकड़ा
जाना होगा जिनका खतना नहीं हुआ है?"

[19] लही में भूमि के अन्दर एक गका है। परमेंश्वर ने उस गके
को फट जाने दिया और पानी बाहर आ गया। शिमशोन ने पानी
पीया और अपने को स्वस्थ अनुभव किया। उसने फिर अपने को
शक्तिशानी अनुभव किया। इसलिए उसने उस पानी के सोते का
नाम एनहक्कोरे रखा। यह अब तक आज भी लही नगर में है।

[20] इस प्रकार शिमशोन इस्राएल के लोगों का न्यायाधीश बीस
वर्ष तक रहा। वह पलिश्ती लोगों के समय में था।

16

शिमशोन अज्जा नगर को जाता है

[1] एक दिन शिमशोन अज्जा नगर को गया। उसने वहाँ एक वेश्या
को देखा। वह उसके साथ रात बिताने के लिये अन्दर गया। [2] किसी
ने अज्जा के लोगों से कहा, "शिमशोन यहाँ आया है।" वे उसे जान से
मार डालना चाहते थे। इसलिए उन्होंने नगर को घेर लिया। वे छिपे
रहे और वे नगर—द्वार के पास छिप गये और सारी रात शिमशोन
की प्रतीक्षा किया। वे पूरी रात एकदम चुप रहे। उनहोंने आपस में
कहा, "जब सवेरा होगा, हम लोग शिमशोन को मार डालेंगे।"

[3] किन्तु शिमशोन वेश्या के साथ आधी रात तक ही रहा।
शिमशोन आधी रात में उठा और नगर के फाटक के किवड़ों को
पकड़ लिया और उसने उन्हें खींच कर दीवार से अलग कर दिया।
शिमशोन ने किवाड़ों, दो खड़ी चौखटों और अबेड़ों को जो किवाड़
को बन्द करती थी, पकड़ कर अलग उखाड़ लिया। तब शिमशोन

ने उन्हें अपने कंधों पर लिया और उस पहाड़ी की चोटी पर ले गया
जो हेब्रोन नगर के समीप है।

शिमशोन और दलीला

4 इसके बाद शिमशोन दलीला नामक एक स्त्री से प्रेम करने लगा।
वह सोरेक घाटी की थी।
5 पलिश्ती लोगों के शासक दलीला के पास गए। उन्होंने कहा,
"हम जानना चाहते हैं कि शिमशोन उतना अधिक शक्तिशाली कैसे
है? उसे फुसलाने की कोशिश करो कि वह अपनी गुप्त बात बता दे।
तब हम लोग जान जाएंगे कि उसे कैसे पकड़ें और उसे कैसे बांधें।
तब हम लोग उस पर नियन्त्रण कर सकते हैं। यदि तुम ऐसा करोगी
तो हम में से हर एक तुमको एक हजार एक सौ शेकेल* देगा।"
6 अत: दलीला ने शिमशोन से कहा, "मुझे बताओ कि तुम इतने
अधिक शक्तिशाली क्यों हो? तुम्हें कोई कैसे बाँध सकता है और
तुम्हें कैसे असहाय कर सकता है?"
7 शिमशोन ने उत्तर दिया, "कोई व्यक्ति मुझे सात नयी धनुष की
उन डोरियों से बांध सकता है जो अब तक सुखी न हो। यदि कोई
ऐसा करेगा तो मैं अन्य आदमियों की तरह दुर्बल हो जाऊँगा।"
8 तब पलिश्ती के शासक सात नयी धनुष की डोरीयाँ दलीला के
लिए लाए। वे डोरियाँ अब तक सूखी नहीं थीं। उसने शिमशोन को
उससे बांध दिया। 9 कुछ व्यक्ति दूसरे कमरे में छिपे थे। दलीला ने
शिमशोन से कहा, "शिमशोन पलिश्ती के लोग तुम्हें पकड़ने आ रहे
हैं।" किन्तु शिमशोन ने धनुष—डोरियों को सरलता से तोड़ दिया। वे
दीपक से जली ताँत की राख की तरह टूट गई। इस प्रकार पलिश्ती
के लोग शिमशोन की शक्ति का राज न पा सके।
10 तब दलीला ने शिमशोन से कहा, "तुमने मुझे बेवकूफ बनाया
है। तुमने मुझसे झूठ बोला है। कृपया मुझे सच—सच बताओ कि
तुम्हें कोई कैसे बांध सकता है।"

---
* **16:5:** एक हजार एक सौ शेकेल लगभग तेरह किलो चाँदी के बराबर होता है।

11 शिमशोन ने कहा, "कोई व्यक्ति मुझे नयी रस्सियों से बांध
सकता है। वे मुझे उन रस्सियों से बांध सकते हैं जिनका उपयोग
पहले न हुआ हो। यदि कोई ऐसा करेगा तो मैं इतना कमज़ोर हो
जाऊँगा, जितना कोई अन्य व्यक्ति होता है।"
12 इसलिये दलीला ने कुछ नयी रस्सियाँ ली और शिमोशन को
बांध दिया। कुछ व्यक्ति अगले कमरे में छिपे थे। तब दलीला ने
उसे आवाज दी, "शिमशोन, पलिश्ती लोग तुम्हें पकड़ने आ रहे हैं।"
किन्तु उसने रस्सियों को सरलता से तोड़ दिया। उसने उन्हें धागे
की तरह तोड़ डाला।
13 तब दलीला ने शिमशोन से कहा, "तुमने मुझे बेवकूफ बनाया
है। तुमने मुझसे झूठ बोला है। अब तुम मुझे बताओ कि तुम्हें कोई
कैसे बांध सकता है।"
उसने कहा, "यदि तुम उस करघे का उपयोग करो जो मेरे सिर
के बालों के बटों को एक में बनाए और इसे एक काँटे से कस दे तो
मैं इतना कमज़ोर हो जाऊँगा, जितना कोई अन्य व्यक्ति होता है।"
तब शिमशोन सोने चला गया। इसलिए दलीला ने करघे का उपयोग
उसके सिर के बालों के सात बट बुनने के लिये किया।
14 तब दलीला ने ज़मीन में खेमे की खूँटी गाड़कर, करघे को
उससे बांध दिया। फिर उसने शिमशोन को आवाज़ दी, "शिमशोन,
पलिश्ती के लोग तुम्हें पकड़ने जा रहे हैं।" शिमशोन ने खेमे के की
खूँटी करघा तथा ढरकी को उखाड़ दिया।
15 तब दलीला ने शिमशोन से कहा, "तुम मुझसे कैसे कह सकते
हो, 'मैं तुमसे प्रेम करता हूँ,' जबकि तुम मुझ पर विश्वास तक नहीं
करते।† तुम अपना राज बताने से इन्कार करते हो। यह तीसरी बार
तुमने मुझे बेवकूफ बनाया है। तुमने अपनी भीषण शक्ति का राज
नहीं बताया है।" 16 वह शिमशोन को दिन पर दिन परेशान करती
गई। उसके राज के बारे में उसके पूछने से वह इतना थक गया कि

† **16:15:** तुम ... करते "तुम्हारा हृदय मेरे साथ नहीं है।"

उसे लगा कि वह मरने जा रहा है। 17 इसलिये उसने दलीला को
सब कुछ बता दिया। उसने कहा, "मैंने अपने बाल कभी कटवाये नहीं हैं। मैं जन्म के पहले विशेष रूप से परमेश्वर को समर्पित था। यदि कोई मेरे बालों को काट दे तो मेरी शक्ति चली जाएगी। मैं वैसा ही कमज़ोर हो जाऊँगा, जित कोई अन्य व्यक्ति होता है।"

18 दलीला ने देखा कि शिमशोन ने अपने हृदय की सारी बात कह दी है। उसने पलिश्ती के लोगों के शासकों के पास दूत भेजा। उसने कहा, "फिर वापस लौटो। शिमशोन ने सब कुछ कह दिया है।" अत: पलिश्ती लोगों के शासक दलीला के पास लौटे। वे वह धन साथ लाए जो उन्होंने उसे देने की प्रतिज्ञा की थी।

19 दलीला ने शिमशोन को उस समय सो जाने दिया, जब वह उसकी गोद में सिर रख कर लेटा था। तब उसने एक व्यक्ति को अन्दर बुलाया और शिमशोन के बालों की सात लटों को कटवा दिया। इस प्रकार उसने उसे शक्तिहीन बना दिया। शिमशोन की शक्ति
ने उसे छोड़ दिया। 20 तब दलीला ने उसे आवाज दी। "शिमशोन
पलिश्ती के लोग तुमको पकड़ने जा रहे हैं।" वह जाग पड़ा और सोचा, "मैं पहले की तरह भाग निकलूँ और अपने को स्वतन्त्र रखूँ।" किन्तु शिमशोन को यह नहीं मालूम था कि यहोवा ने उसे छोड़ दिया है।

21 पलिश्ती के लोगों ने शिमशोन को पकड़ लिया। उन्होंने उसकी आँखें निकाल लीं और उसे अज्जा नगर को ले गए। तब उसे भागने से रोकने के लिए उसके पैरों में उन्होंने बेड़ियाँ डाल दीं। उन्होंने
उसे बन्दीगृह में डाल दिया तथा उससे चक्की चलवायी। 22 किन्तु
शिमशोन के बाल फिर बढ़ने आरम्भ हो गए।

23 पलिश्ती लोगों के शासक उत्सव मनाने के लिए एक स्थान पर इकट्ठे हुए। वे अपने देवता दागोन को एक बड़ी भेंट चढ़ाने जा रहे थे। उन्होंने कहा, "हम लोगों के देवता ने हमारे शत्रु शिमशोन
को हराने में सहायता की है।" 24 जब पलिश्ती लोगों ने शिमशोन
को देखा तब उन्होंने अपने देवता की प्रशंशा की। उन्होंने कहा,

"इस व्यक्ति ने हमारे लोगों को नष्ट किया!
इस व्यक्ति ने हमारे अनेक लोगों को मारा!
किन्तु हमारे देवता ने हमारे शत्रु को पकड़वाने में
हमारी मदद की!"

25 लोग उत्सव में खुशी मना रहे थे। इसलिए उन्होंने कहा,
"शिमशोन को बाहर लाओ। हम उसका मजाक उड़ाना चाहते हैं।"
इसलिए वे शिमशोन को बन्दीगृह से बाहर ले आए और उसका
मजाक उड़ाया। उन्होंने शिमशोन को दागोन देवता के मन्दिर के
स्तम्भों के बीच खड़ा किया। 26 एक नौकर शिमशोन का हाथ पकड़ा
हुआ था। शिमशोन ने उससे कहा, "मुझें वहाँ रखो जहाँ मैं उन स्तम्भों
को छू सकूँ, जो इस मन्दिर को ऊपर रोके हुए है। मैं उनका सहारा
लेना चाहता हूँ।"

27 मन्दिर में स्त्री—पुरूषों की अपार भीड़ थी। पलिश्ती लोगों के
सभी शासक वहाँ थे। वहाँ लगभग तीन हज़ार स्त्री—पुरूष मन्दिर
की छत पर थे। वे हँस रहे थे और शिमशोन का मज़ाक उड़ा रहे थे।
28 तब शिमशोन ने यहोवा से प्रार्थना की। उसने कहा, "सर्वशक्तिमान
यहोवा, मुझे याद कर। परमेश्वर मुझे कृपा कर केवल एक बार और
शक्ति दे। मुझे केवल एक यह काम करने दे कि पलिश्तियों को
अपनी आँखों के निकालने का बदला चुका दूँ।" 29 तब शिमशोन ने
मन्दिर के केन्द्र के दोनों स्तम्भों को पकड़ा। ये दोनों स्तम्भ पूरे
मन्दिर को टिकाए हुए थे। उसने स्तम्भों के बीच में अपने को
जमाया। एक स्तम्भ उसकी दांयी ओर तथा दूसरा उसकी बाँयीं
ओर था। 30 शिमशोन ने कहा, "इन पलिश्सतों के साथ मुझें मरने
दे।" तब उसने अपनी पूरी शक्ति से स्तम्भों को ठेला और मन्दिर
शासकों तथा इनमें आए लोगों पर गिर पड़ा। इस प्रकार शिमशोन
ने अपने जीवन काल में जितने पलिश्ती लोगों को मारा, उससे कहीं
अधिक लोगों को उसने तब मारा, जब वह मरा।

31 शिमशोन के भाईयों और उसके पिता का पूरा परिवार उसके शरीर को लेने गए। वे उसे वापस लाए और उसे उसके पिता मानोह के कब्र में दफनाया। यह कब्र सोरा और एश्ताओल नगरों के बीच है। शिमशोन इस्राएल के लोगों का न्यायाधीश बीस वर्ष तक रहा।

17

मीका की मूर्तियाँ

1 मीका नामक एक व्यक्ति था जो एप्रैम के पहाड़ी प्रदेश में रहता
था। 2 मीका ने अपनी माँ से कहा, "क्या तुम्हें चाँदी के ग्यारह सौ
सिक्के याद हैं जो तुमसे चुरा लिये गए थे। मैंने तुम्हें उसके बारे में शाप देते सुना। वह चाँदी मेरे पास हैं। मैंने उसे लिया है।"

उसकी माँ ने कहा, "मेरे पुत्र, तुम्हें यहोवा आशीर्वाद दे।"

3 मीका ने अपनी माँ को ग्यारह सौ सिक्के वापस दिये। तब उसने कहा, "मैं ये सिक्के यहोवा को एक विशेष भेंट के रूप में दूँगी। मैं यह चाँदी अपने पुत्र को दूँगी और वह एक मूर्ती बनाएगा और उसे चाँदी से ढक देगा। इसलिए पुत्र, अब यह चाँदी मैं तुम्हें लौटाती हूँ।"

4 लेकिन मीका ने वह चाँदी अपनी माँ को लौटा दी। अत: उसने दो सौ शेकेल चाँदी लिये और एक सुनार को दे दिया। सुनार ने चाँदी का उपयोग चाँदी से ढकी एक मूर्ति बनाने में किया। मूर्ति मीका के
घर में रखी गई। 5 मीका का एक मन्दिर मूर्तियों की पूजा के लिये
था। उसने एक एपोद और कुछ घरेलू मूर्तियाँ बनाई। तब मीका ने
अपने पुत्रों में से एक को अपना याजक चुना। 6 (उस समय इस्राएल
के लोगों का कोई राजा नहीं था। इसलिए हर एक व्यक्ति वह करता था जो उसे ठीक जँचता था।)

7 एक लेवीवंशी युवक था। वह यहूदा प्रदेश में बेतलेहेम नगर
का निवासी था। वह यहूदा के परिवार समूह में रह रहा था। 8 उस
युवक ने यहूदा में बेतलेहेम को छोड़ दिलाय। वह रहने के लिये दूसरी जगह ढूँढ रहा था। जब वह यात्रा कर रहा था, वह मीका के

घर आया। मीका का घर एप्रैम के पहाड़ी प्रदेश में था। 9 मीका ने
उससे पूछा, "तुम कहाँ से आए हो?"

युवक ने उत्तर दिया, "मैं उस बेतेलेहम नगर का लेवीवंशी हूँ जो यहूदा प्रदेश में है। मैं रहने के लिये स्थान ढूँढ रहा हूँ।"

10 तब मीका ने उससे कहा, "मेरे साथ रहो। मेरे पिता और मेरे याजक बानो। मैं हर वर्ष तुम्हें दस चाँदी के सिक्के दूँगा। मैं तुम्हें वस्त्र और भोजन भी दूँगा।"

लेवीवंशी ने वह किया जो मीका ने कहा। 11 लेवीवंशी युवक
मीका के साथ रहने को तैयार हो गया। युवक मीका के पुत्रों के
जैसा हो गया। 12 मीका ने युवक को अपना याजक बनाया। इस
प्रकार युवक याजक बन गया और मीका के घर में रहने लगा।
13 मीका ने कहा, "अब मैं समझता हूँ कि यहोवा मेरे प्रति अच्छा
होगा। मैं यह इसलिए जानता हूँ कि मैंने लेवीवंशी के परिवार के
एक व्यक्ति को याजक रखा है।"

18

दान लैश नगर पर अधिकार करता है

1 उस समय इस्राएल के लोगों का कोई राजा नहीं था और उस समय दान का परिवार समूह, अपना कहे जाने योग्य रहने के लिये भूमि की खोज में था। इस्राएल के अन्य परिवार समूहों ने पहले ही अपनी भूमि प्राप्त कर ली थी। किन्तु दान का परिवार समूह अभी अपनी भूमि नहीं पा सका था।

2 इसलिए दान के परिवार समूह ने पाँच सैनिकों को कुछ भूमि खोजने के लिये भेजा। वे रहने के लिये अच्छा स्थान खोजने गए। वे पाँचों व्यक्ति जोरा और एश्ताओल नगरों के थे। वे इसलिए चुने गए थे कि वे दान के सभी परिवार समूह में से थे। उनसे कहा गया था, "जाओ और किसी भूमि की खोज करो।"

पाँचों व्यक्ति एप्रैम प्रदेश के पहाड़ी क्षेत्र में आए। वे मीका के
घर आए और वहीं रात बिताई। 3 जब पाँचों व्यक्ति मीका के घर
के समीप आए तो उन्होंने लेवीवंश के परिवार समूह के युवक की
आवाज सुनी। उन्होंने उसकी आवाज पहचानी, इसीलिये वे मीका
के घर ठहर गए। उन्होंने लेवीवंशी युवक से पूछा, "तुम्हें इस स्थान
पर कौन लाया है? तुम यहाँ क्या कर रहे हो? तुम्हारा यहाँ क्या
काम है?"
4 उसने उनसे कहा, "मीका ने मेरी नियुक्ति की है। मैं उसका
याजक हूँ।"
5 उन्होंने उससे कहा, "कृपया परमेश्वर से हम लोगों के लिये कुछ
मांगो। हम लोग कुछ जानना चाहते हैं। क्या हमारे रहने के लिये भूमि
की खोज सफल होगी?"
6 याजक ने पाँचों व्यक्तियों से कहा, "शान्ति से जाओ। यहोवा
तुम्हारा मार्ग दर्शन करेगा।"
7 इसलिए पाँचों व्यक्ति वहाँ से चले। वे लैश नगर को आए।
उन्होंने देखा कि उस नगर के लोग सुरक्षित* रहते हैं। उन पर
सीदोन के लोगों का शासन था। सीदोन भूमध्यसागर के तट पर
एक महत्वपूर्ण और शक्तिशाली नगर था। वे शान्ति और सुरक्षा के
साथ रहते थे। लोगों के पास हर एक चीज़ बहुत अधिक थी और
उन पर प्रहार करने वाला पास में कोई शत्रु नहीं था और वे सीदोन
नगर के लोगों से बहुत अधिक दूर रहते थे और अरामके लोगों से
भी उनका कोई व्यापार नहीं था।†
8 पाँचों व्यक्ति सोरा और एश्ताओल नगर को वापस लौटे। उनके
सम्बन्धियों ने पूछा, "तुमने क्या पता लगाया?"
9 पाँचों व्यक्तियों ने उत्तर दिया, "हम लोगों ने प्रदेश देखा है और
वह बहुत अच्छा है। हमें उन पर आक्रमण करना चाहिये। प्रतीक्षा

---

* **18:7:** सुरक्षित सीदोन लोगों की तरह "सुरक्षा"। "वे सीदोन के तौर—तरीके पर चलते थे।" † **18:7:** अराम ... था प्राचीन ग्रीक अनुवाद के अनुसार। हिब्रू पाठ में "वे कहीं के लोगों से व्यापार सम्बन्ध नहीं रखते थे।

न करो। हम चलें और उस प्रदेश को ले लें। 10 जब तुम उस प्रदेश
में चलोगे तो देखोगे कि वहाँ पर बहुत अधिक भूमि है। वहाँ सब
कुछ बहुत अधिक है। तुम यह भी पाओगे कि वहाँ के लोगों को
आक्रमण की आशंका नहीं है। निश्चय ही परमेश्वर ने वह प्रदेश हमको
दिया है।”

11 इसलिए दान के परिवार समूह के छ: सौ व्यक्तियों ने सोरा
और एश्ताओल के नगरों को छोड़ा। वे युद्ध के लिये तैयार थे।
12 लैश नगर की यात्रा करते समय वे यहूदा प्रदेश में किर्य्यत्यारीम
नगर में रूके। उन्होंने वहाँ डेरा डाला। यही कारण है किर्य्यत्यारीम
के पश्चिम का प्रदेश आज तक महनेदान कहा जाता है। 13 उस स्थान
से छ: सौ व्यक्तियों ने एप्रैम के पहाड़ी प्रदेश की यात्रा की। वे मीका
के घर आए।

14 तब उन पाँचों व्यक्तियों ने जिन्होंने लैश की खोज की थी,
अपने भाईयों से कहा, “क्या तुम्हें मालूम है कि इन घरों में से एक में
एपोद, अन्य घरेलू देवता, एक खुदाईवाली मूर्ति तथा एक ढाली गई
मूर्ति है? अब तुम समझते हो कि तुम्हें क्या करना है। जाओ और
उन्हें ले आओ।” 15 इसलिये वे मीका के घर रूके जहाँ लेवीवंशी
युवक रहता था। उन्होंने युवक से पूछा कि वह प्रसन्न है। 16 दान के
परिवार समूह के छ: सौ लोग फाटक के द्वार पर खड़े रहे। उनके
पास सभी हथियार थे तथा वे युद्ध के लिये तैयार थे। 17-18 पाँचों
गुप्तचर घर में गए। उन्होंने खुदाई वाली मूर्ति, एपोद, घरेलू मूर्तियों
और ढाली गई मूर्ति को लिया। जब वे ऐसा कर रहे थे तब लेवीवंशी
युवक याजक और युद्ध के लिये तैयार छः सौ व्यक्ति फाटक के द्वार
के साथ खड़े थे। लेवीवंशी युवक याजक ने उनसे पूछा, “तुम क्या
कर रहे हो?”

19 पाँचों व्यक्तियों ने कहा, “चुप रहो, एक शब्द भी न बोलो।
हम लोगों के साथ चलो। हमारे पिता और याजक बनो। तुम्हें स्वयं
चुनना चाहिये कि तुम किसे अधिक अच्छा समझते हो? क्या यह

तुम्हारे लिये अधिक अच्छा है कि तुम एक व्यक्ति के याजक रहो? या उससे कहीं अधिक अच्छा यह है कि तुम इस्राएल के लोगों के एक पूरे परिवार समूह के याजक बनो?"

20 इससे लेवीवंशी प्रसन्न हुआ। इसलिये उसने एपोद, घरेलू मूर्तियों तथा खुदाई वाली मूर्ति को लिया। वह दान के परिवार समूह के उन लोगों के साथ गया।

21 तब दान परिवार समूह के छ: सौ व्यक्ति लेवीवंशी के साथ मुड़े और उन्होंने मीका के घर को छोड़ा। उन्होंने अपने छोटे बच्चों, जानवरों और अपनी सभी चीज़ों को अपने सामने रखा।

22 दान के परिवार समूह के लोग उस स्थान से बुहत दूर गए और तब मीका के पास रहने वाले लोग चिल्लाने लगे। तब उन्होंने दान के
लोगों का पीछा किया और उन्हें जा पकड़ा। 23 मीका के लोग दान
के लोगों पर बरस पड़ रहे थे। दान के लोग मुड़े। उन्होंने मीका से कहा, "समस्या क्या है? तुम चिल्ला क्यों रहे हो?"

24 मीका ने उत्तर दिया, "दान के तुम लोग, तुमने मेरी मूर्तियाँ ली है। मैंने उन मूर्तियों को अपने लिये बनाया है। तुमने हमारे याजक को भी ले लिया है। तुमने छोड़ा ही क्या है? तुम मुझे कैसे पूछ सकते हो, 'समस्या क्या है?' "

25 दान के परिवार समूह के लोगों ने उत्तर दिया, "अच्छा होता, तुम हमसे बहस न करते। हममें से कुछ व्यक्ति गर्म स्वभाव के हैं। यदि तुम हम पर चिल्लाओगे तो वे गर्म स्वाभाव वाले लोग तुम पर प्रहार कर सकेत हैं। तुम और तुम्हारा परिवार मार डाला जा सकता है।"

26 तब दान के लोग मुड़े और अपने रास्ते पर आगे बढ़ गए। मीका जानता था कि वे लोग उसके लिये बहुत अधिक शक्तिशाली हैं। इसलिए वह घर लौट गया।

27 इस प्रकार दान के लोगों ने वे मूर्तियाँ ले लीं जो मीका ने बनाई थीं। उन्होंने मीका के साथ रहने वाले याजक को भी ले लिया।

तब वे लैश पहुँचे। उन्होंने लैश में शान्तिपूर्वक रहने वाले लोगों पर आक्रमण किया। लैश के लोगों को आक्रमण की आशंका नहीं थी। दान के लोगों ने उन्हें अपनी तलवारों के घाट उतारा। तब उन्होंने
नगर को जला डाला। 28 लैश में रहने वालों की रक्षा करने वाला कोई नहीं था। वे सीदोन के नगर से इतने अधिक दूर थे कि वे लोग इनकी सहायता नहीं कर सकते थे और लैश के लोग अराम के लोगों से कोई व्यवहारिक सम्बन्ध नहीं रखते थे। लैश नगर बेत्रहोब प्रदेश के अधिकार में एक घाटी में था। दान के लोगों ने उस स्थान पर एक नया नगर बसाया और वह नगर उनका निवास
स्थान बना। 29 दान के लोगों ने लैश नगर का नया नाम रखा। उन्होंने उस नगर का नाम दान रखा। उन्होंने अपने पूर्वज दान के नाम पर नगर का नाम रखा। दान इस्राएल नामक व्यक्ति का पुत्र था। पुराने समय में इस नगर का नाम लैश था।

30 दान के परिवार समूह के लोगों ने दान नगर में मूर्तियों की स्थापना की। उन्होंने गेर्शोम के पुत्र योनातान को अपना याजक बनाया। गेर्शोम मूसा‡ का पुत्र था। योनातान और उसके पुत्र दान के परिवार समूह के तब तक याजक रहे, जब तक इस्राएल के लोगों
को बन्दी बना कर बाबेल नहीं ले जाया गया। 31 दान के लोगों ने उन मूर्तियों की पूजा की जिन्हें मीका ने बनाया था। वे उस पूरे समय उन मूर्तियों को पूजते रहे जब तक शिलों में परमेश्वर का स्थान रहा।

19

लेवीवंशी और उसकी रखैल

1 उन दिनों इस्राएल के लोगों का कोई राजा नहीं था। एक लेवीवंशी व्यक्ति एप्रैम के पहाड़ी प्रदेश के बहुत दूर के क्षेत्र में रहता था। उस व्यक्ति ने एक स्त्री को अपनी दासी बना रखा था जो उसकी पत्नी की तरह थी। वह यहूदा प्रदेश के बेतलेहेम नगर की
निवासी थी। 2 किन्तु उस दासी का लेवीवंशी के साथ वाद—विवाद

‡ **18:30:** मूसा हिब्रू ग्रन्थ में यहाँ दो पाठ हैं—या तो “मूसा” या “मनश्शो”। मूसा स्वीकार करने योग्य पाठ ज्ञात होता है।

हो गया था। उसने उसे छोड़ दिया और यहूदा प्रदेश के बेतलेहेम
नगर में अपने पिता के घर चली गई। वह वहाँ चार महीने रही। 3 तब
उसका पति उसके पास गया। वह उससे प्रेम से बात करना चाहता
था, जिससे वह उसके पास लौट जाये। वह अपने साथ अपने नौकर
और दो गधों को ले गया। लेवीवंशी व्यक्ति उस स्त्री के पिता के
घर आया। उसके पिता ने लेवीवंशी व्यक्ति को देखा और उसका
स्वागत करने के लिये प्रसन्नता से बाहर आया। 4 युवती के पिता ने
उसे ठहरने के लिये आमन्त्रित किया। इसलिए लेवीवंशी तीन दिन
ठहरा। उसने खाया, पिया और वह अपने ससुर के घर सोया।

5 चौथे दिन बहुत सवेरे वह उठा। लेवीवंशी चल पड़ने की तैयारी
कर रहा था। किन्तु युवती के पिता ने अपने दामाद से कहा,
"पहले कुछ खाओ। जब तुम भोजन कर लो तो तुम जा सकते
हो।" 6 इसलिये लेवीवंशी व्यक्ति और उसका ससुर एक साथ खाने
और मदिरा पीने के लिये बैठे। उसके बाद युवती के पिता ने उस
लेवीवंशी से कहा, "कृपया आज भी ठहरें। आराम करो और आनन्द
मनाओ। दोपहर के बाद तक जाने के लिये प्रतीक्षा करो।" इस प्रकार
दोनों व्यक्तियों ने एक साथ खाया। 7 जब लेवी पुरूष जाने को तैयार
हुआ तो उसके ससुर ने उसे वहाँ रात भर रुकने का आग्रह किया।

8 लेवी पुरुष पाँचवे दिन जाने के लिये सवेरे उठा। वह जाने को
तैयार था कि उस जवान लड़की के पिता ने कहा, "पहले कुछ खा
पी लो, फिर आराम करो और दोपहर तक रूक जाओ।" अत: दोनों
ने फिर से एक साथ भोजन किया।

9 तब लेविवंशी व्यक्ति, उसकी रखैल और उसका नौकर चलने
के लिये उठे। किन्तु युवती के पिता, उसके ससुर ने कहा, "लगभग
अंधेरा हो गया है। दिन लगभग बीत चुका है। रात यहीं बिताओ और
आनन्द मनाओ। कल बहुत सवेरे तुम उठ सकते हो और अपना
रास्ता पकड़ सकते हो।"

10 किन्तु लेवीवंशी व्यक्ति एक और रात वहाँ ठहरना नहीं चाहता
था। उसने अपने काठीवाले दो गधों और अपनी रखैल को लिया।

वह यबूस नगर तक गया। (यबूस यरूशलेम का ही दूसरा नाम है।)
11 दिन लगभग छिप गया, वे यबूस नगर के पास थे। इसलिए नौकर
ने अपने स्वामी लेवीवंशी से कहा, “हम लोग इस नगर में रूक
जायें। यह यबूसी लोगों का नगर है। हम लोग यहीं रात बितायें।”

12 किन्तु उसके स्वामी लेवीवंशी ने कहा, “नहीं हम लोग
अपरिचित नगर मं नहीं जाएंगे। वे लोग इस्राएल के लोगों में से
नहीं हैं। हम लोग गिबा नगर तक जाएंगे।” 13 लेवीवंशी ने कहा,
“आगे बढ़ो। हम लोग गिबा या रामा तक पहुँचने की कोशिश करें।
हम उन नगरों में से किसी एक में रात बिता सकते हैं।”

14 इसलिए लेवीवंशी और उसके साथ के लोग आगे बढ़े। जब
वे गिबा नगर के पास आए तो सूरज डूब रहा था। गिबा बिन्यामीन
के परिवार समूह के प्रदेश में है। 15 इसलिये वे गिबा में ठहरे।
उन्होंने उस नगर में रात बिताने की योजना बनाई। वे नगर में मुख्य
सार्वजनिक चौराहे में गए और वहाँ बैठ गए। किन्तु किसी ने उन्हें
रात बिताने के लिए अपने घर आमन्त्रित नहीं किया।

16 उस सन्ध्या को एक बूढ़ा व्यक्ति अपने खेतों से नगर में आया।
उसका घर एप्रैम प्रदेश के पहाड़ी क्षेत्र में था। किन्तु अब वह गिबा
नगर मैं रह रहा था। (गिबा के लोग बिन्यामीन के परिवार समूह
के थे।) 17 बूढ़े व्यक्ति ने यात्रियों (लेवीवंशी व्यक्ति) को सार्वजनिक
चौराहे पर देखा। बूढ़े व्यक्ति ने पूछा, “तुम कहाँ जा रहे हो? तुम
कहाँ से आये हो?”

18 लेवीवंशी व्यक्ति ने उत्तर दिया, “यहूदा प्रदेश के बेतलेहेम नगर
से हम लोग यात्रा कर रहे हैं। हम अपने घर जा रहे हैं। हम एप्रैम
प्रदेश के पहाड़ी क्षेत्र के दूर के भाग के निवसी हैं। मैं यहूदा प्रदेश में
बेतलेहेम को गया था। अब मैं अपने घर* जा रहा हूँ। 19 हम लोगों
के पास अपने गधों के लिये पुआल और भोजने है। हम लोगों के

* **19:18:** घर प्राचीन ग्रीक अनुवाद के अनुसार हिब्रू पाठ, “यहोवा का घर” है।

पास रोटी और दाखमधु है। हम लोगों में से कोई—मैं, युवती या मेरा नौकर, कुछ भी नही चाहता।"

20 बूढ़े ने कहा, "तुम्हारा स्वागत है। तुम मेरे यहाँ ठहरो। तुम को आवश्यकता की सभी चीज़ें मैं दूँगा। तुम सार्वजनिक चौराहे में रात
व्यतीत मत करो" 21 तब वह बूढ़ा व्यक्ति लेविवंशी व्यक्ति और उसके साथ के व्यक्तियों को अपने साथ अपने घर ले गया। बूढ़े व्यक्ति ने उसके गधों को खिलाया। उन्होंने अपने पैर धोए। तब उसने उन्हें कुछ खाने और कुछ दाखमधु पीने को दिया।

22 जब लेवीवंशी व्यक्ति और उसके साथ के व्यक्ति आनन्द ले रहे थे, तभी उस नगर के कुछ लोगों ने उस घर को घेर लिया। वे बहुत बुरे व्यक्ति थे। वे ज़ोर से दरवाज़ा पीटने लगे। वे उस बूढ़े व्यक्ति से, जिसका वह घर था, चिल्लाकर बोले, "उस व्यक्ति को अपने घर से बाहर करो। हम उसके साथ शारीरिक सम्बन्ध करना चाहते हैं।"

23 बूढ़ा व्यक्ति बाहर गया और उन दुष्ट लोगों से कहा, "भाईयों, नहीं, ऐसा बुरा काम न करो। वह व्यक्ति मेरे घर में अतिथि है।† यह
भयंकर पाप न करो। 24 सुनो, यहाँ मेरी पुत्री है। उसने पहले कभी शारीरिक सम्बन्ध नहीं किया है। मैं उसे और इस पुरुष की रखैल को तुम्हारे पास बाहर लाता हूँ। तुम उसका उपयोग जैसे चाहो कर सकते हो। किन्तु इस व्यक्ति के विरुद्ध ऐसा भंयकर पाप न करो।"

25 किन्तु उन दूष्ट लोगों ने उस बूढ़े व्यक्ति की एक न सुनी। इसलिये लेवीवंशी व्यक्ति ने अपनी रखैल को उन दुष्ट व्यक्तियों के साथ बाहर कर दिया। उन दूष्ट व्यक्तियों ने पूरी रात उसके साथ कुकर्म किया और बुरी तरह गालियाँ दीं। तब सवेरे उसे जाने दिया।
26 सवेरे वह स्त्री वहाँ लौटी जहाँ उसका स्वामी ठहरा था। वह

† **19:23:** वह … है इस समय यह रिवाज था कि यदि तुमने किसी को अतिथि के रुप में आमन्त्रित किया है, तो तुम्हें उसकी रक्षा और देखभाल करनी पड़ती थी।

सामने दरवाजे पर गिर पड़ी। वह तब तक पड़ी रही जब तक पूरा
दिन नहीं निकल आया।
27 सवेरे लेवीवंशी व्यक्ति उठा और उसने घर का दरवाजा खोला।
वह अपने रास्ते जाने के लिये बाहर निकला। किन्तु वहाँ उसकी
रखैल पड़ी थी।‡ वह घर के रास्ते पर पड़ी थी। उसके हाथ दरवाज़े
की डयोढ़ी पर थे। 28 तब लेवीवंशी व्यक्ति ने उससे कहा, "उठो,
हम लोग चलें।"

किन्तु उसने उत्तर नहीं दिया। इसलिए उसने उसे अपने गधे पर
रखा और घर गया। 29 जब लेवीवंशी व्यक्ति अपने घर आया तब
उसने एक छुरी निकाली और अपनी रखैल को बारह टुकड़ों में
काटा। तब उसने स्त्री के उन बारह भागों को उन सभी क्षेत्रों में भेजा
जहाँ इस्राएल के लोग रहते थे। 30 जिसने यह देखा उन सबने कहा,
"ऐसा कभी नहीं हुआ था जब से इस्राएल के लोगो मिस्र से आए,
तब से अब तक ऐसा कभी नहीं हुआ। तय करो कि क्या करना है
और हमें बताओ?"

20

इस्राएल और बिन्यामीन के बीच युद्ध:

1 इस प्रकार इस्राएल के सभी लोग एक हो गए। वे मिस्पा नगर में
यहोवा के सामने खड़े होने के लिए एक साथ आए। वे पूरे इस्राएल
देश से आए। गिलाद प्रदेश के सभी इस्राएली लोग भी वहाँ थे।
2 इस्राएल के परिवार समूहों के सभी प्रमुख वहाँ थे। वे परमेश्वर के
सारे लोगों की सभा में अपने—अपने स्थानों पर बैठे। उस स्थान
पर तलवार के साथ चार लाख सैनिक थे। 3 बिन्यामीन के परिवार
समूह के लोगों ने सुना कि इस्राएल के लोगों मिस्पा नगर में पहुँचे हैं।
इस्राएल के लोगों ने कहा, "यह बताओ कि यह पाप कैसे हुआ।"
4 अत: जिस स्त्री की हत्या हुई थी उसके पति ने कहा, "मेरी
रखैल और मैं बिन्यामीन के प्रदेश में गिबा नगर में पहुँचे। हम लोगों

‡ **19:27:** पड़ी थी वह मर गई थी।

ने वहाँ रात बिताई। 5 किन्तु रात को गिबा नगर के प्रमुख उस घर पर
आए जिसमें मैं ठहरा था। उन्होंने घर को घेर लिया और वे मुझे मार
डालना चाहते थे। उन्होंने मेरी रखैल के साथ कुकर्म किया और वह
मर गई। 6 इसलिए मैं अपनी रखैल को ले गया और उसके टुकड़े
कर डाले। तब मैंने हर एक टुकड़ा इस्राएल के हर एक परिवार
समूह को भेजा। मैंने बारह टुकड़े उन प्रदेशों को भेजे जिन्हें हमने
पाया। मैंने यह इसलिए किया कि बिन्यामीन के परिवार समूह के
लोगों ने इस्राएल के देश में यह क्रूर और भयंकर काम किया है।
7 अब, इस्राएल के सभी लोगों, आप बोलें। आप अपना निर्णय दें
कि हमें क्या करना चाहिये?"

8 तब सभी लोग उसी समय उठ खड़े हुए। उन्होने आपस में कहा,
"हम लोगों में से कोई घर नहीं लौटेगा। कोई नहीं, हम लोगों में से
एक भी घर नहीं लौटेगा। 9 हम लोग गिबा नगर के साथ यह करेंगे।
हम गोट डालेंगे। जिससे परमेश्वर बताएगा कि हम लोग उन लोगों
के साथ क्या करें। 10 हम लोग इस्राएल के सभी परिवारों के हर
एक सौ में से दस व्यक्ति चुनेंगे और हम लोग हर एक हजार में से
सौ व्यक्ति चुनेंगे। हम लोग हर एक दस हजार में से हजार चुनेंगे।
जिन लोगों को हम चुन लेंगे वे सेना के लिए आवश्यक सामग्री
पाएंगे। तब सेना बिन्यामीन के प्रदेश में गिबा नगर को जाएगी। वह
सेना उन लोगों से बदला चुकाएगी जिन्होंने इस्राएल के लोगों में यह
भयंकर काम किया है।"

11 इसलिए इस्राएल के सभी लोग गिबा नगर में एकत्रित हुए। वे
उसके एक मत थे, जो वे कर रहे थे। 12 इस्राएल के परिवार समूह ने
एक सन्देश के साथ लोगों को बिन्यामीन के परिवार समूह के पास
भेजा। सन्देश यह था: "इस पाप के बारे में क्या कहना है जो तुम्हारे
कुछ लोगों ने किया है? 13 उन गिबा के पापी मनुष्यों को हमारे पास
भेजो। उन लोगों को हमें दो जिससे हम उन्हें जान से मार सकें। हम
इस्राएल के लोगों में पाप को अवश्य दूर करेंगे।"

किन्तु बिन्यामीन के परिवार समूह के लोगों ने अपने सम्बन्धी
इस्राएल के लोगो के दूतों की एक न सुनी। 14 बिन्यामीन के परिवार
समूह के लोगों ने अपने नगरों को छोड़ा और वे गिबा नगर में पहुँचे।
वे गिबा में इस्राएल के अन्य परिवार समूह के विरुद्ध लड़ने गए।
15 बिन्यामीन परिवार समूह के लोगों ने छब्बीस हजार सैनिकों को
इकट्ठा किया। वे सभी सैनिक युद्ध के लिये प्रशिक्षित थे। उनके साथ
गिबा नगर के सात सौ प्रशिक्षित सैनिक भी थे। 16 उनके सात सौ
ऐसे प्रशिक्षित व्यक्ति भी थे जो बाँया हाथ चलाने में दक्ष थे। उनमें
से हर एक गुलेल का उपयोग दक्षता से कर सकता था। वे सब एक
बाल पर भी पत्थर मार सकते थे और निशाना नहीं चूकता था।

17 इस्राएल के सारे परिवारों ने, बिन्यामीन को छोड़कर चार लाख
योद्धाओं को इकट्ठा किया। उन चार लाख योद्धाओं के पास तलवारें
थीं। उनमें हर एक प्रशिक्षित सैनिक था। 18 इस्राएल के लोग बेतेल
नगर तक गए। बेतेल में उन्होंने परमेश्वर से पूछा, "कौन सा परिवार
समूह बिन्यामीन के परिवार समूह पर प्रथम आक्रमण करेगा?"

यहोवा ने उत्तर दिया, "यहूदा का परिवार समूह प्रथम जाएगा।"

19 अगली सुबह इस्राएल के लोग उठे। उन्होंने गिबा के निकट
डेरा डाला। 20 तब इस्राएल की सेना बिन्यामीन की सेना से युद्ध
के लिये निकल पड़ी। इस्राएल की सेना ने गिबा नगर में बिन्यामीन
की सेना के विरुद्ध अपना मोर्चा लगाया। 21 तब बिन्यामीन की सेना
गिबा नगर के बाहर निकली। उन्होंने उस दिन की लड़ाई में इस्राएल
की सेना के बाईस हजार लोगों को मार डाला।

22-23 इस्राएल के लोग यहोवा के सामने गए। वे शाम तक रोकर
चिल्लाते रहे। उन्होंने यहोवा से पूछा, "क्या हमें बिन्यामीन के विरुद्ध
लड़ने जाना चाहिए? वे लोग हमारे सम्बन्धी हैं।"

यहोवा ने उत्तर दिया, "जाओ और उनके विरुद्ध लड़ो। इस्राएल
के लोगों ने एक दूसरे का साहस बढ़ाया। इसलिए वे पहले दिन की
तरह फिर लड़ने गए।"

24 तब इस्राएल की सेना बिन्यामीन की सेना के पास आई। यह
युद्ध का दूसरा दिन था। 25 बिन्यामीन की सेना दूसरे दिन इस्राएल
की सेना पर आक्रमण करने के लिये गिबा नगर से बाहर आई।
इस समय बिन्यामीन की सेना ने इस्राएल की सेना के अन्य अट्ठारह
हजार सैनिकों को मार डाला। इस्राएल की सेना के वे सभी प्रशिक्षित
सैनिक थे।

26 तब इस्राएल के सभी लोग बेतेल नगर तक गए। उस स्थान
पर वे बैठे और यहोवा को रोकर पुकारा। उन्होंने पूरे दिन शाम तक
कुछ नहीं खाया। वे होमबलि और मेलबलि भी यहोवा के लिये
लाए। 27 इस्राएल के लोगों ने यहोवा से एक प्रश्न पूछा। (इन दिनों
परमेश्वर का साक्षीपत्र का सन्दूक बेतेल में था। 28 पीनहास नामक
एक याजक साक्षीपत्र के सन्दूक के सामने सेवा करता था। पीनहास
एलीआज़ार नामक व्यक्ति का पुत्र था। एलीआज़ार हारून का पुत्र
था।) इस्राएल के लोगों ने पूछा, "क्या हमें बिन्यामीन के लोगों के
विरूद्ध फिर लड़ने जाना चाहिए। वे लोग हमारे सम्बन्धी हैं या हम
युद्ध करना बन्द कर दें?" यहोवा ने उत्तर दिया, "जाओ। कल मैं
उन्हें हराने में तुम्हारी सहायता करूँगा।"

29 तब इस्राएल की सेना ने गिबा नगर के चारों ओर अपने
व्यक्तियों को छिपा दिया। 30 इस्राएल की सेना तीसरे दिन गिबा नगर
के विरुद्ध लड़ने गई। उन्होंने जैसा पहले किया था वैसा ही लड़ने के
लिये मोर्चा लगाया। 31 बिन्यामीन की सेना इस्राएल की सेना से युद्ध
करने के लिये गिबा नगर के बाहर निकल आई। इस्राएल की सेना
पीछे हटी और उसने बिन्यामीन की सेना को पीछा करने दिया।

इस प्रकार बिन्यामीन की सेना को नगर को बहुत पीछे छोड़ देने के लिये धोखा दिया गया। बिन्यमीन की सेना ने इस्राएल की सेना के कुछ लोगों को वेसे ही मारना आरम्भ किया जैसे उन्होंने पहले मारा था। इस्राएल के लगभग तीस व्यक्ति मारे गए। उनमें से कुछ लोग मैदानों में मारे गए थे। उनमें से कुछ व्यक्ति सड़कों पर मारे गए थे। एक सड़क बेतेल को जा रही थी। दूसरी सड़क गिबा को

जा रही थी। 32 बिन्यामीन के लोगों ने कहा, “हम पहले की तरह
जीत रहे हैं।”

उसी समय इस्राएल के लोग पीछे भाग रहे थे लेकिन यह एक
चाल थी। वे बिन्यामीन के लोगों को उनके नगर से दूर सड़कों पर
लाना चाहते थे। 33 इस्राएल की सेना के सभी लोग अपने स्थानों से
हटे। वे बालतामार स्थान पर रूके। तब जो लोग गिबा के पश्चिम को
दौड़ पड़े। 34 इस्राएल की सेना के पूरे प्रशिक्षित दस हजार सैनिकों
ने गिबा नगर पर आक्रमण किया। युद्ध बड़ा भीषण था। किन्तु
बिन्यामीन की सेना नहीं जानती थी कि उनके साथ कौन सी भंयकर
घटना होने जा रही है?

35 यहोवा ने इस्राएल की सेना का उपयोग किया और बिन्यामीन
की सेना को पराजित किया। उस दिन इस्राएल की सेना ने बिन्यामीन
की पच्चीस हजार एक सौ सैनिकों को मार डाला। वे सभी सैनिक
युद्ध के लिये प्रशिक्षित थे। 36 इस प्रकार बिन्यामीन के लोगों ने देखा
कि वे पराजित हो गए।

इस्राएल की सेना पीछे हटी। वे पीछे हटे क्योंकि वे उस अचानक
आक्रमण पर भरोसा कर रहे थे जिसके लिये वे गिबा के निकट
व्यवस्था कर चुके थे। 37 जो व्यक्ति गिबा के चारों ओर छिपे थे
वे गिबा नगर में टूट पड़े। वे फैल गए और उन्होंने अपनी तलवारों
से नगर के हर एक को मार डाला। 38 इस्राएली सेना के दल और
छिपकर घात लगाने वाले दल के बीच यह संकेत चिन्ह निश्चित
किया गया था कि छिपकर घात लगाने वाला दल नगर से धुएँ का
विशाल बादल उड़ाएगा।

39-41 इसलिये युद्ध के समय इस्राएल की सेना पीछे मुड़ी और
बिन्यामीन की सेना ने इस्राएल की सेना के सैनिकों को मारना
आरम्भ किया। उन्होंने लगभग तीस सैनिक मारे। वे कह रहे थे,
“हम वैसे जीत रहे हैं जैसे पहले युद्ध में जीत रहे थे।” किन्तु तभी
धुएँ का विशाल बादल नगर से उठना आरम्भ हुआ। बिन्यामीन के
सैनिक मुड़े और धुएँ को देखा। पूरा नगर आग की लपटों में था
तब इस्राएल की सेना मुड़ी और लड़ने लगी। बिन्यामीन के लोग

डर गए थे। अब वे समझ गए थे कि उनके साथ कौन सी भंयकर घटना हो चुकी थी।

42 इसलिये बिन्यामीन की सेना इस्राएल की सेना के सामने से भाग खड़ी हुई। वे रेगिस्तान की ओर भागे। लेकिन वे युद्ध से बच न सके। इस्राएल के लोग नगर से बाहर आए और उन्हें मा डाला।
43 इस्राएल के लोगों ने बिन्यामीन के लोगों को हराया। उन्होंने बिन्यामीन के लोगों का पीछा किया। उन्हें आराम नहीं करने दिया। उन्होने उन्हें गिबा के पूर्व के क्षेत्र मैं हराया। 44 इस प्रकार अट्ठारह हजार वीर और शक्तिशाली बिन्यामीन की सेना के सैनिक मारे गए।

45 बिन्यामीन की सेना मुड़ी और मरुभूमि की ओर भागी। वे रिम्मोन की चट्टान नामक स्थान पर भाग कर गए। किन्तु इस्राएल की सेना ने सड़क के सहारे बिन्यामीन की सेना के पाँच हजार सैनिकों को मार डाला। वे बिन्यामीन के लोगों का पीछा करते रहे। उन्होंने उनका पीछा गिदोम नामक स्थान तक किया। इस्राएल की सेना ने उस स्थान पर बिन्यामीन की सेना के दो हजार और सैनिकों को मार डाला।

46 उस दिन बिन्यामीन की सेना के पच्चीस हजार सैनिक मारे गए। उन सभी व्यक्तियों के पास तलवारें थीं। बिन्यामीन के वे लोग वीर योद्धा थे। 47 किन्तु बिन्यामीन के छ: सौ व्यक्ति मुड़े और मरुभूमि में भाग गए। वे रिम्मोन की चट्टान नामक स्थान पर गए। वे वहाँ चार महीने तक ठहरे रहे। 48 इस्राएल के लोग बिन्यामीन के प्रदेश में लौटकर गए। जिन नगरों में वे पहुँचे, उन नगरों के आदमियों को उन्होंने मार डाला। उन्होंने सभी जानवरों को भी मार डाला। वे जो कुछ पा सकते थे, उसे नष्ट कर दिया। वे जिस नगर में गए, उसे जला डाला।

21

बिन्यामीन के लोगों के लिये पत्नियाँ प्राप्त करना

1 मिस्पा में इस्राएल के लोगों ने प्रतिज्ञा की। उनकी प्रतिज्ञा यह
थी, “हम लोगों में से कोई अपनी पुत्री को बिन्यामीन के परिवार
समूह के किसी व्यक्ति से विवाह नहीं करने देगा।”

2 इस्राएल के लोग बेतेल नगर को गए। इस नगर में वे परमेश्वर
के सामने शाम तक बैठे रहे। वे बैठे हुए रोते रहे। 3 उन्होंने परमेश्वर
से कहा, “यहोवा, तू इस्राएल के लोगों का परमेंश्वर है। ऐसी भयंकर
बात हम लोगों के साथ कैसे हो गई है? इस्राएल के परिवार समूहों
में से एक परिवार समूह क्यों कम हो जाये!”

4 अगले दिन सवेरे इस्राएल के लोगों ने एक वेदी बनाई। उन्होंने
उस वेदी पर परमेंश्वर को होमबली और मेलबलि चढ़ाई। 5 तब
इस्राएल के लोगों ने कहा, “क्या इस्राएल का कोई ऐसा परिवार
समूह है जो यहोवा के सामने हम लोगों के साथ मिलने नहीं आया
है?” उन्होंने यह प्रश्न इसलिए पूछा कि उन्होंने एक गंभीर प्रतिज्ञा
की थी। उन्होंने प्रतिज्ञा की थी कि जो कोई मिस्पा में अन्य परिवार
समूहों के साथ नहीं आएगा, मार डाला जाएगा।

6 इस्राएल के लोग अपने रिश्तेदारों, बिन्यामीन के परिवार समूह
के लोगों के लिये, बहुत दुःखी थे। उन्होंने कहा, “आज इस्राएल के
लोगों से एक परिवार समूह कट गया है। 7 हम लोगों ने यहोवा के
सामने प्रतिज्ञा की थी कि हम अपनी पुत्रियों को बिन्यामीन परिवार
के किसी व्यक्ति से विवाह नहीं करने देंगे। हम लोगों को कैसे
विश्वास होगा कि बिन्यामीन परिवार समूह के लोगों को पत्नियाँ
प्राप्त होंगी?”

8 तब इस्राएल के लोगों ने पूछा, “इस्राएल के परिवार समूहों में से
कौन मिस्पा में यहाँ नहीं आया है? हम लोग यहोवा के सामने एक
साथ आए हैं। किन्तु एक परिवार समूह यहाँ नहीं है।” तब उन्हें पता
लगा कि इस्राएल के अन्य लोगों के साथ यावेश गिलाद नगर का
कोई व्यक्ति वहाँ नहीं था। 9 इस्राएल के लोगों ने यह जानने के लिये
कि वहाँ कौन था और कौन नहीं था, हर एक को गिना। उन्होंने पाया
कि यावेश गिलाद का कोई भी वहाँ नहीं था। 10 इसलिए इस्राएल

के लोगों की परिषद ने बारह हजार सैनिकों को यावेश गिलाद नगर
को भेजा। उन्होंने उन सैनिकों से कहा, "जाओ और यावेश गिलाद
लोगों को अपनी तलवार के घाट उतार दो। 11 तुम्हें यह अवश्य
करना होगा। यावेश गिलाद में हर एक पुरुष को मार डालो। उस
स्त्री को भी मार डालो जो एक पुरुष के साथ रह चुकी हो। किन्तु
उस स्त्री को न मारो जिसने किसी पुरुष के साथ कभी शारीरिक
सम्बन्ध न किया हो।" सैनिकों ने यही किया। 12 उन बारह हजार
सैनिकों ने यावेश गिलाद में चार सौ ऐसी स्त्रियों को पाया, जिन्होंने
किसी पुरुष के साथ शारीरिक सम्बन्ध नहीं किया था। सैनिक उन
स्त्रीयों को शीलो नगर के डेरे पर ले आए। शीलो कनान प्रदेश में
है।

13 तब इस्राएल के लोगों ने बिन्यामीन के लोगों के पास एक
सन्देश भेजा। उन्होंने बिन्यामीन के लोगों के साथ शान्ति—सन्धि
करने का प्रस्ताव रखा। बिन्यामीन के लोग रिम्मोन की चट्टान नामक
स्थान पर थे। 14 इसलिये बिन्यामिन के लोग उस समय इस्राएल के
लोगों के पूरे परिवार के पास लौटे। इस्राएल के लोगों ने उन्हें उन
यावेश गिलाद की स्त्रियों को दिया, जिन्हें उन्होंने मारा नहीं था।
किन्तु बिन्यामीन के सभी लोगों के लिये पर्याप्त स्त्रियाँ नहीं थीं।

15 इस्राएल के लोग बिन्यामीन के लोगों के लिये दुःखी हुए।
उन्होंने उनके लिये इसलिए दुःख अनुभव किया क्योंकि यहोवा ने
इस्राएल के परिवार समूहों को अलग कर दिया था। 16 इस्राएल
के लोगों के अग्रजों ने कहा, "बिन्यामीन परिवार समूह की स्त्रियाँ
मार डाली गई हैं। हम लोग बिन्यामीन के जो लोग जीवित हैं उनके
लिये पत्नियाँ कहाँ पाएंगे। 17 बिन्यामीन के जो लोग अभी जीवित
हैं, अपने परिवार को आगे बढ़ाने के लिये उन्हें बच्चें चाहियें। यह
इसलिए करना होगा कि इस्राएल का एक परिवार समूह नष्ट न
हो। 18 किन्तु हम लोग अपनी पुत्रियों को बिन्यामीन लोगों के साथ
विवाह करने की स्वीकृति नहीं दे सकते। हम यह प्रतिज्ञा कर चुके
हैं: 'कोई व्यक्ति जो बिन्यामीन के व्यक्ति को पत्नी देगा, अभिशप्त

होगा।’
19 हम लोगों के सामने एक उपाय है। यह शीलो नगर में
यहोवा के लिये उत्सव का समय है। यह उत्सव यहाँ हर वर्ष मनाया
जाता है।” (शीलो नगर बेतेल नगर के उत्तर में है और उस सड़क
के पूर्व में है जो बेतेल से शकेन को जाती है। और यह लबोना नगर
के दक्षिण में भी है।)

20 इसलिये अग्रजों ने बिन्यामीन लोगों को अपना विचार बताया।
उन्होंने कहा, “जाओ, और अंगूर के बेलो के खेतों में छिप जाओ।
21 उत्सव में उस समय की प्रतीक्षा करो जब शीलो की युवतियाँ
नृत्य में भाग लेने आएं। तब अंगूर के खेतों में अपने छुपने के स्थान
से बाहर निकल दौड़ो। तुममें से हर एक उस युवतियों को शीलो
नगर से बिन्यामीन के प्रदेश में ले जाओ और उसके साथ विवाह
करो।
22 उन युवतियों के पिता और भाई हम लोगों के पास आएंगे
और शिकायत करेंगे। किन्तु हम लोग उन्हें इस प्रकार उत्तर देंगे:
“बिन्यामीन के लोगों पर कृपा करो। वे अपने लिए पत्नियाँ इसलिए
नहीं पा रहे हैं कि वे लोग तुमसे लड़े और वे इस प्रकार से स्त्रियों
को ले गए हैं, अत: तुमने अपनी परमेश्वर के सामने की गई प्रतिज्ञा
नहीं तोड़ी। तुमने प्रतिज्ञा की थी कि तुम उन्हें स्त्रियाँ नहीं दोगे, तुमने
बिन्यामीन के लोगों को स्त्रियों नहीं दी परन्तु उन्होंने तुमसे स्त्रियाँ
ले ली। इसलिये तुमने प्रतिज्ञा भंग नहीं की।”

23 इसलिये बिन्यामीन के परिवार समूह के लोगों ने वही किया।
जब युवतियाँ नाच रही थीं, तो हर एक व्यक्ति ने उनमें से एक—एक
को पकड़ लिया। वे उन स्त्रियों को दूर ले गए और उनके साथ
विवाह किया। वे उस प्रदेश में लौटे, जो उन्हें उत्तराधिकार में मिला
था। बिन्यामीन के लोगों ने उस प्रदेश में फिर नगर बसाये और उन
नगरों में रहने लगे।
24 तब इस्राएल के लोग अपने घर लौटे। वे अपने
प्रदेश और परिवार समूह को गए।

25 उन दिनों इस्राएल के लोगों का कोई राजा नहीं था। हर एक
व्यक्ति वही करता था, जिसे वह ठीक समझता था।

पवित्र बाइबल

The Holy Bible, Easy Reading Version, in Hindi

copyright © 1992-2010 World Bible Translation Center

Language: हिंदी (Hindi)

Translation by: World Bible Translation Center

License Agreement for Bible Texts World Bible Translation Center Last Updated: September 21, 2006 Copyright © 2006 by World Bible Translation Center All rights reserved. These Scriptures: • Are copyrighted by World Bible Translation Center. • Are not public domain. • May not be altered or modified in any form. • May not be sold or offered for sale in any form. • May not be used for commercial purposes (including, but not limited to, use in advertising or Web banners used for the purpose of selling online add space). • May be distributed without modification in electronic form for non-commercial use. However, they may not be hosted on any kind of server (including a Web or ftp server) without written permission. A copy of this license (without modification) must also be included. • May be quoted for any purpose, up to 1,000 verses, without written permission. However, the extent of quotation must not comprise a complete book nor should it amount to more than 50% of the work in which it is quoted. A copyright notice must appear on the title or copyright page using this pattern: "Taken from the HOLY BIBLE: EASY-TO-READ VERSIONTM © 2006 by World Bible Translation Center, Inc. and used by permission." If the text quoted is from one of WBTC's non-English versions, the printed title of the actual text quoted will be substituted for "HOLY BIBLE: EASY-TO-READ VERSIONTM." The copyright notice must appear in English or be translated into another language. When quotations from WBTC's text are used in non-saleable media, such as church bulletins, orders of service, posters, transparencies or similar media, a complete copyright notice is not required, but the initials of the version (such as "ERV" for the Easy-to-Read VersionTM in English) must appear at the end of each quotation. Any use of these Scriptures other than those listed above is prohibited. For additional rights and permission for usage, such as the use of WBTC's text on a Web site, or for clarification of any of the above, please contact World Bible Translation Center in writing or by email at distribution@wbtc.com. World Bible Translation Center P.O. Box 820648 Fort Worth, Texas 76182, USA Telephone: 1-817-595-1664 Toll-Free in US: 1-888-54-BIBLE E-mail: info@wbtc.com WBTC's web site – World Bible Translation Center's web site: http://www.wbtc.org

2019-11-15

PDF generated using Haiola and XeLaTeX on 8 Sep 2021 from source files dated 18 Aug 2021

7f0fcd5b-bc85-55f6-933a-0de82e7ef275